सूर्या बुलेटिन

वर्ष: 9, अंक: 1 जुलाई 2018

मुख्य मार्गदर्शक

यति मां चेतनानन्द सरस्वती जी

मुख्य संरक्षक मंडल

डॉ. आर.के. तोमर

श्री विनोद सर्वोदय

श्री हरिनारायण सारस्वत

श्री राजेश यादव

श्री नीरज त्यागी

सम्पादक

अनिल यादव

प्रबन्ध सम्पादक

शुभम मंगला

सम्पादकीय मंडल

श्री संदीप वशिष्ठ

श्री प्रमोद शर्मा

श्री अक्षय त्यागी

श्री मुकेश त्यागी

श्री दिव्य अग्रवाल

श्री जतिन गोयल

कानूनी सलाहकार

श्री आरपी सिसौदिया (एडवोकेट)

श्री राजकुमार शर्मा (एडवोकेट)

ग्राफिक डिजाइनर

सीमा कौशिक

`स्वत्वाधिकारी, स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक सीमा यादव द्वारा मै0 सुभाषिनी ऑफसैट प्रिन्टर्स एप-10 पटेल नगर तृतीय, गाजियाबाद से मुद्रित करवाकर प्राचीन देवी मंदिर डासना, गाजियाबाद उ.प्र. से प्रकाशित किया।

टाइटल कोड: UPHIN40005

सम्पादक: अनिल यादव

मो. 9311139274

suryabulletin@gmail.com

कवर स्टोरी

धर्म संसद: घटता हिंदू, मिटता देश

पेज-24

माँ बगलामुखी-सूक्ष्म परिचय

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

पेज-08

गीता हिन्दुओं की एकमात्र शरण

यति नरसिंहानंद सरस्वती

पेज-04

इतिहास के पन्नों से सबक ले राष्ट्रवादी (कहानी जिहाद)

मुंशी प्रेमचंद

पेज-34

'जनसंख्या नियंत्रण' पर कानून बनें...

विनोद कुमार सर्वोदय

पेज-38

सम्पादकीय

'लम्हो ने खता की, सदियों ने सजा पाई'

अनिल यादव

हम संपूर्ण विश्व की एक मात्र ऐसी सभ्यता हैं जिन्होंने ज्ञान,विज्ञान और आध्यात्म से मानवता का परिचय करवाया। हमारी लाखो पीढ़ियों ने करोड़ो बलिदान दिए तब ये राष्ट्र,ये देश विश्वगुरु के पद पर आरूढ़ हुआ। जैसा मानव के जीवन में होता है कि उतार चढ़ाव आते रहते हैं, वैसा ही देश और संस्कृति के साथ भी होता है। कभी दिन बड़े होते हैं और कभी की रात बड़ी होती है। दु :ख केवल इस बात का है कि आज से 1300 साल पहले जो भारत देश और सनातन धर्म की रात हुई वो खत्म ही नहीं हो रही है। मोहम्मद बिन कासिम के सिंध पर आक्रमण,सोमनाथ के मंदिर का विध्वंस,पृथ्वीराज चौहान की पराजय और सैकड़ों साल चलने वाला महाविनाश जो आज तक किसी न किसी रूप में जारी है। पराजय केवल सैन्य शक्ति की नही होती अपितु संस्कृति और धर्म की भी होती है। वास्तव में हारी हुई सैन्य शक्ति तो फिर से लड़ने के लिये खड़ी हो जाती है परंतु यदि धर्म और संस्कृति हार स्वीकार कर ले तो फिर से खड़ा होना बहुत मुश्किल होता है।सैनिकों की हार को तो नौजवान अपने खून और पसीने से विजय में बदल देते हैं पर यदि किसी धर्म के धमार्चार्य यदि धर्म की पराजय के सामने घुटने टेक दे तो फिर खड़ा होना बहुत मुश्किल है। ये हमारे साथ हो रहा है। क्योंकि हम सनातनी है, शिव और शक्ति की संतान हैं और हम अपनी चिता की राख से भी उठ खड़ा होने की शक्ति रखते हैं इसलिए आओ मेरे बच्चों,मेरे शेरों, मेरे साथियो,हमें इतिहास बदलना है और हमे इतिहास बनाना है। एक स्वर्णिम भविष्य हमारी प्रतीक्षा में है,बस हमे उसके लिये सर्वस्व बलिदान देना सीखना है। हमारी माँ हमे शक्ति देने के लिए व्याकुल है और महादेव शिव सनातन धर्म के सभी शत्रुओं को निगलना चाहते हैं। आओ हम तैयार हो जाये।

जब धर्म पुकारता है तो उसकी आवाज
सौभाग्यशाली को ही सुनाई देती हैं। धन्यवाद

अतुल गर्ग
राज्य मंत्री
खाद्य एवं रसद, नागरिक आपूर्ति,
किराया नियंत्रण, उपभोक्ता संरक्षण, बाँट-माप,
खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन

दूरभाष (कार्या.) : 0522-2237101
(आ.) : 0522-2208552
कक्ष सं. 8 ब, नवीन भवन, लखनऊ

दिनांक : .....

शुभकामना-सन्देश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि **सूर्य बुलेटिन** द्वारा अपनी मासिक पत्रिका **"सूर्या बुलेटिन"** पत्रिका स्मारिका का प्रकाशन करने जा रहे है। जिसमें सनातन वैदिक धर्म पर हो रहे आघातों, सामाजिक, आर्थिक साहित्यक, मनोवैज्ञानिक विषयों पर अधारित पाठन सामग्री उपलब्ध होंगी है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह स्मारिका जनउपयोगी सिद्ध होगी।

उक्त पत्रिका **"सूर्या बुलेटिन"** सफल के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाए।

भवदीय,

(अतुल गर्ग)
राज्य मंत्री
खाद्य एवं रसद, नागरिक आपूर्ति
किराया नियंत्रण, उपभोक्ता संरक्षण,
बाँट-माप, खाद्य सुरक्षा एवं
औषधि प्रशासन
उत्तर प्रदेश।

गीता

हिन्दुओं की एकमात्र शरण

यति नरसिंहानंद सरस्वती

जैसा कि एक हिन्दू को होना चाहिए मैं माँ शक्ति और भोले बाबा का भक्त हूँ। मेरी सन्यास की वृत्ति नहीं थी पर जीवन मुझे ऐसे मोड़ पर लेकर आया कि मुझे सन्यास लेना पड़ा। मैंने जब स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी महाराज से दीक्षा ली तो मुझे हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थों में कुछ विशेष रूचि नहीं थी। गुरू जी ने मुझे गीता का अध्ययन करने का आदेश दिया तो मुझे बहुत अजीब सी अनुभूति हुई क्योंकि मेरी योगेश्वर श्रीकृष्ण के बारे में धारणा कोई बहुत अच्छी नहीं थी बल्कि आर्य समाज के विचारों से प्रभावित होने के कारण मैं योगेश्वर श्रीकृष्ण को समाज के लिये बहुत ही गलत आदर्श मानता था। गीता के नाम पर मैंने जो कुछ थोड़ा बहुत पढ़ या सुन रखा था वो भी मुझे अनर्गल ही लगता था पर मैं गुरू जी के आदेश को टाल नहीं सका तो मैंने गीता को पूरा पढा और मुझे कुछ समझ नहीं आया। गुरू जी ने कहा कि ये मेरे बस की बात नही तो उन्होंने कहा कि अगर कृष्ण को नहीं समझे तो हिन्दू धर्म के लिये कुछ नहीं कर सकोगे। उन्होंने मुझे महाभारत पढ़ने को कहा, मैंने महाभारत को पढ़ा और बहुत ध्यान से पढ़ा। महाभारत को पढ़ने के बाद गुरू जी ने मुझे कुछ और पुस्तकें दी जिनमें रामधारी सिंह 'दिनकर' की कुछ पुस्तकें भी थीं। जब मैंने वो पुस्तक पढ़ ली तो गुरू जी ने मुझे गीता को दुबारा पढ़ने का आदेश दिया। मैंने मना कर दिया कि मैं तो पढ़ चुका हूँ गीता को अब क्या पढ़ना? लेकिन गुरू जी नहीं माने और उन्होंने कहा कि गीता का एक अक्षर पढ़ो। मैंने

बहुत अनमने ढंग से गीता को फिर से पढ़ना शुरू किया लेकिन इस बार मेरे लिये जैसे गीता बिल्कुल बदल चुकी थी। मैं जैसे-जैसे गीता को पढ़ रहा था, न केवल गीता बल्कि श्रीकृष्ण के मायने भी मेरे लिये बदल रहे थे। मेरे देखने का ढंग बिल्कुल बदल चुका था। मेरे गुरू ने मुझ पर कृपा करके मेरी दृष्टि को बिल्कुल बदल दिया था। अब जो श्रीकृष्ण मेरे सामने थे वो विश्व के सबसे बड़े योद्धा, महानतम विचारक, आध्यात्मिक जगत के सूर्य, न्याय के सबसे बड़े रक्षक, सबसे महान योगी, प्रत्येक आदर्श के प्रणेता, सत्य के सबसे बडे.सेवक जप, तप, दान और धैर्य जैसे मानवीय गुणों की पराकष्ठा के स्त्रोत। सबके रक्षक, सबके मित्र, सबके गुरू। अब श्रीकृष्ण मेरे लिये योगेश्वर हो गए, अब श्रीकृष्ण मेरे लिये जगदगुरू हो गए। अब श्रीकृष्ण मेरे लिये भगवान हो गए। उस दिन के बाद मुझे श्रीकृष्ण से सम्बन्धित जो भी पुस्तक मिली वो मैंने खरीद ली और पूरी पढ़ डाली।

मैंने श्रीकृष्ण के जीवन से शिव और शक्ति की पूजा करने की प्रेरणा ली जगदजननी मां ने और भोले बाबा ने मेरी बुद्धि को श्रीकृष्ण के चरणों में लगाया और मैंने अपने धर्म को जानने और समझने के लिये स्वाध्याय का सहारा लिया। **अपने गुरू जी के आशीर्वाद से आज मैं ये कह सकता हूँ कि मैं सत्य सनातन धर्म और सत्य सनातन संस्कृति का एक विद्यार्थी हूँ। मैं धर्म का कोई ज्ञाता, तपस्वी या मनीषी होने का दावा नहीं करता पर मेरी सूक्ष्म बुद्धि में भी और भोले बाबा ने जो बात डाली, उसका प्रचार करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं।**

हम हिन्दू जो भगवान श्रीराम के वंशज है, हम हिन्दू जो योगेश्वर श्री कृष्ण के वंशज हैं हम हिन्दू जो जगदजननी माँ जगदम्बा के भक्त हैं, हम हिन्दू जो माँ चामुंडा महाकाली के बेटे हैं, आज हम पूरे विश्व के सबसे कमजोर और कायर प्राणी सिद्ध हुए हैं। उन धर्म प्रचारकों को जिनका धंधा धर्म है और जो धर्म को केवल अपने जीवनयापन का एक साधन मात्र समझते हैं वो इसका प्रबल प्रतिकार भी कर सकते हैं, पर इतिहास के अध्ययन ने मुझे बताया है कि हम हिन्दू ही विश्व की एक मात्र ऐसी कौम हैं जो पिछले 1300 साल से लगातार विधर्मियों से मार खाती आ रही है और आज भी समझने को तैयार नहीं हैं। हम पर लुटेरों ने, लुटेरों के गुलामों ने, व्यापारियों ने भी राज किया है। हममें से कुछ लोग

ऐसे भी रहे हैं जिन्होंने बहुत दिलेरी और साहस के साथ धर्म के लिये अपनी अंतिम सांस तक युद्ध लड़ा है पर देश और धर्म के गद्दारों ने उन सबके प्रबल पुरूषार्थ को समाप्त करने का कार्य किया है।

जब मैंने सारी परिस्थितियों का अध्ययन किया तो मैंने पाया कि विधर्मी आक्रांताओं ने हमारे धर्म ग्रन्थों को प्रदूषित किया। हम इस गहन षडयंत्र को समझ नहीं सके और इसका शिकार हो गए। विदेशी आक्रांताओं ने जो हमारे धर्म को तोड़ा उसमें हमारे कुछ धर्म गुरूओं और विद्वानों ने अपने स्वार्थ और लालच के वशीभूत होकर हमारे धर्म ग्रंथों के मूल भावार्थ को ही बदल डाला जिससे हम अधर्म को धर्म और धर्म को अधर्म समझ बैंठे। इन धर्म गुरूओं और विद्वानों ने छेड़ छाड़ तो सबसे की परन्तु इसका सबसे बड़ा शिकार योगेश्वर श्रीकृष्ण हुए। हम जिन मुसलमान शासकों को जाहिल और असभ्य समझते थे दरअसल में बहुत शातिर और चालाक थे। उन्होंने बहुत जल्दी हिन्दुओं की ताकत और हिन्दुओं की कमजोरी को पकड़ लिया था। वो समझ गए थे कि यदि हिन्दू श्रीकृष्ण के ज्ञान और श्रीकृष्ण की नीति को जड़ से नहीं भूलेगा तो उसे ज्यादा समय के लिए गुलाम नहीं बनाया जा सकता।

श्रीकृष्ण तक पहुँचने का रास्ता केवल और केवल गीता के माध्यम से जाता है और गीता महाभारत का एक अंश है। महाभारत ज्ञान को वो विपुल भण्डार है जो भगवान श्रीकृष्ण ने मानवता को अपनी वाणी के द्वारा अर्जुन को माध्यम बनाकर प्रदान किया। ग्रन्थ श्रीमद्भागवद् गीता एक सिद्धांत है तो उस सिद्धांत का सम्पूर्ण प्रयोग है महाभारत।

यदि हमें कृष्ण को जानना है तो गीता को जानना पडेगा और गीता को जनना है तो महाभारत की एक घटना और उसके गूढार्थ की समझना पडेगा।

श्रीहरि विष्णु जी के तीन सर्वाधिक पूजित अवतार श्री राम श्री परशुराम और श्रीकृष्ण के रूप में हुए जिनमें श्रीकृष्ण को अपने जीवन में सर्वाधिक संघर्ष करना पडा। यूँ तो भगवान धरती पर आते ही हम मानवों का अधर्म के नाश के द्वारा धर्म की स्थापना और मानवता की रक्षा का पाठ पढाने के लिये हैं, पर उसमें भी भगवान श्रीकृष्ण ने तो अपना पूरा जीवन ही, बल्कि कहना चाहिए कि जीवन का एक क्षण हम मानवों को ये सिखाने में लगाया है कि परिस्थितियां कितनी विकट हो सकती है और

अधर्मी कितने शक्तिशाली हो सकती है। जब मैंने भगवान श्रीकृष्ण के जीवन का अध्ययन करना शुरू किया और कहना चाहिए कि **जब मैं श्री कृष्ण में ही डूब गया तो मैंने पाया कि हम हिन्दुओं ने मानवीय इतिहास में सबसे बड़ा अन्याय भगवान श्रीकृष्ण के साथ किया है और श्रीकृष्ण के साथ किया गया ये अन्याय ही हमारे पतन का कारण है। यदि हमने भगवान श्रीकृष्ण को उसी रूप में पूजा और माना होता जिस रूप में उन्होंने जीवन को जिया था तो श्रीकृष्ण के भक्तो का समाज कभी भी विधर्मियों से पराजित नहीं हुआ होता, भगवान श्रीराम की जन्मभूमि का कभी विध्वंस नहीं होता, श्रीकृष्ण जन्मभूमि मन्दिर और कांशी विश्वनाथ मंदिर को कभी तोड़ा नहीं जा सकता था।** इन महानतम ऐतिहासिक धर्म स्थलों की तो बात छोडिए किसी छोटे से मन्दिर को भी कभी छुआ नहीं जा सकता था। लेकिन ये सब हुआ और इतना विकट हुआ कि विगत 1300 सालों में लगातार हिन्दुओं के मन्दिरों को तोडा गया और हिन्दुओं की मां, बहन, बेटियों की दुर्गति की गयी। 500 करोड से ज्यादा हिन्दुओं का कत्ल हुआ। ऐसा कौन सा अत्याचार है जो श्रीराम की भूमि पर, श्रीकृष्ण की भूमि पर व श्री परशुराम की भूमि पर उनके भक्तों व उनकी संतानों के साथ नहीं हुआ?

आज पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा असुरक्षित यदि कोई कौम, कोई धार्मिक समुदाय कोई मानव समूह है तो वो हम हैं। जिन स्थानों पर राम, कृष्ण और परशुराम की संतानों का मूल निवास स्थान है आज जहां हिन्दुओं की जनसंख्या कम हो जाती है तो हमारी मां, बहन, बेटियां केवल विधर्मियों के द्वारा बलात्कार के लिये और हमारे बेटे केवल नृशस हत्या के लिए रह जाते हैं जैसे कुबार्नी के लिए बकरे होते हैं। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश कश्मीर और अब पश्चिमी उत्तर प्रदेश को देख लो। ओ राम के बेटो, ओ परशुराम की सतांनों , ओ कृष्ण के भक्तों एक बार अपने मन के पूर्वाग्रहों को छोड़ कर जरा सच्चाई की तरफ देखों तो सही, जरा एक बार अपनी स्थिति पर विचार तो करो। **जरा सोचो तो सही कि क्या राम, कृष्ण और परशुराम हमें वास्तव में गुलामी में रहने का और मां बहनों, बेटियों के बलात्कार को देखकर अनदेखा करने का सन्देश हमें देकर गए थे। क्या राम, कृष्ण और परशुराम का सन्देश ये है कि राक्षसों के सारे अपराधों को भूलकर हम केवल आपस में छोटी-छोटी बातों पर लडते रहें और अपनी मातृभूमि को उन राक्षसों के लिये छोड़ जाएं जो हमारी मां, बहन बेटियों की दुर्गति करके हमारी नस्ल को खत्म कर देंगे।**

समस्या तो अनियमित है पर इनका मूल कारण एक ही है कि हमने अपने भगवान को केवल मनोरंजन का साधन बनाया, हमने अपने भगवान को केवल व्यापार का साधन बनाया, हमने अपने भगवान को केवल भोली भाली जनता के शोषण का माध्यम बनाया। हमने सबसे बडा अन्याय अपने भगवान के साथ किया है। जिस कृष्ण ने अपने पूरे जीवन को केवल और केवल धर्म रक्षा और धर्म स्थापना के संघर्ष में लगा दिया, हमने उस कृष्ण को बिल्कुल भुला दिया। कृष्ण के पूरे जीवन के संघर्ष, कृष्ण की शिक्षाओं पर, कृष्ण के अवतार के ध्येय पर हमने अपनी अकर्मणयता और स्वार्थों के चलते बिल्कुल पानी फेर दिये और अपने विनाश की रूपरेखा को स्वयं अपने प्रमाद और कायरता से सींचकर दिखाया। आज की हम हिन्दुओं की सबसे बडी आवश्यकता है कि हम कृष्ण की तरफ लौटें,हम धर्म की तरफ लौटें, हम अपनी संस्कृति की तरफ लौटें और इसका माध्यम केवल और केवल गीता है। गीता भी केवल वह गीता जिसको प्रदान करने के लिए भगवान को धरती पर महाभारत जैसा महाविनाशकारी युद्ध करवाना पडा था।

आज समय है यह सोचने का कि किस षडयंत्र के अन्तर्गत गीता और महाभारत जैसे ज्ञान के विपुल भण्डार के प्रति हमारे मन में वितृष्णा पैदा की गयी थी? क्यों युवाओं को गीता से दूर रखा गया? क्यों महाभारत को हमारे घरों से निकाल बाहर किया गया? आज आवश्यकता है कृष्ण के वास्तविक रूप की पुनर्स्थापना की। आज आवश्यकता है गीता को समझ कर श्रीकृष्ण के अनुरूप कर्म करने की। केवल गीता ही हम सबको हर संकट से छुटकारा दिला सकती है। **तो आये गीता के प्रचार-प्रसार में जुट जाइये और श्रीकृष्ण की कृपा से धर्म की रक्षा कीजिए क्योंकि धर्म यदि बच गया तो सब कुछ बच जाएगा। धर्म यदि नष्ट हो गया तो फिर कुछ नहीं बचेगा।**

'सूर्या बुलेटिन' इतिहास लिखेगी

आज हिंदुस्तान में हिंदू होना एक गुनाह हो गया है। देश में एक ऐसी लॉबी सक्रिय है जिसने हिंदुस्तान के स्वाभिमान को तहस-नहस करके रख दिया है।

विगत कुछ वर्षों की बात करें तो देश के बड़े मीडिया घरानों के मुताबिक हिंदुस्तान में सिर्फ 2-3 बड़ी घटनायें हुई हैं- दादरी में अखलाख, हैदराबाद का रोहित वेमुला, जम्मू की आसिफा! अखलाख के मरने पर सारे फिल्मकार, चित्रकार, पत्रकार सड़क पर आ जाते हैं, अवार्ड वापसी की नौटंकी करते हैं, भारत देश को असहिष्णु घोषित करते हैं और ग्लोबल मीडिया में हिंदुस्तान की छवि धूमिल करने के साथ-साथ ये संदेश देते हैं कि हिंदू एक असहिष्णु कौम है!

हैदराबाद के रोहित वेमुला की आत्महत्या याद कीजिये। उस वक़्त के बड़े अखबार पढ़ लीजिये, बड़े-बड़े चैनल्स की रिपोर्ट याद कीजिये, सबने एक एजेंडा चलाया कि इस देश में दलित का शोषण हो रहा है, और शोषण इस हद तक हो रहा है कि दलित छात्रों को आत्महत्या करनी पड़ रही है! रातों-रात इस देश को फिर से असहिष्णु घोषित कर दिया जाता है। दलितों को हिंदुओं से अलग करने का षड्यंत्र सफल होता है, सुनियोजित तरीके से दलितों के मन में हिंदुओं के प्रति नफरत घोली जाती है, और पूरी हिंदू कौम को अपने ही दलित भाईयों का हत्यारा घोषित कर दिया जाता है।

आसिफा का मामला तो सबको याद होगा ही.. रातों-रात, एक साथ, एक जैसी तख्ती लिये बॉलीवुड बालायें निकल आती हैं. बिना किसी सबूत के ये सारी बॉलीवुड बालायें एक ही बात बोलती हैं कि मंदिर में बलात्कार हुआ है, और इनको हिंदू होने पर शर्म आती है। पूरे देश में बिना किसी जाँच के ये माहौल बना दिया जाता है कि हिंदू होना बहुत शर्म की बात है और हमारे मंदिर पूजास्थल ना होकर मानो बलात्कार के अड्डे हों हालाँकि जम्मू पुलिस की जाँच रिपोर्ट में ये सारी बातें झूठी साबित हुई हैं, उसके बाद भी किसी बॉलीवुड बाला ने आज तक माफी नहीं माँगी है!

ये सिर्फ 3 उदाहरण है कि किस तरह सुनियोजित तरीके से हमारे देश का एक तबका हिंदू विरोधी एजेंडा चलाता है. शासन हो, प्रशासन हो, मीडिया हो, बॉलीवुड हो, स्पोर्ट्स हो, शैक्षिक संस्थान हो, औद्योगिक घराने हों, विभिन्न कला के क्षेत्र हों, ज्यूडिशियरी हो, डिप्लोमेसी हो.. हर जगह इनकी पैठ अंदर तक गहरी बनी हुई है! और इन सबका एजेंडा सिर्फ एक है- किसी भी तरह हिंदू और हिंदुस्तान को बदनाम करना! तभी तो ये देश तब असहिष्णु नहीं होता जब देश की राजधानी में सरे आम डॉ नारंग को सिर्फ इसलिये कत्ल कर दिया जाता है क्योंकि क्रिकेट खेलते वक़्त उनके बेटे की बॉल वहाँ से गुजर रहे एक मुस्लिम युवक को छू जाती है! तब हमें कोई फिल्मकार, चित्रकार, साहित्यकार अवार्ड वापस करता नहीं दिखता!

शब-ए-ईद पर कश्मीर में मस्जिद के बाहर ड्यूटी दे रहे पुलिस कर्मचारी मोहम्मद अय्यूब पंडित को इसलिये मार दिया जाता है क्यूँकि उनकी शर्ट पे लगी नेम प्लेट पर उनका नाम लिखा होता है - एम ए पंडित!

लोगों को लगता है कि वो कोई कश्मीरी पंडित है और उनको एक हिंदू समझकर बेरहमी से मार दिया जाता है. तब ना मस्जिद बदनाम होती है, ना नमाजी बदनाम होते है, ना ही मुसलमान! पूरे देश में कहीं से कोई रोने-चिल्लाने की आवाज नहीं आती। मीडिया को इस हत्या में असहिष्णुता नहीं लगती!

आसिफा पर घड़ियाली आँसू बहाने वाली बॉलीवुड बालायें तब कहीं नजर नहीं आती जब मस्जिद में एक हिंदू बच्ची का बलात्कार होता है, बॉलीवुड बालाओं को तब शर्म महसूस नहीं होती जब एक अखिला नाम की बच्ची को लव-जिहाद कर धर्म बदलकर हदिया बना दिया जाता है। मुस्लिम बनाने के बाद उस हिंदू बेटी को हर तरह से प्रताड़ित करके आतंकी बनने के लिये ISIS भेजा जाता है। उस वक़्त किसी को आतंक का मजहब नहीं दिखता! कुल मिलाकर लब्बो-लबाब ये है कि आज हिंदू अपने घर में पिस रहा है। **हिंदुओं पर होने वाले अत्याचारों को ना कोई देखना चाहता है और ना ही कोई दिखाना चाहता है! ऐसे में जगदम्बा महाकाली-डासना वाली के परिवार द्वारा एक ऐसी पत्रिका शुरू करना जो हिंदुओं पर होने वाले अत्याचारों को सामने लायेगी, विश्व भर के हिंदुओं की आवाज बनेगी, ये निःसंदेह बहुत बड़ा और बेहद साहसिक कदम है।** हमें ये कहने में रत्ती भर भी संकोच नहीं कि सूर्या बुलेटिन जैसी पत्रिका का प्रकाशन एक ऐसा पुण्य कर्म है कि जब कभी हिंदू रक्षा का इतिहास लिखा जायेगा, तो सूर्या बुलेटिन का नाम जरूर लिया जायेगा! मैं सूर्या बुलेटिन की समूची टीम को हृदय की अनंत गहराईयों से शुभकामनायें देता हूँ और यकीन दिलाता हूँ कि मैं और मेरी साइबर सिपाही टीम से इस पत्रिका के लिये जो भी 'गिलहरी प्रयास' होगा, हम सदैव तत्पर रहेंगे!

माँ बगलामुखी-सूक्ष्म परिचय

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

एक सौ चौदह साल से अधिक का मेरा जीवन जिसमें सौ वर्ष का सन्यास भी है। पूरा जीवन कैसे निकल गया जब इसका आंकलन करता हूँ तो मन को बहुत तसल्ली होती है की मैंने पूरा जीवन अपने सिद्धांतों पर अटल रहकर अपने धर्म के लिये जो भी कर सकता था वो करने का प्रयास किया। मुझे मेरे व्यक्तिगत जीवन से कभी कोई शिकायत नही हुई। माँ और भोले बाबा ने जो भी दिया वो मेरी यौग्यता और अपेक्षाओं से बहुत ज्यादा था परंतु आज जब अपने देश काल और परिस्थिति को देखता हूँ तो मन में बहुत व्याकुलता अनुभव होती है। क्या सनातन धर्म और सनातन की संस्कृति इस धरती से मिट जायेगी? क्या शिव और शक्ति की संतानें अपना अस्तित्व भी नही बचा सकेगी। जब ये चिंतन करता हूँ तो समझ नही पाता की हम सबको क्या हो गया है? क्यों हम सबने बबार्दी की राह को चुन लिया है?आज हिन्दू समाज केवल अपने कर्मो का कारण इस स्थिति तक पहुँचा है। हमने अपने धर्म के आधारभूत स्तम्भो को छोड़ दिया है और बुद्धि भ्रम के कारण आज इस स्थिति में पहुँच गये हैं। हमारा धर्म शिव और शक्ति के उपासकों का धर्म है। हमारी संस्कृति देवाधिदेव भगवान महादेव शिव और जगद्जननी माँ जगदम्बा की संस्कृति है। शिव सर्वोच्च हैं अपनी शक्ति के साथ और वो ही पूजन के योग्य हैं। हमारे धर्म के सबसे महान पूर्वजो श्रीराम, श्रीकृष्ण और श्रीपरशुराम जी ने भी जब-जब अवतार लिया तब-तक उन्होंने भी शिव और शक्ति की ही पूजा करके हम सबको बताया कि हमे भी शिव और शक्ति की ही पूजा करनी है। हर तरह से शिव और शक्ति ही पूजा के योग्य है। वो ही सब कुछ देने वाले हैं और वो ही सब कुछ लेने वाले हैं। उन्ही के कारण हमारे धर्म और संस्कृति ने लाखों करोड़ों वर्षों का सफर बहुत शान और सम्मान के साथ तय किया है। उन्ही के आशीर्वाद और प्रताप से हमने पुरे विश्व में ज्ञान और शांति का संदेश देकर विश्वगुरु का पद प्राप्त किया। हमारी सारी समस्याओं का सबसे बड़ा कारण उन्ही को भूल जाना है। जो लोग,जो धर्म,जो संस्कृति अपने आधार से कट जाती है वो विनष्ट हो जाती है। आज भी हम हिन्दू यदि शिव और शक्ति को सर्वोच्च मानकर झूठे भगवानों और देवताओं की पूजा के पाखण्ड से मुक्ति पाकर श्रीकृष्ण की गीता का अनुसरण करें तो हमे दोबारा से विश्वगुरु बनने से कोई नही रोक सकता। खैर मैं बात को अधिक न बढ़ाते हुए केवल आप सबसे इतना कहना चाहता हूँ की आज जो कुछ भी थोड़ा बहुत संघर्ष अपने जीवन में कर पाया तो उसका कारण मेरा कोई अपना गुण नहीं था बल्कि केवल और केवल माँ बगलामुखी की मुझ पर कृपा थी। **मेरी इच्छा है कि प्रत्येक सनातन धर्मी युवक माँ की पूजा करके धन धान्य, सद्बुद्धि और पराक्रम अर्जित करें और अपने धर्म और अपने वंश की रक्षा करे।**

माँ बगलामुखी की पूजा करने वालो को कभी धन की कमी नही रहती और कोई भी शत्रु उनका

कुछ नही बिगाड़ सकता। माँ बगलामुखी की शरण मे जाकर व्यक्ति अपने परिवार को बीमारी और अकाल मृत्यु से मुक्ति दिला सकता है।

देवाधिदेव भगवान महादेव शिव की दस महाशक्ति जिन्हें हम दस महाविद्या के रूप में जानते है,उनमें आठवीं महाविद्या माँ बगलामुखी हैं। इन्हें सद्बुद्धि,विजय और ऐश्वर्य की देवी माना जाता है। इनकी पूजा करने वाला व्यक्ति कभी निर्धन नहीं हो सकता और उसका कोई भी शत्रु उसे पराजित नहीं कर सकता। सर्वप्रथम माँ बगलामुखी की पूजा भगवान विष्णु और उनके बाद ब्रह्मा जी ने की थी इसीलिये माँ को वैष्णवी भी कहते हैं। तंत्र में इन्हें भी ब्रह्मास्त्र माना जाता है। मानव रूप में सबसे पहले भगवान परशुराम ने माँ बगलामुखी की साधना और उपासना की। माँ की कृपा से ही वो अजेय और अमर हुए। भगवान परशुराम के बाद रावण और इंद्रजीत मेघनाथ माँ बगलामुखी के महान उपासक हुए।भगवान परशुराम ने ही राम जन्म का प्रयोजन समझने के बाद भगवान श्रीराम को रावण वध के लिये माँ बगलामुखी उपासना की शिक्षा दी।

योगेश्वर श्रीकृष्ण,आचार्य द्रोण,पितामह भीष्म,दानवीर कर्ण और अर्जुन आदि सभी वीरों ने माँ बगलामुखी की साधना से ही अतुलित बल और पराक्रम अर्जित किया। तबसे आज तक जो भी योद्धा माँ की शरण लेता है,वो अपने जीवन मे हमेशा हमेशा के लिये अपने शत्रुओं को पराजित करके धन,संपत्ति,संतान, सुख,स्वास्थ्य और ऐश्वर्य अर्जित करता है और जीवन के बाद स्वर्ग प्राप्त करता है।

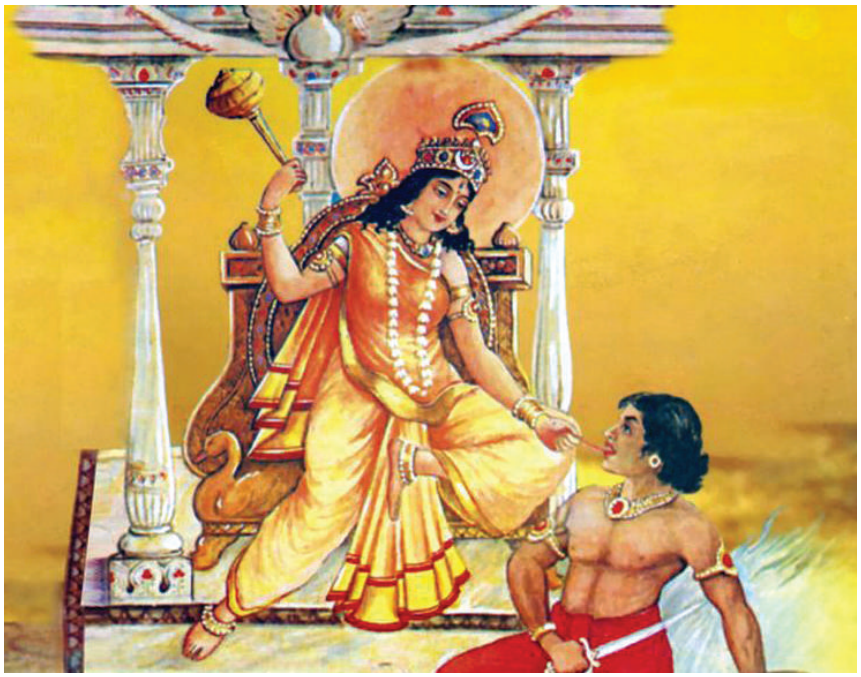

जीवन परिचयः स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी महाराज

'राम जन्मभूमि आंदोलन के वर्तमान स्वरूप के वास्तविक जनक स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी महाराज भारतवर्ष के वरिष्ठतम सन्यासियों में से एक हैं। स्वामी जी की वर्तमान आयु 114 वर्ष से कुछ अधिक है।स्वामी ने अपना पूरा जीवन धर्म की सेवा और तंत्र साधना में लगाया है। स्वामी जी बहुत स्पष्ट विचारों वाले सन्त है और सनातन धर्म को विश्वगुरु के पद पर आसीन कराने के लिये कुछ भी करने में विश्वास रखते हैं। स्वामी जी ने देश की आजादी के लिये संघर्ष किया और आजादी के बाद भी अनेक आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।स्वामी जी ने ही राम जन्मभूमि आंदोलन के वर्तमान स्वरूप को आरम्भ किया था और जितने भी साधु संत इस आंदोलन से जुड़े,उन्हें स्वामी जी ने ही जोड़ा था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस आंदोलन को अपने हाथ में लेने के लिये जब हिन्दू जागरण मंच बनाया तो स्वामी जी हिन्दू जागरण मंच के संस्थापक संगठन मंत्री बनाये गए।राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं और स्वार्थों के चलते जब यह आंदोलन संतो से छीन कर संगठनों के हाथ में पहुँचा तो स्वामी जी को इससे अलग कर दिया गया। स्वामी जी श्रीमति इंदिरा गांधी और अटल बिहारी वाजपेयी सहित अनेकों नेताओ के लिये सम्मानीय रहे हैं।

माँ बगलामुखी की उपासना के कुछ लाभ निम्नलिखित हैंः-

1. जो व्यक्ति किसी सुयोग्य गुरु के दीक्षा लेकर प्रतिदिन माँ के मंत्र का जाप करता है और यदा कदा माँ के हवनात्मक यज्ञ में भाग लेता है, उस पर किसी भी भूत,प्रेत या बुरी शक्ति का कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता और उसकी बुद्धि सदैव उसे सही रास्ता दिखाती है।

2. जो व्यक्ति एक वर्ष में एक लाख मंत्रो का जाप और ग्यारह हजार आहुतियों का हवन करता है,उसे उस वर्ष में सामान्य शत्रुओं का भय नहीं रहता और किसी भी मुकदमे या झगड़े में उसे जेल का भय नहीं रहता। ऐसे साधक को कभी धन की हानि नहीं होती।

3. जो व्यक्ति अपने जीवन मे ग्यारह लाख माँ के मंत्रो का जाप और सवा लाख आहुतियों का हवन कर लेता है,उसके जीवन मे उसे अखण्ड लक्ष्मी कृपा प्राप्त होती है और उसका परिवार अकाल मृत्यु से मुक्त हो जाता है।

4. जो व्यक्ति अपने जीवन मे एक करोड़ माँ के मंत्रो का जाप कर लेता है और ग्यारह लाख आहुतियों का यज्ञ करता है तो वह दानवीर कर्ण और अर्जुन की तरह विश्व विजेता और अखण्ड यश का अधिकारी हो जाता है।

5. जो व्यक्ति अपने जीवन मे सवा करोड़ मंत्रो का जप और सवा करोड़ आहुतियों का हवन कर लेता है,उस व्यक्ति को पितामह भीष्म की तरह इच्छा मृत्यु की शक्ति प्राप्त होती है अन्यथा लंकापति रावण की तरह स्वयं परमात्मा को उसकी मुक्ति के लिये अवतरित होना पड़ता है।

ये तो केवल कुछ बाते हैं अन्यथा माँ बगलामुखी की पूजा के अनन्त फल हैं। पर इसके लिये सदैव ये सावधानी रखनी चाहिये कि सारी पूजा किसी साधक को ही गुरु बना कर करनी चाहिये।

चक्रव्यूह में इस बार दाती महाराज

कब आत्मचिन्तन करेगा संत समाज

यति मॉ चेतनानन्द सरस्वती

दिल्ली संत महामण्डल के अध्यक्ष और शनिधाम दिल्ली के संस्थापक महामण्डलेश्वर दाती महाराज पर उनकी ही पच्चीस वर्षीय शिष्या ने बलात्कार के आरोप लगा दिये है। ये आरोप केवल दाती महाराज पर नहीं लगे बल्कि पूरे संत समाज पर लग गये है और पूरे सनातन धर्म पर लग गये है। आज भारत के युवा के मन में यह धारणा बहुत बलवती हो चुकी है कि भारत का संत समाज तो होता ही भ्रष्ट है। धर्म का दुर्भाग्य है कि संत आज धर्म की हत्या के लिए हथियार बन रहे है। दाती महाराज से पहले भी जिन संतो पर ये आरोप लगे है, एक महिला होने के नाते में पूर्ण विश्वास से कह सकती हूँ कि ये ज्यादातर बलात्कार के मामले नहीं थे। ये मामले कुछ और थें जिन्हे बलात्कार का रूप दे दिया गया। आज हमारे देश में कानून कुछ इस तरह से बन गये है जिन्होंने संविधान की आत्मा को कुचल कर रख दिया है। हमारे संविधान निमार्ताओं ने कानून बनाते समय ये ध्यान रखा था कि चाहे सौ दोषी छूट जाये परन्तु एक भी निर्दोष को सजा नहीं होनी चाहिए। परन्तु कालान्तर में वोट बैंक की राजनीति और बढते अपराधों ने राजनैतिक तन्त्र से ऐसे कानून बनवाये जिनको बनाने का उद्देश्य किसी वास्तविक पीडित को न्याय दिलाना नहीं बल्कि कमजोर आरोपी को कुचल देना है, जिससे समाज को लगे कि न्याय और व्यवस्था करने वाले वास्तव में अपने कर्तव्यों के प्रति कितने सजग है।

आज सनातन धर्म का दुर्भाग्य है कि संत समाज एक समुदाय के तौर पर इस समय सबसे कमजोर सिद्ध हुआ और षडयंत्रो का शिकार होकर अपने ही समाज में पहले उपहास और अब घृष्णा का पात्र बनने लगा है।

मेरी बात कुछ अजीब सी लगेगी परन्तु सत्य ये ही है कि अब सनातन धर्म के युवा संत समाज को घृणा की नजर से देखने लगे

है। दाती महाराज से पहले जितने भी संतो को कानून ने शिकार बनाया, सोशल मीडिया पर बहुत बड़ा वर्ग उन संतों का समर्थन करता था परन्तु मैने अभी तक एक भी पोस्ट सोशल मीडिया पर दाती महाराज के समर्थन में नहीं देखी। यह बहुत गम्भीर बात है, जो ये बताती है कि अब हमारे युवाओ के मन से संत समाज के प्रति एक उदासीनता और घृणा का भाव घर करता जा रहा है।

यह बात आज पूरे संत समाज को समझनी पडेगी और अगर संत समाज इस बात को नहीं समझेगा तो संत समाज को और भी बुरे दिन देखने पडेगें। संत समाज यूं ही अपनी ऑख बन्द करके इस विनाश को देखता नहीं रह सकता क्योकि संत समाज केवल अपने लिए नहीं बल्कि सम्पूर्ण सनातन धर्म के लिए उत्तरदायी है। संत समाज पर हुआ आघात सम्पूर्ण सनातन धर्म को कमजोर करता है और हमारे शत्रु इस बात को अच्छी तरह से जानते है।

आज संत समाज को यह आंकलन करना ही होगा कि क्यो हमारे मठ मन्दिर इतने कमजोर और असहाय हो चुके है कि व्यवस्था कभी भी हमें प्रताड़ित और अपमानित करके अपराधी करार दे देती है वो भी उन अपराधो के लिए जो ज्यादातर होते ही नहीं। मैं यहॉ राम रहीम या वीरेन्द्र दीक्षित जैसे लोगो का समर्थन नहीं कर रही हूँ ना ही संतो को महिलाओ के साथ बलात्कार करने का विशेष अधिकार दे रही हूँ, परन्तु में समाज के सामने यह बात भी लाना चाहती हूँ कि बहुत सारे संतो पर यह जो घृणित आरोप लगे वो बाद में झूठे साबित हुए परन्तु जैसे ही संत समाज के किसी व्यक्ति पर यह आरोप लगा तो एक दम से मीडिया उसे शैतान घोषित कर देता है और जनमानस में उसकी ऐसी छवि बना देता है कि वो व्यक्ति जीते जी मर जाता है, और सामाजिक दबाव के कारण निर्दोष होने पर भी अपराधी करार दे दिया जाता है। ये स्थिति कैसे आयी? आज संत जिनका सारा जीवन केवल धर्म और मानवता के लिए होता है, कैसे हम लोग आज समाज की नजर में उपहास और घृणा के पात्र बन गये है? आज सारे संत समाज को इस पर आत्म चिंतन करने की आवश्यकता है।

संत समाज (कुछ अपवादों को छोड़कर) यदि बलात्कार का दोषी नहीं भी है तो भी संत समाज का दोष कोई कम नहीं है। दुनिया का सबसे बडा अपराध कमजोर होना है। आज संत समाज नहीं बल्कि सारा सनातन धर्म कमजोर है, तो इसका दोष केवल और केवल संत समाज का है क्योकि संत समाज के गुरू होते है। यदि शिष्य कोई गलती करता है तो उसका दोष गुरू को जाता है, ये सनातन धर्म कहता है। **आज सनातन धर्म के संतो को सोचना है कि भारत की व्यवस्था किसी मस्जिद, चर्च, या गुरूद्वारे से टक्कर नहीं ले सकती, चाहे वहां कितने ही अपराध क्यो न हो रहे हो? परन्तु वही व्यवस्था सनातन धर्म के मठ मन्दिरों को क्यो एक दम से ध्वस्त करने पर आ जाती है। यह एक ऐसा विचारणीय प्रश्न है, जिससे यदि संत समाज भागने या मुहॅ छिपाने का प्रयास करेगा तो यह आत्मघाती होगा।**

परिचय : यति मॉ चेतनानन्द सरस्वती

यति मॉ चेतनानन्द सरस्वती जी भारत के सर्वाधिक प्राचीन देवी मन्दिर में से एक प्राचीन देवी मन्दिर डासना की महंत हैं। आप हिन्दू स्वाभिमान नामक संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष भी है आपका पूरा नाम श्रीमति चेतना शर्मा था और आप सन्यास दीक्षा से पूर्व मेरठ शहर में एक अधिवक्ता के रूप में कार्यरत थी। आपने अपना पूरा जीवन केवल और केवल सनातन धर्म की रक्षा के लिए समर्पित किया है। आप सन्यास से पूर्व शिवसेना, अखिल भारतीय हिन्दू महासभा, दुर्गा वाहिनी, अखण्ड हिन्दुस्तान मोर्चा व सांस्कृतिक गौरव संस्थान में महत्वपूर्ण पदो पर कार्य कर चुकी है। हिन्दु संगठनों की कार्यशैली और उददेश्यविहिनता से परेशान होकर आपने स्वतंत्र सन्यासी और धर्म प्रचार के रूप में कार्य करना आरम्भ किया। अब आप गॉव गॉव जाकर सनातन धर्मावलम्बियों को धर्म और अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए जागरूक कर रही है। आपने महिलाओ को आतंकवाद के खतरे और दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करने के लिए 'नारी संसद' का आयोजन करना आरम्भ किया और अब आपका नाम सनातन धर्म की रक्षा के लिए कार्य करने वाले व्यक्तित्वों की अग्रिम पंक्ति में लिया जाता है।

सेना को पत्थर बाजों व आतकंवादियों से लड़ने के लिए भारत सरकार दे खुली छूट

बाबा परमेन्द्र आर्य (पूर्व सैनिक)

कश्मीर में जिस तरह से वहां के नागरिक हमारे सैनिकों पर पत्थर मार रहे हैं और आतकंवादी चोरी छुपे सैनिकों पर हमला कर रहे हैं ।ऐसे हालात में भारत सरकार को सेना को और अधिक अधिकार देकर इन देशद्रोहियों को समाप्त करना चाहिए। लेकिन हमारे गृहमंत्री जी ने रमजान के महीने में एक तरफ युद्ध विराम करके सैनिकों का मनोबल तोड़ दिया है।

इस युद्ध विराम के दौरान आतकंवादियो ने प्रति दिन हमारे सैनिक पर व सैनिक केम्पो पर हमले किये है। रमजान के महीने में सेना की गतिविधि घाटी में कम होने का फायदा उठाकर आतंकियों ने कश्मीर की जनता में अपनी पैठ मजबूत कर ली है। ईद के दिन भी हमारे सैनिकों पर वहां के नागरिकों ने पत्थर बाजी कर घायल कर दिया और हमारे सैनिक ईद के दिन आतंकवादियों से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। भारत सरकार की गलत नीतियों के कारण कश्मीर में 1990 से लेकर आज तक आतंकवाद से लड़ते हुए हमारे लगभग 5000 सैनिक वीरगति को प्राप्त कर चुके हैं व लगभग 13000 सैनिक गम्भीर रूप से घायल हुए।

इतनी बड़ी संख्या में तो हमारे सैनिकों पाकिस्तान से आमने-सामने की 1965 व 1971 की लड़ाई में भी वीरगति प्राप्त नहीं हुई थी। और दोनों ही युद्ध हमारी सेना ने जीते थे। लेकिन हमारे नेता मेजों पर बैठकर इन जीते हुए युद्धों को हार गये थे। यदि उस समय की सरकार ठीक से अपना पक्ष रखती तो पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर का भारत में

विलय कर सकतीं थीं और जो पाकिस्तान ने हमारे कुछ सैनिक पकड़ लिये थे उन्हें भी छुड़ा सकती थी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। 1971 की लड़ाई में पाकिस्तान द्वारा पकड़े गए कुछ सैनिक आज भी उसकी कैद में है।

भारतीय सेना विश्व की चौथे नंबर की सेना है। हमारे सैनिकों की बहादुरी के किस्से पुरे देश में गर्व के साथ सुनाएं जाते हैं ।हमारे सैनिकों ने आजादी के बाद एक भी इंच पाकिस्तानी फौज आगे नहीं बढ़ने दिया है ।लेकिन सरकार की आतंकवादियों से लडने की गलत नीतियों के कारण हमारे सैनिकों पर हो रहे कायराना हमलों में सैनिकों के मारे जाने से जिससे मनोबल पर गलत प्रभाव पड़ रहा है। विश्व में गलत संदेश जा रहा है।

विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जहां पर हथियारबंद सैनिकों पर पत्थर फेंके जाते हैं व सैनिकों को गन्दी गन्दी गालियां दी जाती है और फिर भी सैनिकों को अपने हथियारों को चलाने का आदेश नहीं मिलता है।हमारी सरकार को इजराइल व रूस की सरकार से सबक लेना चाहिए ।यदि इन देशों के एक सैनिकों को दुश्मन देश मार देता है तो ये दुश्मन देश के दस सैनिकों को मारकर बदला लेते हैं। यदि इजराइल की तरफ कोई देश गोली छोड़ देता है तो इजराइल उस देश पर सीधे मिजाइल मारता है।एक हमारा देश है कि यहां प्रतिदिन हमारे सैनिकों पर पत्थर फेंके जा रहे हैं, सैनिकों पर गोलीबारी हो रही है। ग्रेनेडो से हमले हो रहे हैं । लेकिन हमारे सैनिकों को सरकार संयम रखने का पाठ पढ़ा रही है। **यदि सरकार आतकंवादियो को शरण देने वालो को गिरफ्तार कर कड़ी सजा का प्रावधान करदे तो बहुत हद तक आतंकवाद पर काबू पाया जा सकता है। क्योंकि कोई भी आतंकवादी पाकिस्तान से आकर सीधे हमला नहीं कर सकता है उसे कोई तो अपने घर रखता है कोई तो उसे खाना खिलाता है। इन आतंकवादियों का समर्थन करने वालों पर सबसे पहले कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए तभी कुछ आतंकवाद में कमी आ सकती है। दूसरा सेना द्वारा पकड़े गए आतंकवादियों पर फास्टट्रेक अदालत में मुकदमे चलाकर फांसी की सजा दिलवाना सरकार का काम है। दस दस साल से आतंकवादी जेल में बैठे मजा मार रहे हैं। जेलों में बंद आतंकवादी जेल से ही अपने संगठनों के लिए काम कर रहे हैं। और मौका मिलने पर उनके साथ उन्हें छुड़ा लेते हैं। यदि सरकार को आतंकवाद को समाप्त करना है तो इसके लिए सबसे पहले जेल में बंद आतंकवादियों को फांसी के फंदे पर लटकाना होगा।** अब तो रमजान का महीना भी पुरा हो गया है ईद भी मना ली है ।अब तो गृहमंत्री जी सेना को खुली छूट दे दो इन पत्थर बाजों व आतकंवादियों को सीधे गोली मारने की। आपकी ही सरकार में किसानों पर गोलियां चलाई गईं , आपकी पुलिस ने छात्र व छात्रों पर लाठीचार्ज किया गया है। **आप इन आतंकवादियों को व इनके संरक्षकों को कितनी भी राहत व सुविधा दे लो ये कभी आपकी पार्टी को वोट नहीं देंगे। यदि आपको दोबारा सत्ता में आना है तो इन जेहादी मानसिकता वाले आतंकवादियों को समाप्त करना होगा।** आपकी पार्टी को देश की जनता ने इसलिए वोट दिये थे कि आप देश से आतंकवाद को जड़मूल समाप्त कर देंगे। यदि आप ऐसा नहीं कर सकते हैं तो देश की जनता का आप से भी मोहभंग हो जाएगा।

हमने विश्वास ना किया होता तो पाक विश्वासघात नही कर सकता था

कारगिल एक बहुत मुश्किल युद्ध था। दुश्मन ऊँची पहाड़ियों की चोटियों पर पुख्ता बकरों में सुरक्षित था। उन पहाड़ियों पर पहुँच कर दुश्मन को परास्त करना तो तब संभव था जब खड़ी पहाडियों पर चढ़ा जा सके। ऊपर से तापक्रम वो की सिपाहियों को राशन में मिली अरहर की दाल वहां पहुँचते- पहुँचते जम जाए जिसे कभी-कभी काट कर भी खाना पड़ा। परन्तु 23 ऑफिसर्स , 26 जे० सी० ओ० और 398 सिपाहियों ने अपनी शहादत देकर कारगिल युद्ध जीत लिया अर्थात करीब 450 शहादत। तब भी दरियादिली दिखाते हुए हिन्दुस्तानी सरकार ने बचे हुए दुश्मन के सैनिको को भाग निकलने का सुरक्षित रास्ता सेना की मर्जी के विरुद्ध दिलवा दिया।

कारगिल युद्ध के बाद से लेकर आज तक कोई दूसरा युद्ध नही हुआ। **परन्तु इस दौरान 15000 से अधिक सिपाही आतंकवादी गतिविधियों में शहीद हो चुके हैं। इसका सीधा-सीधा कारण हिंदुस्तानी सिपाही के शौर्य में कमी नही बल्कि हिन्दुस्तानी सरकार की नीतियों में जबरदस्त खामी का परिणाम हैं। सहनशीलता, अतिथि सत्कार, अहिंसा और गलती करने के बाद भी माफ कर देना, ये सब बाते घर, परिवार, मोहल्लो और समाज में तो ठीक हैं परन्तु राष्ट्र की सुरक्षा के समय इनका अनुसरण करना घोर अपराध हैं।** ये अपराध हमारी सरकारों ने 1948 में एक तरफा युद्ध विराम करके किया , 1962 में फौज को हाशिये से बाहर निकाल कर किया , 1965 में इछोगिल कैनाल तक जीती हुई भूमि को वापस करके किया, 1971 में दुश्मन के 93000 सिपाहियों को बंदी बनाने के बाद भी कश्मीर समस्या को खत्म न करके किया, 1990 में जब कश्मीरी पंडितो को जलील करके

कश्मीर से खदेड़ा गया तो सरकारों ने असहाय विधवा की तरह चुप रह कर किया , 1999 में कारगिल युद्ध जीतने के बाद भी दुश्मन को सुरक्षित गलिहारा देकर किया और इसके बाद बार-बार 2003 से लेकर आजतक संघर्ष विराम करके किया।

कभी-कभी संदेह होने लगता हैं की ये सरकारे क्या वाकई इसी .देश की हैं। अब मोहब्बत का पैगाम देने के लिए रमजान के महीने मे 2018 में एक महीने का एक तरफा संघर्ष विराम घोषित कर दिया गया। स्मरण रहे की यह तब किया गया जब भारतीय फौज का आपरेशन आल आउट पूरी रवानी पर था। आतंकवादी रोज ढेर हो रहे थे। उनके सरगनाओ को चुन-चुन कर चुनौती देकर ढेर किया जा रहा था। लग रहा था की पिछली करीब एक चौथाई शताब्दी से भी अधिक के समय से चला आ रहा आतंक अब आखरी सांसे गिन रहा हैं। भारत के सेनापति और भारत के रक्षा मंत्रालय ने समर्थन नही किया था।

परन्तु गृह मंत्रालय ने महबूबा मुफ़्ती के सुझाव पर संघर्ष विराम घोषित कर दिया। परिणाम में जो मिला वो है सिपाही औरंगजेब का अपरहण एवं हत्या और शीर्ष पत्रकार शुजात बुखारी की हत्या समेत 39 नागरिक और सिपाहियों की धोखे से सीमा रेखा पर हत्या आदि। वैसे मैं इसे धोखे से की गई हत्या इसलिए नही मानता क्योकि बार-बार विश्वास करके हमारी सरकारों ने पाकिस्तान को विश्वासघात करने की दावत दी हैं।

मै एक वीर चक्र प्राप्त सिपाही हूँ जो केवल युद्ध के मैदान में असाधारण शौर्य दिखाने पर राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया जाता हैं ,और अक्सर मरणोप्रान्त मिलता हैं। मैं जिन्दा हूँ और सोचता हूँ की सीमा पर तैनात सिपाही , जिसको यह नही पता की वो कल का सूरज देख पाएगा या नही , परन्तु उसके हाथ में एक मोबाईल भी हैं जिससे उसे उसके नेताओ के आचरण और भाषण का पता लगता हैं। क्या उसके लिए यह सोचना अस्वाभाविक हैं की पी.ओ.के. (कश्मीर का वो हिस्सा जो पाकिस्तान में हैं) को पाकिस्तान का बताने वाले फारुख अब्दुल्ला के लिए में जान क्यों दूँ , मुसलमानों की अप्रत्याशित बढती आबादी के आधार पर एक अलग देश मांगने वाले कश्मीर के मुफ़्ती-ऐ-आजम के लिए मैं जान क्यों दूँ और 10000 पत्थरबाजों को संगीन अपराध के बाद भी माफ करने वाली महबूबा के लिए मैं जान क्यों दूँ। गजबे-ए-हिन्द की सोच , 16 अगस्त 1946 के डायरेक्ट एक्शन डे का परिणाम , विभाजन के बाद पाकिस्तान में हिन्दुओ का 22 % से 1% पर आना और हिंदुस्तान में मुसलमानों का 9 % से 20% पर जाना , कयामत तक जिहाद का संकल्प - हिंदुस्तान के इस्लामीकरण की तरफ इशारा करता है। ऐसी परिस्थिति में हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए स्वामी यति नरसिंहानन्द जी के निरंतर प्रयासो की मै सराहना करता हूँ।

मैं भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री कोविंद नाथ जी एवं माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से नम्रता पूर्वक जिद्द करता हूँ कि एक आर्डिनेंस तुरंत पास किया जाए कि प्रत्येक नागरिक आपसी अभिवादन में सार्वजानिक स्थानों पर गुड मार्निंग , नमस्ते , आदाब-ए-अर्ज अथवा सत श्री अकाल के बजाय 'जय हिन्द' बोलेगा। जब टेलीविजन पर सेट टॉप बॉक्स लगाना अनिवार्य किया जा सकता है तो 'जय हिन्द' क्यों नही। यदि अब भी कोई संदेह रह जाए तो सरकार को आस्ट्रेलिया की प्रधानमंत्री जूलिया गिलार्ड का सार्वजानिक उद्घोष सुनना और पढना चाहिए जिसमे उस महिला ने मुसलमानों से कहा है की आस्ट्रेलिया के कानून मानने पड़ेंगे शरियत के नही अथवा आपको देश छोड़ने के आदेश का पालन करना होगा।

अब मिचमिचाती आँखों से या लड़खड़ाते पैरो से या कंपकपाते ओंठो से काम नही चलेगा बल्कि हिंदुस्तान की अस्मिता और एकता को बचाने के लिए साहस को दोनों हाथो में आगे लेकर बढ़ना होगा। मैं हिंदुस्तान के प्रत्येक देशभक्त युवा का आह्वान करता हूँ की देश और सेना के विरुद्ध टिप्पणी करने वाले लोगो का और उनको अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर महामंडित करने वाले टेलीविजन चैनलों का सार्वजनिक, समाजिक और सामूहिक बहिष्कार किया जाए।

'हिंदुओं पर कानूनी आतंकवाद'

(आशीष अग्रवाल, इंदौर)

इस पत्रिका की जरूरत क्यो है? एक छोटा सा उदाहरण देकर समझाता हूँ। हम सालों से राम मंदिर मुद्दे पर लड़ रहे है। ये दुनिया के लिए मजाक का विषय है। 120 करोड़ की जनसंख्या के देश मे 80 प्रतिशत हिन्दू हैं और 15-16 प्रतिशत मुसलमान। केवल 10 प्रतिशत हिन्दू (मतलब 10 करोड़ हिन्दू) अपने अपने सांसद के यहाँ पहुँच जाए या अयोध्या में जाकर आंदोलन करने लगे तो 2 दिन में निर्माण शुरू हो जाये। मैं राम मंदिर मुद्दे के पक्ष में बिल्कुल नहीं हूं,वो तो 10 प्रतिशत हिन्दू के जागने पर बन ही जायेगा। मैं तो उस वक्त के इंतजार में हूँ, जब हर हिन्दू जागेगा और तब मुद्दा होगा अजमेर शरीफ मुद्दा, की वह दरगाह रखी जाए या वहाँ पर एक हॉस्पिटल बना दिया जाय।

अधिकार खोकर बैठें रहना ये महादुष्कर्म है, **न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है। इस हेतु ही तो कौरवों और पांडवों का युद्ध हुआ, जो भव्य भारतवर्ष का कल्पांत का कारण हुआ।**

हिन्दूओं के अधिकार के प्रति उदासीनता ही हिन्दू के पतन का कारण है। पर हिन्दू अपने अधिकारों के प्रति उदासीन क्यो है? पहला कारण हैं, मीडिया, हिन्दुओ को इतनी आत्मग्लानि से भर दिया है, की वह सर भी नहीं उठा सकता, लड़ाई तो दूर की बात है। कई हिन्दू शर्मिंदा है कि वह हिन्दू है। सती प्रथा, दहेज, महिला अत्याचार, अंधविश्वास, हमारी बुराई का इतना ढोल पीटा गया, की हम हिदुत्व के हर मुद्दे पर इधर उधर छिपने का प्रयास करते है।

आपने सुना होगा कि लड़की के साथ बलात्कार करने के लिए, लड़की को बेहोशी का इंजेक्शन लगते रहे। हिन्दू धर्म के साथ बलात्कार करने के लिए सेक्यूलरिस्म का इंजेक्शन लगाते रहे। जिन्ना की पार्टी को ब्रिटिश सरकार पैसा देती

रही। और ब्रिटिश सरकार ने जिन्ना के माध्यम से मुस्लिम राष्ट्र बनवा दिया। पर ब्रिटिश ने नेहरू गाँधी के माध्यम से भारत को सेक्युलर राष्ट्र क्यो बनवाया। डॉ भीमराव अंबेडकर, विनायक दामोदर सावरकर, वल्लभ भाई पटेल जैसे कई नेता थे जो भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाना चाहते थे।

तीसरा अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण कारण है,हिन्दू को अपने अधिकारों के हनन का ज्ञान न होना। मुसलमान और क्रिश्चियन जहाँ अपने अधिकारों के बारे में सर्तक रहते हैं, वे हर शुक्रवार और रविवार को प्रार्थना सभा मे जाते है जहाँ उन्हें उनके धर्म के प्रति जागरूक किया जाता है। वहीं हिन्दू के साथ, उनके धर्म के साथ, उनके अधिकारों के साथ कुछ भी हो, उसे मालूम ही नहीं पड़ता।

कुछ दिनों पहले तीन तलाक मुद्दा उठा, बात केवल इतनी थी एक बार मे तीन तलाक देने को अमान्य करके एक एक महीने के अंतराल से तलाक बोलना पड़ेगा। कुल दो महीने मे तलाक होगा। पहले पुरुष गुस्से में तीन बार तलाक बोल देता था, फिर अपनी पत्नी को दूसरे मर्द के साथ सुलाना पड़ता। पर क्या बवाल मचाया, सरकार को भी पसीना आ गया।

हिन्दू विरोधी बिल 498अ कब बना शायद ही किसी हिन्दू को याद हो। हमारा हिन्दू परिवार मर्यादा पर आधारित है। पत्नी को पति के मयार्दा में, बेटे को माता पिता की मर्यादा में रहना पड़ता है। पर छोटे को इतने अधिकार दे दिए जाएं तो परिवार का बिखरना तय है। 19 जुलाई 2005 को सुप्रीम कोर्ट ने 498अ को कानूनी आतंकवाद की संज्ञा दी। लड़ाई झगड़े हर घर मे होते है, पर मुस्लिम महिलाओं के सर पर तीन तलाक की तलवार टाँग रखी है, वही 498 अ से प्रताड़ित होकर सैकड़ों प्रति और उसके माता पिता ने आत्महत्या कर ली। 498 अ के कुछ आंकड़े है। 85% केस फर्जी साबित हुए।

साल 2015 में 46217 498अ मुकदमे का फैसला आया जिसमें स 6559 में वर पक्ष दोषी था, जबकि 39658 केस में मुकदमा फर्जी पाया गया, जबकि 10318 केस में समझौता हो गया। 14.2% केस में सच्चाई पायी गयी जबकि इसी साल IPC की अन्य धारा में दर्ज मुकदमे में 47% मुकदमे सही पाए गए।मतलब सारे कानून में 498 अ में फर्जी मुकदमे सबसे ज्यादा पाए गए अन्य IPC की धारा के मुकाबले। साल 2006 में धारा 498अ मे लबित

साल	अपराधी	बरी किया	समझौता	%
2006	6857	24404	5679	21.9
2007	6831	25791	6364	20.9
2008	7710	26637	7310	22.4
2009	7380	29943	7111	19.8
2010	7764	32987	6601	19.1
2011	8167	32171	7450	20.2
2012	6916	39165	8262	15
2013	7258	38165	8218	16
2014	6425	40428	8922	13.7

मुकदमे 206431 थे जो 2015 में बढ़कर 477986 हो गए है। इस 477986 केस का फैसला आएगा तब 4 लाख से ऊपर लोग निर्दोष साबित होंगे, पर तब तक वर पक्ष को पुलिस और कोर्ट की त्रासदी झेलनी पड़ेगी। पूरे विश्व मे पति या पत्नी में से कोई भी साथ रहने में असहज महसूस करता है, तो वह तलाक ले सकते है, पर हिन्दू धर्म के पुरुषों के पास यह अधिकार वास्तविकता में नहीं है।

498 अ एक ऐसा कानून है जिसका विरोध जी न्यूज पर सुधीर चौधरी से लेकर एनडीटीवी पर रविश कुमार भी करते है। वह दिन दूर नहीं जब हिन्दू के विवाह कार्ड में घोषणा छापी जाये कि हमारा बेटा अपनी मर्जी से यह शादी कर रहा है। वह हमसे अलग रहता है। या शादी के वक्त सभी मेहमानो के सामने लड़की और उसके माता पिता से दहेज ना देने की वीडियोग्राफी कराई जाए और मेहमानों से गवाही भी रिकॉर्ड करवाई जाए।

498 अ जैसे सैकड़ो कानून है जो हिन्दुओ के साथ भेदभाव करते है। पर हम जब तक नहीं बोलेंगे जब तक हम पर नही बीतेगी।

भगवान शिव का स्वरूप

भगवान शिव का जो स्वरूप में हमें चित्रकलाओं या मूर्तिकला के नमूनों में देखने को मिलता है भगवान शिव ऐसे ही थे यह तो दावा नहीं किया जा सकता क्योंकि शिव तो कण-कण में विद्यमान हैं इसलिये वे साकार और निराकार दोनों ही रूपों में विद्यमान होते हैं ऐसे में रूप विशेष में बांधना उन्हें सीमित कर देता है। लेकिन जिस रूप में उनकी पूजा की जाती है वह निराधार हो ऐसा भी नहीं है। दरअसल शिव के इस स्वरूप की रचना कलाकारों ने पौराणिक कथाओं में भगवान शिव के चरित्र चित्रण के आधार पर की है। इसलिये भगवान शिवशंकर के इस पौराणिक स्वरूप की जो छवि हम चित्रों या मूर्तियों के माध्यम से देखते हैं, पूजते हैं वह उन्हीं का एक रूप मानी जा सकती है। उनके स्वरूप की बात करें तो देखने पर हमें पता चलता है कि इनकी जटाओं से गंगा निकलती है, मस्तक पर चंद्रमा धारण कर रखा है, जिनका कंठ नीला पड़ गया है, जो गले में नरमुंड और सर्पों का हार डाले रहते हैं, जो त्रिनेत्र हैं जिन्होंने तन पर बाघ की छाल पहनी हैं, वर्षभ जिनका वाहन है, हाथों में जिनके त्रिशूल और डमरू हैं। भगवान शिव का यह स्वरूप उन्हें आकर्षक और दैविय तो बनाता है लेकिन साथ ही शिव द्वारा धारण किये गये हर अस्त्र, शस्त्र, वस्त्र आदि का विशेष अर्थ है। एक विशेष शिक्षा भगवान शिवशंकर के इस स्वरूप से मिलती है।

शिव स्वरूप के मायने

जटाएं – भगवान शिव की जटाएं चंद्रमा से लेकर गंगा तक समायी हुई लगती हैं। इन्हें जटाधारी भी कहा जाता है जिस तरह ब्रह्मांड में आकाश गंगा में तारे व चंद्रमा होते हैं उसी तरह शिव की जटाओं से भी गंगा निकलती है। चंद्रमा उनकी शोभा को बढ़ाते हैं। अर्थात भगवान शिव की जटाएं अंतरिक्ष की ही प्रतीक हैं।

चंद्रमा – बाबा भोलेनाथ की जटाओं में ही मस्तक के ठीक ऊपर चंद्रमा दिखाई देता है। समुद्र मंथन के

आचार्य दीपक तेजस्वी

दौरान निकलने वाले रत्नों में एक चंद्रमा भी जिसे भगवान शिव ने धारण कर लिया। दरअसल चंद्रमा को ज्योतिष में मन का कारक माना जाता है। यह संकेत करता है कि भगवान शिव जिन्हें हम भोले बाबा भी कहते हैं इनका मन चंद्रमा की तरह उज्जवल एवं जाग्रत है, चंचलता व भोलापन लिये है।

त्रिनेत्र – भगवान शिव के तीनों नेत्र उन्हें त्रिलोकी, त्रिगुणी और त्रिकालदर्शी बनाती हैं। तीन लोकों में स्वर्ग लोक, मृत्यु लोक या कहें भू लोक और पाताल लोक आते हैं तो सत्व, रज और तम तीन गुण माने जाते हैं। भूत, वर्तमान और भविष्य तीन काल हैं। त्रिनेत्र होने के कारण ही भगवान शिव त्रिलोचन कहे जाते हैं।

सांपों का हार – सांप या कहें सर्प तमोगुणी प्रवृतियों का प्रतीक है। भगवान शिव के गले में होने के कारण यह संदेश मिलता है कि तमोगुणी प्रवृतियां भगवान शिव के वश में हैं। उनके अधीन हैं।

मुंडमाला – उनके गले में एक मुंडमाला भी दिखाई देती है। पौराणिक कथाओं की माने तो ये सभी मुंड देवी शक्ति के हैं। भगवान शिव के लिये उन्होंने 108 बार जन्म लिया, उनसे विवाह किया और हर बार उनको अपने प्राण त्यागने पड़े, हर जन्म के साथ उनकी माला में एक मुंड जुड़ता चला गया। दरअसल यह मृत्यु का ही प्रतीक हैं। शिव जो कि विध्वसंक की भूमिका निभाते हैं वे संदेश देते हैं कि मृत्यु को उन्होंने अपने वश में कर रखा है।

त्रिशूल – शिव के साथ त्रिशूल भी दिखाई देता है मान्यता है कि यह तीन तरह के तापों का नाश करने वाला है। ये ताप दैविक, दैहिक और भौतिक तापों के लिये एक मारक शस्त्र है। अर्थात किसी भी प्रकार के कष्ट को भगवान शिव अपने त्रिशूल से नष्ट कर देते हैं।

डमरू – जब शिव का डमरू बजने लगे तो तांडव शुरू हो जाता है और तांडव से ही विध्वंस भी होने लगता है इसलिये शिव को नियंत्रित करने के लिये शक्ति यानि माता पार्वती भी उनके साथ नृत्य करती हैं जिससे शिव व शक्ति से संतुलन कायम होता है। भगवान शिव के डमरू का रहस्य यह है कि डमरू के नाद को ही ब्रह्मा का रूप माना जाता है। दरअसल जब विध्वंस होता है तभी ब्रह्मा निर्माण करते हैं। और विध्वंस तभी होता है जब शिव का डमरू बजता है और तांडव होने लगता है।

व्याघ्र खाल – भगवान शिव ने अपने तन को व्याघ्र की खाल से ढ़क रखा है। बाघ की खाल का ही आसन भी उन्होंने धारण कर रखा है। यहां बाघ हिंसात्मक और अंहकारी प्रवृति के प्रतीक हैं। शिव इन दोनों का दमन करते हैं और आवश्यकतानुसार ही इस्तेमाल करने का संकेत करते हैं। भगवान शिव ने बाघ की खाल से अपने उन्हीं अंगों को ढ़क रखा है जिन्हें ढ़कना आवश्यक होता है यानि शिव संदेश देते हैं स्वाभिमान जरूरी है लेकिन अंहकार का दमन करना चाहिये।

भस्म – भगवान शिव अपने तन पर भस्म भी रमाते हैं। इससे शिव यह संदेश देते हैं यह संसार नश्वर है सभी को एक दिन खाक में मिलना है। जब मिटेगा तभी सृजन होगा। यहां भस्म शिव के विध्वंस की प्रतीक भी हैं जिसके बाद ब्रह्मा जी पुनर्निर्माण करते हैं।

वृषभ – भगवान शिव के वाहन नंदी माने जाते हैं नंदी वृषभ यानि बैल हैं। बैल गौवंश होता है, धार्मिक

दृष्टि से भी बैल की काफी अहमियत मानी जाती है। पौराणिक ग्रंथों में तो बैल यानि वृषभ को धर्म का प्रतीक भी माना जाता है। धर्म रूपी इस वृषभ के चारों पैर चार पुरुषार्थों की ओर ईशारा करते हैं जो कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं। अतः शिव की कृपा से ही प्राप्त होती है। वृषभ चूंकि भगवान शिव के वाहन हैं इसलिये गौवंश की रक्षा करने का धार्मिक महत्व भी है।

कुल मिलाकर कहना यह है कि भगवान का आकार कैसा है यह कोई नहीं जानता क्योंकि जिसने उनके रूप का दर्शनकर लिया उसमें इतना सामर्थ्य ही नहीं रहता कि वह उसके रूप का बखान कर सके इसलिये धार्मिक ग्रंथों में ऋषि मुनियों ने उस रूप के दर्शन हेतु प्रतीकात्मक उपाय अपनाये हैं। जिनमें से देवस्वरूपों की व्याख्या भी एक प्रतीकात्मक अर्थ लिये रहती है।

हिन्दुओं के अस्तित्व युद्ध में तमाशबीन भाजपा

जनसंख्या नियंत्रण कानून देश की सबसे बड़ी आवश्यकता है। अगर मुस्लिम आबादी इसी दर से बढ़ती गई तो आने वाले तीस वर्षों में भारत के ज्यादातर हिस्सों में हिन्दू अल्पसंख्यक हो चुके होंगे। हैरानी की बात यह है कि आम जनमानस से लेकर सरकार तक इस तथ्य को सभी जानते हैं मगर इस पर कार्यवाही करने को कोई तैयार नहीं है। डासना मंदिर के महंत यति नरसिंहानंद सरस्वती धर्म संसदों के मंच से लगातार इस मुद्दे को उठाते रहे हैं।

सुरेश च्वाहण जागरुकता यात्रा निकाल चुके हैं। **मगर वोट की राजनीति में व्यस्त भाजपा सरकार हिन्दुओं के अस्तित्व के इस संघर्ष युद्ध में दर्शक बनी हुई है। जबकि मोदी के नेतृत्व वाली भगवा सरकार से आशा थी कि मुस्लिम आबादी पर नियंत्रण के लिए जनसंख्या नियंत्रण कानून बनेगा।** अफसोस न यति नरसिंहानंद

आशित त्यागी

सरस्वती के खून से लिखे पत्र काम आ सके न धर्म संसद में पास प्रस्ताव ही मोदी सरकार का ध्यान खींच सके। जनगणना-2011 के मुताबिक हिंदुओं की जनसंख्या वृद्धि दर 16.76 फीसदी रही जबकि 10 साल पहले हुई जनगणना में ये दर 19.92 फीसदी पाई गई थी। भारत में मुसलमानों की आबादी 29.5 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। धार्मिक आबादी की गणना के विश्लेषण में जब केवल हिन्दू और मुसलमान आबादी की तुलना करने की पद्दति अपनाई जाती है तो ये दावा किया जा सकता है कि भारत में मुसलमानों की दर अब भी हिंदुओं की जनसंख्या वृद्धि दर से अधिक है। ईसाइयों की जनसंख्या वृद्धि दर 15.5 फीसदी, सिखों की 8.4 फीसदी, बौद्धों की 6.1 फीसदी और जैनियों की 5.4 फीसदी है।

जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक देश में हिंदुओं की आबादी 96.63 करोड़ है, जो कि कुल जनसंख्या का 79.8 फीसदी है। वहीं मुसलमानों की आबादी 17.22 करोड़ है, जो कि जनसंख्या का 14.23 फीसदी होता है। ईसाइयों की आबादी 2.78 करोड़ है, जो कि कुल जनसंख्या का 2.3 फीसदी

और सिखों की आबादी 2.08 करोड़ (2.16 फीसदी) और बौद्धों की आबादी 0.84 करोड़ (0.7 फीसदी) है। 29 लाख लोगों ने जनगणना में अपने धर्म का जिक्र नहीं किया। पिछले एक दशक में किसी धर्म को नहीं मानने वालों की जनसंख्या 17.7 फीसदी की दर से बढ़ी है। **देश में तेजी से बढ़ रही जनसंख्या के कारण देश की एकता, अखंडता, संप्रभुता और लोगों की धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकारों पर गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है। देश में बहुसंख्यक हिंदू समाज की जनसंख्या तेजी से घटती जा रही है और देश का जनसांख्यिकीय अनुपात इस कदर बिगड़ गया है कि कई राज्यों में पूर्ण रूप से और कुछ राज्यों में क्षेत्रीय स्तर पर हिन्दूअल्पसंख्यक हो चुके हैं।** 1947 में देश का बंटवारा धर्म के आधार पर ही हुआ था। हालांकि करोड़ों लोगों की लाशें बिछाकर हुए विभाजन के बावजूद भारत धर्मनिरपेक्ष ही बना रहा है। आज एक बार फिर वैसी ही चुनौती देश के सामने पैदा होती जा रही है, जहां एक और विभाजन की आशंका प्रबल हो उठी है। इसीलिए नारा दिया गया है, 'हम दो, हमारे दो तो सबके दो।'

भारत में मुसलमानों की जनसंख्या 1951 में 9.8 प्रतिशत था जो बढ़ कर वर्ष 2011 जनगणना में 14.23 प्रतिशत हो चुका है ! भारत में हिंदुओं की जनसंख्या वर्ष 1951 में 84.1 प्रतिशत था जो घट कर 2011 के जनगणना में 79.80 प्रतिशत हो चुका है ! जनगणना 2011 के अनुसार, भारत (1,210,193,422) में मुसलमानों की कुल आबादी 17.22 करोड़ है, जो भारत की जनसंख्या का 14.23% है !

भारत सरकार के जनगणना के अनुसार, भारत के कुल प्रतिशत में मुसलमानों की जनसंख्या

- 1951 – 9.8%
- 1961 – 10.69%
- 1971 – 11.21%
- 1981 – 11.35%
- 1991 – 12.61%
- 2001 – 13.4%

भारत दुनिया का सबसे तीसरा बड़ा मुस्लिम आबादी का देश है ! दुनिया का सबसे बड़ा मुस्लिम अल्पसंख्यक आबादी वाला देश भारत है ! भारत से ज्यादा मुस्लिम जनसंख्या वाला देश दुनिया में सिर्फ दो हैं - इंडोनेशिया और पाकिस्तान ! भारत के तीन राज्यों में मुस्लिम आबादी सब से ज्यादा है - उत्तर प्रदेश - 3.07 करोड़ (19.3%), पश्चिम बंगाल - 2.02 करोड़ (25%) और बिहार - 1.37 करोड़ (16.9%) ! अमेरिका के अनुसार भारत में साल 2050 तक मुसलमानों की कुल जनसंख्या बढ़कर 31.1 करोड़ तक हो सकता है ! भारत के 47 % मुसलमान मुख्यतः उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और बिहार राज्य में रहते हैं ! दुनिया के 10% मुसलमान भारत में रहते हैं ! सर्वाधिक मुस्लिम जनसंख्या प्रतिशत वाला केंद्रशासित प्रदेश लक्षद्वीप - 61,981 - 96.2% सर्वाधिक मुस्लिम जनसंख्या प्रतिशत वाला राज्य - जम्मू और कश्मीर - 8,570,916 - 68.3% उसके बाद असम - 10,659,891 - 34.2% है ! सर्वाधिक मुस्लिम जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश - 38,519,225 - 19 .3% है।

अगर जल्द ही इस देश में जनसंख्या नियंत्रण के लिए कानून नहीं बनाया गया तो इस देश के लिए बढ़ती जनसंख्या विनाश का कारण बन सकती है। अफसोस की बात तो यह है कि इस कानून को भी धार्मिक मुद्दा बना कर हंगामा किया जाएगा। देश की बढ़ती जनसंख्या को पर नियंत्रण लगाने के लिए भारत सरकार को जल्द ही सख्त कानून बनाना चाहिए। समय रहते जनसंख्या विस्फोट को रोका नहीं गया तो आने वाली पीढियां खाद्यान्न, जल सहित कई प्राथमिक संसाधनों और रोजगार के लिए तरसेगी।

खतरा इस बात का भी है कि अभी ही देश में बहुत ज्यादा गरीबी और बेरोजगारी है। मुझे इस बात का इंतजार है कि भारत भी चीन की तरह ही जल्द ही एक बच्चा नीति को कानून के रूप में लागू करेगा। जनसंख्या पर अनियंत्रित वृद्धि को लेकर भारत को आने वाले समय में खामियाजा भुगतना पड़ेगा। भारत को चाहिए की वह भी चीन की तर्ज पर ही बच्चे पैदा करने का सख्त कानून पास करे और तीसरे बच्चे टैक्स भी लगाए।

JAI BUILDWELL

EASY WAY TO GET THE LAND

ALL KIND PROPERTY FREE HOLD AND GDA APROBED

B-60, NEW BUS STAND, PALIKA MARKET, GHAZIABAD. U.P. 201001. M. 9911331142

Products List

SHIVORINE
Blood Purifire Syrup

SHIVOREX
Cough Syrup

SHIVOLIV 59
Syrup

SHIV-SUDHA
Uterine Tonic

SHIVONIGHT
Power Capsule

SHIV AYURVEDIC
Hair Oil

- कुर्मायासव
- अमृतारिष्ट
- अर्जुनारिष्ट
- पूर्नवारिष्ट
- दाक्षासव
- अशोकारिष्ट
- अश्वगंधारिष्ट
- खादिरिष्ट
- चंदनाआसव
- शिवारिष्ट
- दशमूलारिष्ट
- अभियारिष्ट
- वासारिष्ट
- कुर्टजारिष्ट

SHIV AYURVEDIC AUSHDHALAYA

Shiv Ayurvedic Aushdhalaya

Head Office : Sec-8/113, Chiranjeev Vihar, Ghaziabad
Branch Office : H. No.57, Nehru Chowk, Bhokerheri, Muzaffarnagar
B-5, Rkpuram, Govindpuram, Ghaziabad
Website : www.shivayurvedicaushdhalaya.com

'सूर्या बुलेटिन' क्या और क्यों

राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर जी की अमर कृति परशुराम की प्रतीक्षा की प्रारम्भिक पंक्तियों से अपनी बात आरम्भ करता हूँ।

''गर्दन पर किसका पाप वीर ! ढोते हो ?
शोणित से तुम किसका कलंक धोते हो ?
उनका, जिनमें कारूण्य असीम तरल था,
तारूण्य ताप था नहीं, न रंच गरल था,
सस्ती सुकीर्ति पा कर जो फूल गये थे,
निवीर्य कल्पनाओ में भूल गये थें,

गीता में जो त्रिपिटक-निकार्य पढते है,
तलवार गलाकर जो तकली गढते है,
शीतल करते है, अनल पुबद्ध प्रजा का,
शेरो को सिखलाते है धर्म अजा का,

सारी वसुन्धरा में गुरू पट पाने को,
प्यासी धरती के लिए अमृत लाने को,
जो सन्त सीधे पाताल चले थे,
अच्छे है, अब पहले भी बहुत भले थे,
हम उसी धर्म की लाश यहा ढोते है,
शोणित से संतो का कलंक धोते है।

अनिल यादव

ये पंक्तियॉ मेरे गुरू यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज व मेरी गुरू बहन यदि मॉ चेतनानन्द सरस्वती जी महाराज ने मुझे पढ़वाई थी। मैं इन पंक्तियों में अपने गुरू जी के दर्द को महसूस करता हूँ। मेरे गुरूजी ने अपना पूरा जीवन हम सनातन धर्मावलम्बियों को धर्म की रक्षा के लिए जागृत करने में लगा दिया। उनका स्पष्ट विचार है कि धर्म की गलत व्याख्याओं ने हम सनातन धर्मियों को इतना कमजोर कर दिया है कि **हम अन्याय और अत्याचार का विरोध करने के स्थान पर अपने से कमजोर पर अन्याय और अत्याचार करके अपने अहंकार को तुष्ट करते है और अपने स्वाभिमान की हत्या कर देते है।**

हमारी वरिष्ठ गुरू बहन यति मॉ चेतनानन्द सरस्वती जी जो कि प्राचीन देवी मन्दिर डासना की महंत है और हिन्दू स्वाभिमान की राष्ट्रीय अध्यक्ष है उनके मार्ग दर्शन में हम सब जगदम्बा महा काली डासना वाली के बेटो ने ये संकल्प लिया है कि हम उस महामानव को जो अपने धर्म के लिए खडा खडा गल गया पर उफ तक नहीं की और अपने जीवन के अन्तिम छण तक सत्य सनातन धर्म और सत्य सनातन संस्कृति को पुनः विश्व गुरू के पद पर आरूड करने के लिए प्रयासरत रहेंगे। सूर्या बुलेटिन नामक यह पत्रिका केवल एक पत्रिका न रहे बल्कि अपने धर्म और अपनी संस्कृति की सच्ची संदेश वाहक बने ये हम सभी जगदम्बा महाकाली डासना वाली की संतानो की जिम्मेदारी है। मैं इसे अपना सौभाग्य समझता हूँ कि इसमें मुझे भी एक भूमिका दी गयी है। यह कोई पद नहीं है बल्कि एक जिम्मेदारी है जिसे निर्वाह करना बहुत कठिन कार्य है क्योकि यह कोई साधारण पत्रिका नहीं है। बल्कि इसे यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी के विचारों को पूरी दुनिया में पहुचाने और हर उस सनातन धर्मावलम्बी की पीडा, जिसे कोई नहीं सुन रहा है कि आवाज बनाने की जिम्मेदारी दी गयी है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि साईवर सिपाहियों जैसे अपने गुरू भाईयों के साथ और डा0 आर0के0 तोमर, श्री हरिनारायण सारास्वत व श्री विनोद कुमार सर्वोदय जी जैसे वरिष्ठ संरक्षको के सानिध्य और सहयोग से हम इस लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

ये पत्रिका केवल एक साधारण पत्रिका बनकर न रह जाये, ये केवल मेरी अकेले की जिम्मेदारी नही है बल्कि ये उस हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है जिसने गुरू जी के संघर्ष को देखा व महसूस किया है। इस पत्रिका का घोषित लक्ष्य है कि यह पत्रिका सनातन धर्म के मानने वाले हर व्यक्ति की पीडा को आवाज देगी हर सनातन धर्मावलम्बी को यह विश्वास दिलायेगी कि हम उसकी पीडा, उसके संघर्ष में उसके साथ है। यह पत्रिका समाज में एक जुटता के लिए कार्य करेगी।

सबसे बढ़कर इस पत्रिका का कार्य होगा सनातन धर्म के गौरवशाली सिद्धान्तों और इतिहास को पूरी दुनिया के सामने लाना। यह पत्रिका सनातन धर्म के आधारभूत स्तम्भ शिव और शक्ति की उपासना के लिए विश्व को प्रेरित करेगी किपूरे विश्व में परमात्मा की वाणी में दिये गये एकमात्र ग्रन्थ श्रीमद् भागवत गीता के सिद्धांतों को सम्पूर्ण मानवता तक पहुचाना इस पत्रिका का लक्ष्य होगा।

किसी कवि ने कहा कि...

''शब (रात) के अधेरो को खंगालो तो कोई बात बने
एक नया खुर्शीद (सूर्य) निकालो तो कोई बात बने
वक्त के सांचे में ढल जाना तो कोई बात नहीं
वक्त को अपने सांचे में ढालो तो कोई बात बनें।''

मॉ और भोले बाबा की कृपा गुरू जी का अशीर्वाद, बडी बहन यति मां चेतनानन्द जी का मार्गदर्शन, सभी वरिष्ठ साथियों का संरक्षण व सभी साथियों का सहयोग और हम सबका पुरूषार्थ सूर्या बुलेटिन को वास्तव में सनातन धर्म का सूर्य बनाये यही मेरी कामना है और यही ईश्वर से मेरी प्रार्थना है।

धर्म संसदः घटता

हिन्दू समाज की दयनीय स्थिति पर संतो के आक्रोश की आवाज बना गाजियाबाद का प्रथम धर्म संसद

जगदम्बा महाकाली डासना वाली के परिवार द्वारा गाजियाबाद में पहली बार विराट हिंदू धर्म संसद का आयोजन किया गया, जिसमें सिद्धपीठ प्रचंड महाकाली डासना देवी मंदिर के महंत यति बाबा नरसिंहानंद सरस्वती जी महाराज के आव्हान पर देश और दुनिया से ऐसे संत एकजुट हुये जिन्होंने किसी भी कीमत पर हिंदू धर्म को बचाने का संकल्प लिया है। धर्म संसद का मुख्य उद्देश्य राजनीति से हटकर आज हिन्दू समाज की वास्तविक स्थिति का आकलन करके समाज को जागृत करना था।धर्म संसद की सबसे बड़ी चिंता सम्पूर्ण भारत वर्ष में हिन्दुओ के घटते हुए जनसँख्या अनुपात और सम्पूर्ण राजनीति का इस्लामिक जिहादी आतंकवाद के सामने दयनीय समर्पण रहा।धर्म संसद में शामिल होने वाले सभी हिन्दू धमार्चार्यो और प्रबुद्ध नागरिकों ने सरकारों की कायरतापूर्ण नीतियों के कारण रोज मरते सैनिकों को लेकर बहुत आक्रोश दिखाया।

दो दिन चलने वाली धर्म संसद की शुरूआत 3जून को सुबह 11 बजे एक भव्य आध्यात्मिक योद्धेय कवि सम्मलेन से हुई, जिसमें सरस्वती पुत्रों ने सोये हिन्दुओं को जगाने का काम किया।3 जून को लंच के बाद CyberSipahi द्वारा

हिन्दू मिटता देश

भारतीय सेना के लिये चलाये जा रहे #BloodForIndianArmedForces अभियान के तहत उन युवाओं का सम्मान किया गया जिन्होंने #CyberSipahi के अभियान से जुड़कर भारतीय सेना के जवानों के लिये आर्मी हॉस्पिटल में रक्तदान किया! युवाओं को आशीर्वाद और सम्मान पत्र देने भारतीय सेना और भारत की खुफिया एजेंसी रॉ (R&AW) के पूर्व अधिकारी Col. RSN Singh जी, Col. UB singh जी, और Col. Shailendra जी सहर्ष इस कार्यक्रम में आये और उन्होंने भारतीय सेना के लिये चलाये जा रहे इस अभियान की भरपूर सरहाना करते हुये हर किसी को CyberSipahi से जुड़ने की अपील की। 3 जून के अंतिम सत्र में देश-विदेश से आये युवाओं ने मंच पर विराजमान संत समाज से धर्म को लेकर कई प्रश्न किये और संतों ने युवाओं का मार्गदर्शन करके उन्हें धर्म की सही परिभाषा बतायी, धर्म पर जो संकट है उस संकट से अवगत करवाया, ये संकट क्यों पैदा हुए बताया और इस संकट से कैसे लड़ना है, ये भी समझाया!

दो दिवसीय धर्म संसद के द्वितीय दिवस का सत्र भूमा पीठाधीश्वर स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। धर्म संसद में श्री काशी सुमेरु पीठाधीश्वर **यति सम्राट अनन्त श्री विभूषित पूज्य जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी नरेन्द्रानन्द सरस्वती जी महाराज ने घोषणा की कि सनातन धर्म एवम संस्कृति के संरक्षण एवम संवर्धन के लिए राजनैतिक संसद की तरह सनातन धर्मावलम्बियों की संसद आवश्यक है, जिसमें भारत के प्रत्येक जिले से किसी एक योग्य सन्त को सांसद मनोनीत किया जायेगा।**

धर्म संसद का सत्र वर्ष में कम से कम 3-4 बार निश्चित रूप से आयोजित होगा। धर्म संसद में सनातन धर्म की समस्याओं पर विस्तृत चर्चा होगी, और धर्म संसद में पारित प्रस्ताव को भारत की राजनैतिक संसद को कार्यवाही के लिए भेजा जाएगा। पूज्य जगद्गुरू शंकराचार्य जी महाराज के

घोषणा को धर्म संसद ने स्वागत किया।

इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामी सर्वानन्द सरस्वती जी महाराज ने कहा कि मैं धर्म संसद के लिए 2 अरब रुपए एवमं धर्म संसद भवन उपलब्ध करने की घोषणा करता हूँ।

आज धर्म संसद के द्वितीय दिवस के सत्र की अध्यक्षता कर रहे भूमा पीठाधीश्वर स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ जी महाराज ने धर्म संसद के सभी सांसदों को एक-एक गाड़ी और धर्म संसद के विस्तार के लिए 1 करोड़ रूपया देने की घोषणा की, एवम कहा कि धर्म संसद के कैबिनेट का पूरा स्वरूप तो शीघ्र घोषित किया जायेगा, किन्तु आज की इस धर्म सभा के अध्यक्ष के नाते मैं डासना महाकाली मन्दिर के महन्त स्वामी नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज को प्रस्तावित धर्म संसद के मन्त्रिमण्डल का रक्षामन्त्री मनोनीत किये जाने की घोषणा करता हूँ, जिसका धर्म संसद में उपस्थित सभी सन्तों एवम् सनातन धर्मावलम्बियों ने अनुमोदन किया। धर्म संसद नें 10 करोड़ नव युवकों को देश के विभिन्न मन्दिरों में अस्त्र-शस्त्र का प्रशिक्षण देने का निर्णय लिया है, जिनकी नियुक्ति धर्म संसद के सेना के रूप में की जायेगी।

धर्म सभा को छद्म धमार्चार्य उन्मूलन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी बृज भूषण दास जी महाराज निवार्णी अखाड़ा, महामण्डलेश्वर स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज, महामण्डलेश्वर स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज, गुरू माँ मुनीश्वरी गिरि जी महाराज जूना अखाड़ा, महामण्डलेश्वर स्वामी प्रज्ञा नन्द गिरि जी महाराज आवाहन अखाड़ा, महामण्डलेश्वर अनुभूतानन्द गिरि जी महाराज निरंजनी अखाड़ा, महामण्डलेश्वर स्वामी नवल किशोर दास जी महाराज पंच रामानन्दी निमोर्ही अखाड़ा, स्वामी दीपांकर जी महाराज आनन्द अखाड़ा, स्वामी भौकाल पुरी जी महाराज महानिवार्णी अखाड़ा, स्वामी सत्यानन्द ब्रह्मचारी जी महाराज अग्नि अखाड़ा, स्वामी शिव नारायण गिरि जी महाराज एवम्-स्वामी परमेश्वरानन्द गिरि जी महाराज जूना अखाड़ा, महामण्डलेश्वर स्वामी हरिओम गिरि जी महाराज, महन्त स्वामी सत्यब्रता नन्द सरस्वती जी महाराज जूना अखाड़ा ने भी सम्बोधित किया। धर्म संसद में कई अखाड़ों के महन्त एवम महामण्डलेश्वर उपस्थित थे।

महामंडलेश्वर और शंकराचार्य जी सहित

सभी संतों ने जनता से एक स्वर में अपील की, कि जो हमें धर्म का गलत ज्ञान दें, जो हमारे भगवान को गलत रूप में प्रस्तुत करे, जो 3 घंटे की कथा में 2.5 घंटे तो लोगों को सिर्फ नचाने का काम करे..., ऐसे स्वयंभू कथावाचकों और धर्मगुरुओं से बचकर रहे। धर्म संसद के इस सत्र में यति बाबा नरसिंहानंद सरस्वती जी के संचालन में देश-विदेश से आये साधू-संतों-साध्वियों ने इस्लामिक जिहाद से पैदा हुये खतरे के बारें में अपने विचार रखे और श्रीमद भगवतगीता के सिद्धांतों पर चलते हुए इस संकट से लड़ने का मार्ग दिखाया! देश-विदेश से आये सभी संतों ने पहली बार आयोजित हुई इस धर्म-संसद की भरपूर प्रशंसा की, और एक स्वर में ये भी कहा कि सनातन धर्म की रक्षा हेतु ऐसी धर्म-संसद एक साल में कम से कम 2 बार तो होनी ही चाहिये! डासना देवी के महंत यति बाबा नरसिंहानंद सरस्वती जी महाराज ने उसी क्षण ये घोषणा कर दी कि 31 दिसंबर को हरिद्वार में विराट धर्म-संसद का आयोजन किया जाएगा. जिस समय विश्व अंग्रेजी नव-वर्ष मनायेगा और आतिशबाजी करेगा, उस समय भारत के हिंदू योद्धा आकाश को अपने शस्त्रों की गूँज सुनायेंगे! धर्म संसद का समापन सभागार में मौजूद हर सदस्य का सम्मान करके हुआ। सभी संतों ने अपने हाथों से, धर्म संसद की आयोजन समिति, इस अभूतपूर्व धर्म संसद के आयोजन में सहयोग देने वाले हर व्यक्ति, दूर-दूर से आये हिंदू योद्धाओं सभी को जगदम्बा महाकाली डासना वाली माँ का सम्मान प्रतीक चिन्ह और रुद्राक्ष की माला भेंट की! यति बाबा और मंच पर उपस्थित हर एक संत ने टीम साइबर सिपाही को भरपूर और विशेष प्यार दिया!

धर्म संसद प्रथम दिवस 3 जून 2018 के मुख्य बिंदू

इस्लामिक जिहादी आतंकवाद का सबसे निरीह शिकार भारत की नारी है : यति माँ चेतनानंद सरस्वती

अपने बच्चों के भविष्य को नेताओं के भरोसे न छोड़े हिन्दू माताएं : महामंडलेश्वर साध्वी निलिमानंद जी

आरडीसी स्थित कृष्णा सागर में महामंडलेश्वर साध्वी निलिमानंद जी की अध्यक्षता में 'आतंकवाद का नारी जीवन पर प्रभाव' विषय पर एक गोष्ठी हुई। महामंडलेश्वर साध्वी निलिमानंद जी व अन्य महिलाएं 3 और 4 जून की धर्म संसद में भाग लेने के लिये गाजियाबाद आई हैं।

गोष्ठी स्थल पर प्राचीन देवी मंदिर डासना की महंत यति माँ चेतनानंद सरस्वती जी, साध्वी मुनेश्वर गिरी, अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा (महिला) की अध्यक्ष श्रीमती राजबाला तोमर, धर्मरक्षक वीरांगना सेना की राष्ट्रीय अध्यक्ष ममता आर्य तथा अन्य महिलाओं ने एक प्रेस वार्ता को भी संबोधित किया। प्रेस वार्ता के माध्यम से यति माँ चेतनानंद सरस्वती जी, महामंडलेश्वर साध्वी निलिमानंद जी और साध्वी मुनेश्वर गिरी जी ने सभी हिन्दूओं नारियों से आतंकवाद को अच्छी तरह से समझने के लिये 3 और 4 जून को जगदम्बा महाकाली डासना वाली के परिवार के तत्वावधान में हिंदी भवन में आयोजित होने वाली धर्म संसद में भाग लेने की अपील की।

गोष्ठी को संबोधित करते हुए यति माँ चेतनानंद सरस्वती जी ने कहा की पुरे विश्व में इस्लामिक जिहादी आतंकवाद को नेता अपने अलग अलग तरह से निहित स्वार्थों के कारण बढ़ावा देते हैं। इस पुरे खेल में नारी की कोई भूमिका नही है परंतु इस आतंकवाद की सबसे बड़ी पीड़ित नारी ही है। अगर हम इतिहास का अध्ययन करें तो भारत के राजाओं की आपसी लड़ाई के कारण इस्लामिक आक्रांताओं ने इस देश की महिलाओं की अभूतपूर्व दुर्गति की।अनेक बार हमारी महिलाओं को लाखों की तादात में पकड़कर अरब, अफगानिस्तान, मंगोलिया जैसे देशों में ले जाया गया जहाँ की मंडियों में उन्हें कौड़ियों के भाव से बेचा गया। विदेशी आक्रांताओं के कारण ही भारत में कन्या वध,बाल विवाह,पर्दा प्रथा और रात्रि में विवाह जैसी कुप्रथाएं आई हैं।आज भी पुरे विश्व में इस्लामिक जिहादी मानसिकता का सबसे निरीह शिकार हिन्दू की बेटी है जिसे कभी लव जिहाद के तहत,कभी रेप जिहाद के तहत राजनीति की बलि वेदी पर चढ़ा दिया जाता है पर न्याय नही दिया जाता।

गोष्ठी को संबोधित करते हुए महामंडलेश्वर साध्वी निलिमानंद जी ने कहा की आतंकवाद का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव हर तरह से नारी पर ही पड़ता है। नारी केवल नारी नही होती बल्कि वो माँ,बहन, बेटी और पत्नी भी होती है।यदि परिवार का कोई व्यक्ति आतंकवाद का शिकार होता है तो उससे जुड़ी हुई हर नारी को इसका दारुण दुःख झेलना ही पड़ता है। हिन्दू माताओं को अपने बच्चों के भविष्य को नेताओ के भरोसे नही छोड़ना चाहिये क्योंकि भारत के नेता का कोई दीन ईमान नही है।वो वोट के लिये अपने सगे बेटे को भी बलि का बकरा बना सकते हैं तो दूसरों के बच्चों की तो उनकी नजर में क्या कीमत होगी? भारत में बहुत पहले से विदेशी आक्रांताओं को बहन बेटी देकर मंत्री पद प्राप्त करने की भी परम्परा रही है जिसका शिकार जोधा जैसी विचारवान और तेजस्वी महिला को भी होना पड़ा था। आज भी भारत में ऐसे लोग हैं जो हिन्दू बेटियो को अपनी राजनीति के लिये आतंकवादियों का शिकार बनवा रहे हैं।

धर्मरक्षक वीरांगना सेना की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती ममता आर्य ने कहा की आज जिस तरह से इस्लामिक जिहादी आतंकवाद के कारण रोज हमारे फौजी बेटे मारे जा रहे हैं, ये बहुत दुख का विषय है। ये भारत माता के लाल केवल नेताओ की कायरता के कारण मारे जा रहे हैं। शायद इस देश में महत्वपूर्ण पदों पर बैठे लोग किसी माँ के बेटे, बहन के भाई और किसी छोटी बच्ची के जीवन में पिता के महत्व को नही जानती।भरी जवानी में वैधव्य की चादर ओढ़ लेने के दुःख को समझने का दिल उनके पास नही है।

गोष्ठी में उपस्थित सभी महिलाओं ने भारत सरकार से अविलम्ब आतंकवाद के खिलाफ मजबूत कदम उठाने और निर्दोष लोगों विशेष सैनिकों की रक्षा का अनुरोध किया। गोष्ठी में अखिल भारतीय महिला क्षत्रिय महासभा की अध्यक्ष श्रीमती राजबाला तोमर,रजनी शुक्ला,मीना रानी व रजनी राघव ने भी अपने विचार रखे।

धर्म संसद द्वितीय दिवस 4 जून 2018 के मुख्य बिंदु

सनातन भारत नही बल्कि इस्लामिक भारत बनेगा आतंक का विश्वगुरु : यति नरसिंहानन्द सरस्वती

घटती हुए हिन्दू जनसँख्या अनुपात ने संपूर्ण मानवता को विनाश की ओर धकेला : जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी नरेंद्रानंद सरस्वती जी महाराज

हम सब हिन्दुओं की संतानों की रक्षा व सनातन धर्म की रक्षा के लिए चल रहे पाँच दिवसीय माँ बगलामुखी महायज्ञ की पूणार्हुति के साथ ही आज हिन्दू की भयावह स्थिति पर गम्भीर चिंतन करने के लिये जगदम्बा महाकाली डासना वाली के परिवार के आह्वान पर गाजियाबाद स्थित हिंदी भवन में दो दिवसीय धर्म संसद का शुभारंभ हुआ।धर्म संसद में देश के कोने-कोने से आये संत महात्मा और हिन्दू कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

धर्म संसद का शुभारम्भ उत्तर प्रदेश सरकार के राज्यमंत्री श्री अतुल गर्ग और राज्य सभा सदस्य श्री अनिल अग्रवाल जी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। धर्म संसद के उद्देश्य को सबके सामने रखते हुए अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज ने पूरे देश में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों को सबके सामने रखते हुए बताया की हिन्दुओं के कायर नेताओ के कारण हिन्दू अपने आजादी को सौ साल भी सुरक्षित नही रख सके। लगभग हजार साल के संघर्ष और अनगनित बलिदानों के बाद हमारे पूर्वजों ने हमे आजादी दिलवाई जो हमारे राजनैतिक सिस्टम की विफलता के कारण अब खोने के कगार पर है। झूठे नेताओ के प्रपंच का शिकार होकर हमारे धर्म गुरुओं और सामाजिक कार्यकताओं ने हमे विश्वगुरु बनाने के झूठे सपने दिखाये।

जबकि सत्य तो ये है कि संपूर्ण हिन्दुओ के विनाश के बाद बनने वाला इस्लामिक भारत ही पूरी दुनिया का गुरु होगा और इसके लक्षण अब पूरी तरह से स्पष्ट दिखाई देने लगे हैं।आज पुरे विश्व में आतंकवाद फैलाने वाले सबसे बड़े इस्लामिक मदरसे भारत में हैं और भारत के राजनैतिक तंत्र में इतनी हिम्मत नही है की उनकी ओर देख भी सके। हिन्दू नेताओं की कायरता से सम्पूर्ण भारतवर्ष अब इस्लामिक गुलामी में जाने के लिये तैयार है। आज यह खतरा केवल भारतवर्ष के लिये नहीं है बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिये है। हिन्दू बाहुल्य भारत तो विश्वगुरु नही बन सका परन्तु मुस्लिम भारत वास्तव में इस्लामिक जिहादी आतंकवाद का विश्वगुरु बनेगा और भारत की उर्वरा भूमि और अतुल्य सम्पदा के बूते पर सम्पूर्ण विश्व और मानवता के लिये सबसे बड़ा खतरा बनेगा। धर्म संसद के मुख्य वक्ता जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी नरेंद्रानंद सरस्वती जी महाराज ने कहा की वास्तव में हिन्दू समाज के भारतवर्ष में घटते हुए जनसँख्या अनुपात ने सम्पूर्ण मानवता के सामने एक बहुत बड़ी चुनौती खड़ी कर दी। यदि भारतवर्ष में मुस्लिम जनसँख्या का विस्फोट नहीं थमा तो वो दिन दूर नहीं जब भारतवर्ष गृहयुद्ध में घिर कर अपनी परमाणु शक्ति के बल पर सम्पूर्ण विश्व को विनाश के कगार पर ले जायेगा। भारत सरकार को इसे लेकर अविलम्ब ठोस कदम उठाने चाहिये और चीन जैसा एक कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून बनाना चाहिये।

उन्होंने यह भी कहा की भारतवर्ष के हिन्दुओ ने वर्तमान सरकार को कठोर कानून बनाने के लिये पर्याप्त राजनैतिक शक्ति दे दी है परंतु सरकार की तरफ से कोई सकारात्मक पहल अभी दिखाई नही दे रही है।यदि 2019 के लोकसभा चुनाव से पहले चीन जैसा कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून नही बना तो फिर ये कभी नही बन पाएगा और बढ़ती हुई इस्लामिक जिहादियो की संख्या हर चीज को लील लेगी। धर्म संसद को संबोधित करते हुए रुड़की से आये जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर स्वामी यतींद्रानंद गिरी जी महाराज ने कहा की सम्पूर्ण हिन्दू समाज की आस्था के प्रतीक भगवान राम का अपनी जन्मस्थली में फटे तिरपाल में रहना हिन्दुओ की दुर्दशा को प्रदर्शित करने में सक्षम है। हिन्दुओ के सभी आस्था के केंद्रों पर विधर्मियो का कब्जा है।हिन्दुओ के पास न तो रामजन्म भूमि है,न ही श्रीकृष्ण जन्मभूमि और न ही काशी विश्वनाथ।आज हिन्दुओं को गम्भीरता से सोचना चाहिये की उन्हें आजादी से आखिर मिला क्या?

धर्म संसद के पहले दिन भगवान श्रीकृष्ण की अमर कृति श्रीमद्भागवद गीता के आधार पर विश्व का पहलाआध्यात्मिक वीर रस का कवि सम्मेलन भी आयोजित था जिसमें अमित शर्मा,मुकेश मोलवा, कमल आग्नेय,चेतन नितिन खरे तथा अन्य कवियों ने अपनी उत्कृष्ट रचनाएं प्रस्तुत की।

सायबर सिपाही

शुभम् मंगला
(संस्थापक-साइबर सिपाही)

दुनिया के हर कोने में फैले, हिंदुस्तान जिनके दिलों में बसता है, सनातन धर्म के लिए जिनका खून पसीना बहता है, ऐसे राष्ट्रवादियों और सनातन धर्म रक्षकों की एक अनोखी संस्था का नाम 'सायबर सिपाही' है। सायबर सिपाही के संस्थापक श्री 'शुभम मंगला जी' हैं, जो खुद व्यक्ति मात्र ना होकर अपने आप में एक पूरी की पूरी संस्था हैं, शुभम जी खुद एक बड़े राष्ट्रवादी, ओज के कवि, दूरदर्शी, समाज सुधारक, समाज सेवक और साथ में एक बड़ी कंपनी में उच्च पद पर कार्य करने वाले बेहद प्रतिभावान युवा हैं। बात उस समय की है जब मीडिया कुछ चुनिंदा लोगों की कठपुतली बनकर नाचता था, मुम्बई हमले जैसी आतंकवादी घटनाओं का सीधा प्रसारण दिखाता था, शहीदों के नाम पर जनता की भावनाओं से पैसे कमाने का खेल चलता था, एकतरफा रिपोर्टिंग होती थी **जब भी कोई धार्मिक मुद्दा होता था, इस मीडिया को 'वंदे मातरम' का धर्म तो पता था पर आतंकवाद का धर्म ये मीडिया खोज ही नहीं पाता था, आज भी शायद खोज रहा है।**

बाकी हिंदुस्तानियों के तरह श्री शुभम मंगला जी भी इस परिस्थिति से काफी व्यथित हो चुके थे। परंतु बाकी लोगों से हटकर उन्होंने बदलाव का बिगुल फूंका, और इस कार्य में उनका साथ दिया उन्हीं की तरह के एक दूसरे युवा श्री 'जतिन गोयल' जी ने, जो की 'सायबर सिपाही' के सहसंस्थापक भी हैं।

CyberSipahi ग्रुप से जुड़ने के लिये अपना नाम, नम्बर, शहर और अपना परिचय लिखकर हमें CyberSipahi@gmail.com पर ईमेल भेजिये।

ये दोनों राष्ट्रवादी युवा सन 2007 से ही साथ कार्य कर रहे थे। सन 2013 में शुभम जी ने विभिन्न व्हाटसअप ग्रुप के द्वारा लोगों में जागरूकता फैलाना शुरू किया और इस बिकाऊ मीडिया के खिलाफ सोशल मीडिया के माध्यम से जंग का आगाज किया। शुभम् जी ने अनजाने-अनदेखे-अजनबी लोगों की एक फौज (व्हाट्सएप्प ग्रुप) तैयार की। फिर उसी व्हाटसअप के ग्रुप के कुछ सक्रिय लोगों के साथ 19 अप्रैल 2015 में दिल्ली में एक बेहद सफल सेमिनार आयोजित की गई, जिसमें ये तय हुआ कि मीडिया के इस रवैये के खिलाफ और ज्यादा से ज्यादा लोगों को हमें जोड़ना चाहिए।

इसी के अगले चरण के तौर पर 5 जून 2015 को 'सायबर सिपाही' एक रजिस्टर्ड संगठन के तौर पर देश के सामने आया।

आधिकारिक रूप से एक संगठन के तौर पर 'साइबर सिपाही' के उदय के बाद हमने कई सारे खुलासे किये, कई सारे ऑपरेशन्स को सफलता पूर्वक अंजाम दिया और हिंदुस्तान की लगभग बिक चुकी मीडिया को आईना दिखाया। जिसके सबूत के तौर पर कोई भी 'साइबर सिपाही' के फेसबुक पेज और यूट्यूब चैनल पर जाकर वीडियो और फोटो देख सकता है।

बड़े- बड़े मीडिया चैनल और अखबारों को उनके बहुत सारे, देश-विरोधी और धर्म विरोधी कार्यो के लिए माफी माँगने पर हमने मजबूर किया। दो सालों की इन्हीं सब हमारी कोशिशों की वजह से हमें 'देश का सबसे विश्वसनीय सोशल मीडिया ग्रुप' का सम्मान 'इंटरनेशनल ब्रांड कंसल्टिंग कॉर्पोरेशन', अमेरिका द्वारा मिला। देश और दुनिया भर से लोग हमसे जुड़ते गए, जो आज भी अनवरत जारी है। आज साइबर सिपाही 4 लाख से ज्यादा लोगों का परिवार है। पठानकोट हमले के बाद, 8 जनवरी 2016 को हमने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी से एक अपील की थी कि, एक बैंक खाता देश के शहीदों के लिए खोला जाना चाहिए जिसमें हिंदुस्तान के आम नागरिकों को भी मौका मिले कि वो अपनी तरफ से उन शहीदों के परिवार की मदद कर सकें, हमारी इस अपील को सफलता तब मिली जब भारतीय सेना के लिये सिंडिकेट बैंक में इसी उद्देश्य से एक खाता खोला गया। आज भी भारत की तीनों सेनाओं के लिए हमारी एक मुहिम अनवरत चलती रहती है, जिसका नाम है "Blood for Indian Armed Forces"

> अब हमारा एक और सपना है, हम चाहते हैं कि जैसे देश के युवा ने राजनीति में रुचि ली और 30 वर्षों बाद 2014 में देश को पूर्ण बहुमत वाली स्थायी सरकार दी, अब देश का युवा धर्म में रुचि ले और धर्म में व्याप्त ढोंगियों, धर्म के व्यापारियों और भगवा भेष में छिपे उन विधर्मियों से सनातन धर्म को मुक्त कराये, जिन्होंने लोगों को धर्म का सही ज्ञान ही नहीं दिया।

सायबर सिपाही की इस मुहिम को भारतीय सेना और भारत की खुफिया एजेंसी रॉ (R&AW) के बड़े-बड़े अधिकारियों ने कई मौकों पर सराहा है। इस मुहिम के अंतर्गत साइबर सिपाही दिल्ली के RR अस्पताल जो कि सेना का अस्पताल है, वहाँ सेना के किसी भी जवान या उनके परिजनों को खून की आवश्यकता पड़ती है तो साइबर सिपाही से वो जवान या उनका परिवार सीधे संपर्क कर सकता है। जैसे ही हमें केस के बारे में पता चलता है साइबर सिपाही की "Blood for Indian Armed Forces" टीम तुरंत इस कार्य में लग जाती है, ईश्वर का ऐसी कृपा हमपर है कि अब तक हमारे पास आये हर केस को हमने पूरा किया है।

शुभम् जी ने सोशल मीडिया को हथियार बनाकर अनदेखे-अजनबी लोगों की एक ऐसी फौज खड़ी कर दी है कि किसी को नहीं लगता हम सब कभी अजनबी भी थे। शुभम जी का एक ही कथन है जो हर सायबर सिपाही का मूल मंत्र है- 'सोशल मीडिया एक शक्तिशाली बम है, भगत सिंह बनना है या बगदादी ये हमारे ऊपर है'।

शुभम जी ने सायबर सिपाही के गठन से पहले स्वयं अकेले भगत सिंह जी की तरह कई धमाके किये हैं, जैसे आतंकी हमलों का लाइव टेलीकास्ट पर प्रतिबंध, आतंकी हमले में मरे लोगों की लाशों पर व्यापार करने वाले देश के बहुत बड़े टीवी चैनल से पैसे वापस निकलवाना, प्रभु श्री राम और माता सीता का अपमान करने वाले टीवी चैनल को 24घण्टे में सबक सिखाना आदि.. इनकी विस्तृत जानकारी हमारे YouTube पर उपलब्ध है।

साइबर सिपाही जब से अस्तित्व में आया है हमेशा से ही देश के दुश्मनों और जयचंदों का खुलकर सामना किया है। हिंदू विरोधी मीडिया के गालों पर जमकर तमाचे भी जड़े हैं। अब हमारा एक और सपना है, हम चाहते हैं कि जैसे देश के युवा ने राजनीति में रुचि ली और 30 वर्षों बाद 2014 में देश को पूर्ण बहुमत वाली स्थायी सरकार दी, अब देश का युवा धर्म में रुचि ले और धर्म में व्याप्त ढोंगियों, धर्म के व्यापारियों और भगवा भेष में छिपे उन विधर्मियों से सनातन धर्म को मुक्त कराये, जिन्होंने लोगों को धर्म का सही ज्ञान ही नहीं दिया। **ऐसे कथावाचकों का पूर्ण बहिष्कार हो जिन्होंने विश्व के सबसे बड़े योद्धा भगवान श्री कृष्ण के सुदर्शन चक्र को तो लोगों से छिपाया और बस मुरली मनोहर वाला रूप दिखाकर पूरे हिंदू समुदाय को यौद्धेय प्रवृति से दूर कर दिया।** बहिष्कार हो सुखविंदर कौर जैसी नचनिया का, जो भगवे को बदनाम करती है। बहिष्कार हो ओम बाबा नाम धरे उस पाखंडी का, बहिष्कार हो उन बाबाओं के जो हरी चटनी से कृपा लाते हैं। आज समय की मांग है की युवाओं को धर्म में रुचि लेनी होगी। पाखंडियों के विनाश के लिए लड़ाई खुद अपने-अपने स्तर पर लड़नी होगी। इस कार्य के लिए भी 'साइबर सिपाही' शंखनाद कर चुका है। **हिन्दुओं में यौद्धेय प्रवृति जगाने, सनातन धर्म के मूल को जानने के लिए हम समय-समय पर विभिन्न आयोजनों में सहभागी के तौर पर हिस्सा भी लेते हैं और लोगों को मंच भी प्रदान करते हैं।** हिंदू धर्म में आये प्रदूषण को खत्म करने के लिये शुभम जी ने प्रण लिया है और ईश्वर के आशीर्वाद से इस पावन-पुनीत कार्य में हमें दिशा देने और सही-गलत का अंतर बताने का कार्य एक मात्र जीवित हिंदू योद्धा संत, महंत श्री डासना देवी मंदिर, पूज्य यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज कर रहे हैं। 4 लाख सायबर सिपाहियों के परिवार को शुभम जी और यति बाबा जैसे योद्धाओं का आशीर्वाद और मार्गदर्शन मिलता रहे, तो वो दिन दूर नहीं जब हर हिंदू का स्वाभिमान जाग उठेगा और हर हिंदू अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ने के लिये, मरने के लिये तैयार रहेगा! जगदम्बा महाकाली डासना वाली के चरणों में कामना करते हैं कि हिंदू धर्म पुनः अपने वैभव को प्राप्त करे!

(आशीष कसौधन)

शक्ति साधना

शंकर शरण

कश्मीर के विस्थापित डॉक्टर कवि कुन्दनलाल चौधरी ने अपने कविता संग्रह 'ऑफ गॉड, मेन एंड मिलिटेंट्स' की भूमिका में प्रश्न रखा था: 'क्या हमारे देवताओं ने हमें निराश किया या हम ने अपने देवताओं को?' इसे उन्होंने कश्मीरी पंडितों में चल रहे मंथन के रूप में रखा था। सच पूछें, तो यह प्रश्न संपूर्ण भारत के लिए है। इस का एक ही उत्तर है कि हम ने देवताओं को निराश किया। **उन्होंने तो हरेक देवी-देवता को, यहाँ तक कि विद्या की देवी सरस्वती को भी शस्त्र-सज्जित रखा था। और हमने शक्ति की देवी को भी मिट्टी की मूरत में बदल कर रख दिया। चीख-चीख कर रतजगा करना शेराँ वाली देवी की पूजा नहीं। पूजा है किसी संकल्प के साथ शक्ति-आराधन करना। सम्मान से जीने के लिए मृत्यु का वरण करने के लिए भी तत्पर होना। किसी तरह तरह चमड़ी बचाकर नहीं, बल्कि दुष्टता की आँखों में आँखें डालकर जीने की रीति बनाना। यही वह शक्ति-पूजा है जिसे भारत के लोग लंबे समय से विस्मृत कर चुके हैं।**

श्रीअरविंद ने अपनी रचना भवानी मंदिर (1905) में क्लासिक स्पष्टता से यह कहा था। उनकी बात हमारे लिए नित्य-स्मरणीय है: 'हमने शक्ति को छोड़ दिया है और इसलिए शक्ति ने भी हमें छोड़ दिया है। ....कितने प्रयास किए जा चुके हैं। कितने धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक आंदोलन शुरू किए जा चुके हैं। लेकिन सबका एक ही परिणाम रहा या होने को है। थोड़ी देर के लिए वे चमक उठते हैं, फिर प्रेरणा मंद पड़ जाती है, आग बुझ जाती है और अगर वे बचे भी रहें तो खाली सीपियों या छिलकों के रूप में रहते हैं, जिन में से ब्रह्म निकल गया है।'

शक्ति की कमी के कारण ही हमें विदेशियों की पराधीनता में रहना पड़ा था। अंग्रेजों ने सन् 1857 के अनुभव के बाद सचेत रूप से भारत को निरस्त्र किया। गहराई से अध्ययन करके वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे, कि इसके बिना उनका शासन असुरक्षित रहेगा। तब भारतीयों को निःशस्त्र करने वाला 'आर्म्स एक्ट' (1878) बनाया। गाँधीजी ने अपनी पुस्तक 'हिन्द स्वराज' में गलत बात लिखी कि अंग्रेजों ने हमें हथियार बल से गुलाम नहीं बना रखा है। वास्तविकता अंग्रेज जानते थे। कांग्रेस भी जानती थी। इसीलिए वह सालाना अपने अधिवेशनों में उस एक्ट को हटाने की माँग रखती थी। कांग्रेस ने सन-1930 के ऐतिहासिक लाहौर अधिवेशन में भी प्रस्ताव पास करके कहा था कि अंग्रेजों ने 'हमें निःशस्त्र करके हमें नपुंसक बनाया है।' मगर इसी कांग्रेस ने सत्ता पाने के बाद देश को उसी नपुंसकता में रहने दिया! **यदि स्वतंत्र होते ही अंग्रेजों का थोपा हुआ आर्म्स एक्ट खत्म कर दिया गया होता, तो भारत का इतिहास कुछ और होता। हर सभ्यता में आत्मरक्षा के लिए अस्त्र-शस्त्र रखना प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार रहा है। इसे यहाँ अंग्रेजों ने अपना राज बचाने को प्रतिबंधित किया, और कांग्रेस के शब्दों में हमें 'नपुंसक' बनाया! हम सामूहिक रूप में निर्बल, आत्मसम्मान विहीन हो गए। पीढ़ियों से ऐसे रहते अब यह हमारी नियति बन गयी है।**

आज हर हिन्दू को घर और स्कूल, सब जगह यही सीख मिलती है। कि पढ़ो-लिखो, लड़ाई-झगड़े न करो। यदि कोई झगड़ा हो रहा हो, तो आँखें फेर लो। किसी दुर्बल बच्चे को कोई उद्दंड सताता हो, तो बीच में न पड़ो। तुम्हें भी कोई अपमानित करे, तो चुप रहो। क्योंकि तुम अच्छे बच्चे हो, जिसे पढ़-लिख कर डॉक्टर, इंजीनियर या व्यवसायी बनना है। इसलिए बदमाश लड़कों से मत उलझना। समय नष्ट होगा। इस प्रकार, किताबी जानकारी और सामाजिक कायरता का पाठ बचपन से ही सिखाया जाता है। **बच्चे दुर्गा-पूजा करके भी नहीं करते! उन्हें कभी नहीं बताया जाता कि दैवी अवतारों तक को अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा लेनी पड़ती थी। क्योंकि दुष्टों से रक्षा के लिए शक्ति-संधान अनिवार्य मानवीय स्थिति है। अपरिहार्य कर्तव्य है।**

वर्तमान भारत में हिन्दू बच्चों को वास्तविक शक्ति-पूजा से प्लेग की तरह बचा कर रखा जाता है! फिर क्या होता है, यह पंजाब, बंगाल और कश्मीर के हश्र से देख सकते हैं। सत्तर साल पहले इन प्रदेशों में विद्वता, वकालत, अफसरी, बैंकिंग, पत्रकारिता, डॉक्टरी, इंजीनियरी, आदि तमाम सम्मानित पदों पर प्रायः हिन्दू ही आसीन थे। फिर एक दिन आया जब कुछ बदमाश बच्चों ने इन्हें सामूहिक रूप से मार, लताड़ और कान पकड़ कर बाहर भगा दिया। अन्य अत्याचारों की कथा इतनी लज्जाजनक है कि हिन्दुओं से भरा हुआ मीडिया उसे प्रकाशित करने में भी अच्छे बच्चों सा व्यवहार करता है। या गाँधीजी का बंदर बन जाता है।

तब अपने ही देश में अपमानित, बलात्कृत, विस्थापित, एकाकी हिन्दू को समझ नहीं आता कि कहाँ गड़बड़ी हुई? उस ने तो किसी का बुरा नहीं चाहा। उसने तो गाँधी की सीख मानकर दुष्टों, पापियों के प्रति भी प्रेम दिखाया। कुछ विशेष प्रकार के दगाबाजों, हत्यारों को भी 'भाई' समझा, जैसे गाँधीजी करते थे। तब क्या हुआ, कि उसे न दुनिया के मंच पर न्याय मिलता है, न अपने देश में?

उलटे, दुष्ट दंबग बच्चे ही अदबो-इज्जत पाते हैं। प्रश्न मन में उठता है, किन्तु अच्छे बच्चे की तरह वह इस प्रश्न को भी खुल कर सामने नहीं रखता। उसे आभास है कि इससे बिगड़ैल बच्चे नाराज हो सकते हैं। कि ऐसा सवाल ही क्यों रखा? तब वह मन ही मन प्रार्थना करता हुआ किसी अवतार की प्रतीक्षा करने लगता है।

हिन्दू मन की यह पूरी प्रक्रिया बिगड़ैल बच्चे जानते हैं। यशपाल की एक कहानी हैः फूलो का कुर्ता। फूलो पाँच वर्ष की एक अबोध बालिका है। उसके शरीर पर एक मात्र वस्त्र उसकी फ्रॉक है। किसी प्रसंग में लज्जा बचाने के लिए वह वही फ्रॉक उठाकर अपनी आँख ढँक लेती है। कहना चाहिए कि दुनिया के सामने भारत अपनी लज्जा उसी बालिका समान ढँकता है, **जब वह खूँखार आतंकवादियों को पकड़ के भी सजा नहीं दे पाता। बल्कि उन्हें आदर पूर्वक घर पहुँचा आता है! जब वह पड़ोसी बिगड़ैल देशों के हाथों निरंतर अपमानित होता है, और उन्हीं के नेताओं के सामने भारतीय कर्णधार हँसते फोटो खिंचाते हैं। इस तरह 'ऑल इज वेल' की भंगिमा अपना कर लज्जा छिपाते हैं।** स्वयं देश के अंदर पूरी हिन्दू जनता वही क्रम दुहराती है, जब कश्मीरी मुसलमान ठसक से हिंन्दुओं को मार भगाते हैं, और उलटे नई दिल्ली पर शिकायत पर शिकायत ठोकते हैं। फिर भारत से ही से अरबों रूपए सालाना फीस वसूल कर दुनिया को यह बताते हैं कि वे भारत से अलग और ऊँची चीज हैं। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर 'आजाद कश्मीर' है, यह बयान श्रीनगर की गद्दी पर बैठे कश्मीरी मुसलमान देते है! दूसरे प्रदेशों में भी कई मुस्लिम नेता खुले आम संविधान को अँगूठा दिखाते हैं, उग्रवादियों, दंगाइयों की सामाजिक, कानूनी मदद करते हैं। जिस किसी को मार डालने के आह्वान करते हैं। जब चाहे विदेशी मुद्दों पर उपद्रव करते हैं, पड़ोसी हिन्दुओं को सताते-मारते हैं। फिर भी हर दल के हिन्दू नेता उनकी चौखट पर नाक रगड़ते नजर आते हैं। **वे हर हिन्दू नेता को इस्लामी टोपी पहनने को विवश करते हैं, मगर क्या मजाल कभी खुद भी रामनामी ओढ़ लें! उनके रोजे इफ्तार में हर हिन्दू नेता की हाजिरी जरूरी है, मगर वही मुस्लिम रहनुमा कभी होली, दीवाली मनाते नहीं देखे जा सकते। यह एकतरफा सदभावना और एकतरफा सेक्यूलरिज्म भी बालिका फूलो की तरह हिन्दू भारत की लज्जा छिपाती है।**

यह पूरी स्थिति देश के अंदर और बाहर वाले बिगड़ैल बखूबी जानते हैं। जबकि अच्छा बच्चा समझता है कि उसने चुप रहकर, या मीठी बातें दुहराकर, एवं उद्योग, व्यापार, कम्प्यूटर और सिनेमा में पदक हासिल कर दुनिया के सामने अपनी लज्जा बचा ली है। उसे लगता है किसी ने नहीं देखा कि वह अपने ही परिवार, अपने ही स्वधर्मी देशवासी को गुंडों, उग्रवादियों के हाथों अपमानित, उत्पीड़ित होने से नहीं बचा पाता। सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों रूपों में। अपनी मातृभूमि का अतिक्रमण नहीं रोक पाता। उसकी सारी कार्यकुशलता और अच्छा बच्चापन इस दुःसह वेदना का उपाय नहीं जानता। यह लज्जा छिपती नहीं, बल्कि और उजागर होती है, जब सेक्यूलर बच्चे मौन रखकर हर बात आयी-गयी करने की दयनीय कोशिश करते हैं। डॉ. भीमराव अंबेदकर की ऐतिहासिक पुस्तक 'पाकिस्तान या भारत का विभाजन' (1940) में अच्छे और बिगड़ैल बच्चे, दोनों की संपूर्ण मनःस्थिति और परस्पर नीति अच्छी तरह प्रकाशित है।

मगर अच्छे बच्चे ऐसी पुस्तकों से भी बचते हैं। **वे केवल गाँधी की मनोहर पोथी 'हिन्द स्वराज' पढ़ते हैं, जिसमें लिखा है कि आत्मबल तोपबल से भी बड़ी चीज है। इसलिए वे हर कट्टे और तमंचे के सामने कोई मंत्र पढ़ते हुए आत्मबल दिखाने लगते हैं। फिर कोई सुफल न पाकर कलियुग को रोते हैं। स्वयं को कभी दोष नहीं देते, कि अच्छे बच्चे की उन की समझ ही गलत है। कि उन्होंने अच्छे बच्चे को दब्बू बच्चे का पर्याय बना दिया, जिस से बिगड़ैल और शह पाते हैं। कि यह प्रकिया सवा सौ साल से अहर्निश चल रही है। शक्ति-पूजा भुलाई जा चुकी है। यही अनेक समस्याओं की जड़ है।**

आज नहीं कल, यह शिक्षा लेनी पड़ेगी कि अच्छे बच्चे को बलवान और चरित्रवान भी होना चाहिए। कि **आत्मरक्षा के लिए परमुखापेक्षी होना गलत है। मामूली धौंस-पट्टी या बदमाशों तक से निपटने हेतु सदैव पुलिस प्रशासन के भरोसे रहना न व्यवहारिक, न सम्मानजनक, न शास्त्रीय परंपरा है। अपमानित जीना मरने से बदतर है। दुष्टता सहना या आँखें चुराना दुष्टता को खुला प्रोत्साहन है।** रामायण और महाभारत ही नहीं, यूरोपीय चिंतन में भी यही सीख है। हाल तक यूरोप में द्वंद्व-युद्ध की परंपरा थी। इसमें किसी से अपमानित होने पर हर व्यक्ति से आशा की जाती थी कि वह उसे द्वंद्व की चुनौती देगा। चाहे उसमें उसकी मृत्यु ही क्यों न हो जाए। इसलिए, कहने को प्रत्येक शरद ऋतु में करोड़ों हिन्दू दुर्गा-पूजा मनाते है। इसे शक्ति-पूजन भी कहते हैं। किन्तु यह वह शक्ति-पूजा नहीं, जो स्वयं भगवान राम को राक्षसों पर विजय पाने के लिए आवश्यक प्रतीत हुई थी। जिसे कवि निराला ने अपनी अदभुत रचना 'राम की शक्तिपूजा' में पूर्णतः जीवन्त कर दिया है। आइए, उसे एक बार ध्यान से हृदयंगम करें!

साभारः दैनिक जागरण

इतिहास के पन्नों से सबक ले राष्ट्रवादी

मुंशी प्रेमचंद की कहानी जिहाद सामने लाती है हिंदुओं का दर्द

इस कहानी में मुंशी जी ने बहुत कम शब्दों में ही बहुत कुछ बता दिया है।

बहुत पुरानी बात है। हिंदुओं का एक काफिला अपने धर्म की रक्षा के लिए पश्चिमोत्तर के पर्वत-प्रदेश से भागा चला आ रहा था।

मुद्दतों से उस प्रांत में हिंदू और मुसलमान साथ-साथ रहते चले आये थे। धार्मिक द्वेष का नाम न था। पठानों के जिरगे हमेशा लड़ते रहते थे। उनकी तलवारों पर कभी जंग न लगने पाता था। बात-बात पर उनके दल संगठित हो जाते थे। शासन की कोई व्यवस्था न थी। हर एक जिरगे और कबीले की व्यवस्था अलग थी। आपस के झगड़ों को निपटाने का भी तलवार के सिवा और कोई साधन न था। जान का बदला जान था, खून का बदला खून; इस नियम में कोई अपवाद न था। यही उनका धर्म था, यही ईमान; मगर उस भीषण रक्तपात में भी हिंदू परिवार शांति से जीवन व्यतीत करते थे।

पर एक महीने से देश की हालत बदल गयी है। एक मुल्ला ने न जाने कहाँ से आ कर अनपढ़ धर्मशून्य पठानों में धर्म का भाव जागृत कर दिया है। उसकी वाणी में कोई ऐसी मोहिनी है कि बूढ़े, जवान, स्त्री-पुरुष खिंचे चले आते हैं।

वह शेरों की तरह गरज कर कहता है-खुदा ने तुम्हें इसलिए पैदा किया है कि दुनिया को इस्लाम की रोशनी से रोशन कर दो, दुनिया से कुफ्र का निशान मिटा दो। एक काफिर के दिल को इस्लाम के उजाले से रोशनी कर देने का सवाब सारी उम्र के रोजे, नमाज और जकात से कहीं ज्यादा है। जन्नत की हूरें तुम्हारी बलाएँ लेंगी और फरिश्ते तुम्हारे कदमों की खाक माथे पर मलेंगे, खुदा तुम्हारी पेशानी पर बोसे देगा।

और सारी जनता यह आवाज सुन कर मजहब के नारों से मतवाली हो जाती है। उसी धार्मिक उत्तेजना ने कुफ्र और इस्लाम का भेद उत्पन्न कर दिया है। प्रत्येक पठान जन्नत का सुख भोगने के लिए अधीर हो उठा है। उन्हीं हिंदुओं पर जो सदियों से शांति के साथ रहते थे, हमले होने लगे हैं। कहीं उनके मंदिर ढाये जाते हैं, कहीं उनके देवताओं को गालियाँ दी जाती हैं। कहीं उन्हें जबरदस्ती इस्लाम की दीक्षा दी जाती है। हिंदू संख्या में कम हैं, असंगठित हैं; बिखरे हुए हैं, इस नयी परिस्थिति के लिए बिलकुल तैयार नहीं। उनके हाथ-पाँव फूले हुए हैं, कितने ही तो अपनी जमा-जथा छोड़ कर भाग खड़े हुए हैं, कुछ इस आँधी के शांत हो जाने

का अवसर देख रहे हैं। यह काफिला भी उन्हीं भागनेवालों में था।

दोपहर का समय था। आसमान से आग बरस रही थी। पहाड़ों से ज्वाला-सी निकल रही थी। वृक्ष का कहीं नाम न था। ये लोग राज-पथ से हटे हुए, पेचीदा औघट रास्तों से चले आ रहे थे। पग-पग पर पकड़ लिये जाने का खटका लगा हुआ था। यहाँ तक कि भूख, प्यास और ताप से विकल होकर अंत को लोग एक उभरी हुई शिला की छाँह में विश्राम करने लगे। सहसा कुछ दूर पर एक कुआँ नजर आया। वहीं डेरे डाल दिये। भय लगा हुआ था कि जिहादियों का कोई दल पीछे से न आ रहा हो।

दो युवकों ने बंदूक भर कर कंधे पर रखीं और चारों तरफ गश्त करने लगे। बूढ़े कम्बल बिछा कर कमर सीधी करने लगे। स्त्रियाँ बालकों को गोद से उतार कर माथे का पसीना पोंछने और बिखरे हुए केशों को सँभालने लगीं। सभी के चेहरे मुरझाये हुए थे। सभी चिंता और भय से त्रास्त हो रहे थे, यहाँ तक कि बच्चे भी जोर से न रोते थे।

दोनों युवकों में एक लम्बा, गठीला रूपवान है। उसकी आँखों से अभिमान की रेखाएँ-सी निकल रही हैं, मानो वह अपने सामने किसी की हकीकत नहीं समझता, मानो उसकी एक-एक गत पर आकाश के देवता जयघोष कर रहे हैं। दूसरा कद का दुबला-पतला, रूपहीन-सा आदमी है, जिसके चेहरे से दीनता झलक रही है, मानो उसके लिए संसार में कोई आशा नहीं, मानो वह दीपक की भाँति रो-रो कर जीवन व्यतीत करने ही के लिए बनाया गया है। उसका नाम धर्मदास है; इसका खजाँचन्द।

धर्मदास ने बंदूक को जमीन पर टिका कर एक चट्टान पर बैठते हुए कहा-तुमने अपने लिए क्या सोचा? कोई लाख-सवा लाख की सम्पत्ति रही होगी तुम्हारी ?

खजाँचंद ने उदासीन भाव से उत्तर दिया-लाख-सवा लाख की तो नहीं,

हाँ, पचास-साठ हजार तो नकद ही थे।

'तो अब क्या करोगे?'

'जो कुछ सिर पर आयेगा, झेलूँगा ! रावलपिंडी में दो-चार सम्बन्धी हैं, शायद कुछ मदद करें।

तुमने क्या सोचा है?'

'मुझे क्या गम ! अपने दोनों हाथ अपने साथ हैं। वहाँ इन्हीं का सहारा था, आगे भी इन्हीं का सहारा है।'

'आज और कुशल से बीत जाये तो फिर कोई भय नहीं'

'मैं तो मना रहा हूँ कि एकाध शिकार मिल जाय। एक दरजन भी आ जायँ तो भून कर रख दूँ।'

इतने में चट्टानों के नीचे से एक युवती हाथ में लोटा-डोर लिये निकली और सामने कुएँ की ओर चली। प्रभात की सुनहरी, मधुर, अरुणिमा मूर्तिमान हो गयी थी।

धर्मदास पानी लेकर लौट ही रहा था कि उसे पश्चिम की ओर से कई आदमी घोड़ों पर सवार आते दिखायी दिये। जरा और समीप आने पर मालूम हुआ कि कुल पाँच आदमी हैं। उनकी बंदूक की नलियाँ धूप में साफ चमक रही थीं। धर्मदास पानी लिये हुए दौड़ा कि कहीं रास्ते ही में सवार उसे न पकड़ लें लेकिन कंधे पर बंदूक और एक हाथ में लोटा-डोर लिये वह बहुत तेज न दौड़ सकता था। फासला दो सौ गज से कम न था। रास्ते में पत्थरों के ढेर टूटे-फूटे पड़े हुए थे। भय होता था कि कहीं ठोकर न लग जाय, कहीं पैर न फिसल जायँ। इधर सवार प्रतिक्षण समीप होते जाते थे। अरबी घोड़ों से उसका मुकाबला ही क्या, उस पर मंजिलों का धावा हुआ। मुश्किल से पचास कदम गया होगा कि सवार उसके सिर पर आ पहुँचे और तुरंत उसे घेर लिया। धर्मदास बड़ा साहसी था; पर मृत्यु को सामने खड़ी देख कर उसकी आँखों में अँधेरा छा गया, उसके हाथ से बंदूक छूट कर गिर पड़ी। पाँचों उसी के गाँव के महसूदी पठान थे। एक पठान ने कहा-उड़ा दो सिर मरदूद का। दगाबाज काफिर।

दूसरा-नहीं नहीं, ठहरो, अगर यह इस वक्त भी इस्लाम कबूल कर ले, तो हम इसे मुआफ कर सकते हैं। क्यों धर्मदास, तुम्हें इस दगा की क्या सजा दी जाय ? हमने तुम्हें रात-भर का वक्त फैसला करने के लिए दिया था। मगर तुम इसी वक्त जहन्नुम पहुँचा दिये जाओ; लेकिन हम तुम्हें फिर मौका देते हैं। यह आखिरी मौका है। अगर तुमने अब भी इस्लाम न कबूल किया, तो तुम्हें दिन की रोशनी देखनी नसीब न होगी।

धर्मदास ने हिचकिचाते हुए कहा-जिस बात को अक्ल नहीं मानती, उसे कैसे ...

पहले सवार ने आवेश में आकर कहा-मजहब को अक्ल से कोई वास्ता नहीं।

तीसरा-कुफ्र है ! कुफ्र है !

पहला- उड़ा दो सिर मरदूद का, धुआँ इस पार।

दूसरा-ठहरो-ठहरो, मार डालना मुश्किल नहीं, जिला लेना मुश्किल है। तुम्हारे और साथी कहाँ हैं धर्मदास ?

धर्मदास-सब मेरे साथ ही हैं।

दूसरा-कलामे शरीफ की कसम; अगर तुम सब खुदा और उनके रसूल पर ईमान लाओ, तो कोई तुम्हें तेज निगाहों से देख भी न सकेगा।

धर्मदास-आप लोग सोचने के लिए और कुछ मौका न देंगे।

इस पर चारों सवार चिल्ला उठे-नहीं, नहीं, हम तुम्हें न जाने देंगे, यह आखिरी मौका है।

इतना कहते ही पहले सवार ने बंदूक छतिया ली और नली धर्मदास की छाती की ओर करके बोला-बस बोलो, क्या मंजूर है ?

धर्मदास सिर से पैर तक काँप कर बोला-अगर मैं इस्लाम कबूल कर लूँ तो मेरे साथियों को तो कोई तकलीफ न दी जायेगी ?

दूसरा-हाँ, अगर तुम जमानत करो कि वे भी इस्लाम कबूल कर लेंगे।

पहला-हम इस शर्त को नहीं मानते। तुम्हारे साथियों से हम खुद निपट लेंगे। तुम अपनी कहो। क्या चाहते हो ? हाँ या नहीं ?

धर्मदास ने जहर का घूँट पी कर कहा-मैं खुदा पर ईमान लाता हूँ।

पाँचों ने एक स्वर से कहा-अलहमद व लिल्लाह ! और बारी-बारी से धर्मदास को गले लगाया।

श्यामा हृदय को दोनों हाथों से थामे यह दृश्य देख रही थी। वह मन में पछता रही थी कि मैंने क्यों इन्हें पानी लाने भेजा ? अगर मालूम होता कि विधि यों धोखा देगा, तो मैं प्यासों मर जाती, पर इन्हें न जाने देती। श्यामा से कुछ दूर खजाँचंद भी खड़ा था। श्यामा ने उसकी ओर क्षुब्ध नेत्रों से देख कर कहा- अब इनकी जान बचती नहीं मालूम होती।

खजाँचंद-बंदूक भी हाथ से छूट पड़ी है।

श्यामा-न जाने क्या बातें हो रही हैं। अरे गजब ! दुष्ट ने उनकी ओर बंदूक तानी है !

खजाँ.-जरा और समीप आ जायँ, तो मैं बंदूक चलाऊँ। इतनी दूर की मार इसमें नहीं है।

श्यामा-अरे ! देखो, वे सब धर्मदास को गले

लगा रहे हैं। यह माजरा क्या है ?

खजाँ.-कुछ समझ में नहीं आता।

श्यामा-कहीं इसने कलमा तो नहीं पढ़ लिया ?

खजाँ.-नहीं, ऐसा क्या होगा, धर्मदास से मुझे ऐसी आशा नहीं है।

श्यामा-मैं समझ गयी। ठीक यही बात है। बंदूक चलाओ।

खजाँ.-धर्मदास बीच में हैं। कहीं उन्हें न लग जाय।

श्यामा-कोई हर्ज नहीं। मैं चाहती हूँ, पहला निशाना धर्मदास ही पर पड़े। कायर ! निर्लज्ज ! प्राणों के लिए धर्म त्याग किया। ऐसी बेहयाई की जिंदगी से मर जाना कहीं अच्छा है। क्या सोचते हो। क्या तुम्हारे भी हाथ-पाँव फूल गये। लाओ, बंदूक मुझे दे दो। मैं इस कायर को अपने हाथों से मारूँगी।

खजाँ.-मुझे तो विश्वास नहीं होता कि धर्मदास....

श्यामा-तुम्हें कभी विश्वास न आयेगा। लाओ, बंदूक मुझे दो। खडे.क्या ताकते हो ? क्या जब वे सिर पर आ जायँगे, तब बंदूक चलाओ ? क्या तुम्हें भी यह मंजूर है कि मुसलमान हो कर जान बचाओ ? अच्छी बात है, जाओ। श्यामा अपनी रक्षा आप कर सकती है; मगर उसे अब मुँह न दिखाना।

खजाँचंद ने बंदूक चलायी। एक सवार की पगड़ी को उड़ाती हुई निकल गयी। जिहादियों ने 'अल्लाहो अकबर !' की हाँक लगायी। दूसरी गोली चली और घोड़े की छाती पर बैठी। घोड़ा वहीं गिर पड़ा। जिहादियों ने फिर 'अल्लाहो अकबर !' की सदा लगायी और आगे बढ़े। तीसरी गोली आयी। एक पठान लोट गया; पर इसके पहले कि चौथी गोली छूटे, पठान खजाँचंद के सिर पर पहुँच गये और बंदूक उसके हाथ से छीन ली।

एक सवार ने खजाँचंद की ओर बंदूक तान कर कहा-उड़ा दूँ सिर मरदूद का, इससे खून का बदला लेना है।

दूसरे सवार ने जो इनका सरदार मालूम होता था, कहा-नहीं-नहीं, यह दिलेर आदमी है। खजाँचंद, तुम्हारे ऊपर दगा, खून और कुफ्र, ये तीन इल्जाम हैं, और तुम्हें कत्ल कर देना ऐन सवाब है, लेकिन हम तुम्हें एक मौका और देते हैं। अगर तुम अब भी खुदा और रसूल पर ईमान लाओ, तो हम तुम्हें सीने से लगाने को तैयार हैं। इसके सिवा तुम्हारे गुनाहों का और कोई कफारा

धर्मदास के हृदय में ईर्ष्या की आग धधक रही थी। वह रमणी, जिसे वह अपनी समझे बैठा था, इस वक्त उसका मुँह भी नहीं देखना चाहती थी। बोला–श्यामा, तुम चाहो इस लाश पर आँसुओं की नदी बहा दो, पर यह जिंदा न होगी। यहाँ से चलने की तैयारी करो। मैं साथ के और लोगों को भी जा कर समझाता हूँ।

(प्रायश्चित्त) नहीं है। यह हमारा आखिरी फैसला है। बोलो, क्या मंजूर है ?

चारों पठानों ने कमर से तलवारें निकाल लीं, और उन्हें खजाँचंद के सिर पर तान दिया मानो 'नहीं' का शब्द मुँह से निकलते ही चारों तलवारें उसकी गर्दन पर चल जायँगी !

खजाँचंद का मुखमंडल विलक्षण तेज से आलोकित हो उठा। उसकी दोनों आँखें स्वर्गीय ज्योति से चमकने लगीं। दृढ़ता से बोला-तुम एक हिन्दू से यह प्रश्न कर रहे हो ? क्या तुम समझते हो कि जान के खौफ से वह अपना ईमान बेच डालेगा ? हिंदू को अपने ईश्वर तक पहुँचने के लिए किसी नबी, वली या पैगम्बर की जरूरत नहीं ! चारों पठानों ने कहा-काफिर ! काफिर !

खजाँ.-अगर तुम मुझे काफिर समझते हो तो समझो। मैं अपने को तुमसे ज्यादा खुदापरस्त समझता हूँ। मैं उस धर्म को मानता हूँ, जिसकी बुनियाद अक्ल पर है। आदमी में अक्ल ही खुदा का नूर (प्रकाश) है और हमारा ईमान हमारी अक्ल....

चारों पठानों के मुँह से निकला 'काफिर ! काफिर !' और चारों तलवारें एक साथ खजाँचंद की गर्दन पर गिर पड़ीं। लाश जमीन पर फड़कने लगी। धर्मदास सिर झुकाये खड़ा रहा। वह दिल में खुश था कि अब खजाँचंद की सारी सम्पत्ति उसके हाथ लगेगी और वह श्यामा के साथ सुख से रहेगा; पर विधाता को कुछ और ही मंजूर था। श्यामा अब तक मर्माहत-सी खड़ी यह दृश्य देख रही थी। ज्यों ही खजाँचंद की लाश जमीन पर गिरी, वह झपट कर लाश के पास आयी और उसे गोद में लेकर आँचल से रक्त-प्रवाह को रोकने की चेष्टा करने लगी। उसके सारे कपड़े खून से तर हो गये। उसने बड़ी सुंदर बेल-बूटोंवाली साड़ियाँ पहनी होंगी, पर इस रक्त-रंजित साड़ी की शोभा अतुलनीय थी। बेल-बूटोंवाली साड़ियाँ रूप की शोभा बढ़ाती थीं, यह रक्त-रंजित साड़ी आत्मा की छवि दिखा रही थी।

ऐसा जान पड़ा मानो खजाँचंद की बुझती आँखें एक अलौकिक ज्योति से प्रकाशमान हो गयी हैं। उन नेत्रों में कितना संतोष, कितनी तृप्ति, कितनी उत्कंठा भरी हुई थी। जीवन में जिसने प्रेम की भिक्षा भी न पायी, वह मरने पर उत्सर्ग जैसे स्वर्गीय रत्न का स्वामी बना हुआ था।

धर्मदास ने श्यामा का हाथ पकड़ कर कहा-श्यामा, होश में आओ, तुम्हारे सारे कपड़े खून से तर हो गये हैं। अब रोने से क्या हासिल होगा ? ये लोग हमारे मित्र हैं, हमें कोई कष्ट न देंगे। हम फिर अपने घर चलेंगे और जीवन के सुख भोगेंगे ?

श्यामा ने तिरस्कारपूर्ण नेत्रों से देख कर कहा-तुम्हें अपना घर बहुत प्यारा है, तो जाओ। मेरी चिंता मत करो, मैं अब न जाऊँगी। हाँ, अगर अब भी मुझसे कुछ प्रेम हो तो इन लोगों से इन्हीं तलवारों से मेरा भी अंत करा दो।

धर्मदास करुणा-कातर स्वर से बोला-श्यामा, यह तुम क्या कहती हो, तुम भूल गयीं कि हमसे-तुमसे क्या बातें हुई थीं ? मुझे खुद खजाँचंद के मारे जाने का शोक है; पर भावी को कौन टाल सकता है ?

श्यामा-अगर यह भावी थी, तो यह भी भावी है कि मैं अपना अधम जीवन उस पवित्र आत्मा के शोक में काटूँ, जिसका मैंने सदैव निरादर किया। यह कहते-कहते श्यामा का शोकोद्गार, जो अब तक क्रोध और घृणा के नीचे दबा हुआ था, उबल पड़ा और वह खजाँचंद के निस्पंद हाथों को अपने गले में डाल कर रोने लगी।

चारों पठान यह अलौकिक अनुराग और आत्म-समर्पण देख कर करुणार्द्र हो गये। सरदार ने धर्मदास से कहा-तुम इस पाकीजा खातून से कहो, हमारे साथ चले। हमारी जाति से इसे कोई तकलीफ न होगी। हम इसकी दिल से इज्जत करेंगे।

धर्मदास के हृदय में ईर्ष्या की आग धधक रही थी। वह रमणी, जिसे वह अपनी समझे बैठा था, इस वक्त उसका मुँह भी नहीं देखना चाहती थी। बोला-श्यामा, तुम चाहो इस लाश पर आँसुओं की

नदी बहा दो, पर यह जिंदा न होगी। यहाँ से चलने की तैयारी करो। मैं साथ के और लोगों को भी जा कर समझाता हूँ। खान लोग हमारी रक्षा करने का जिम्मा ले रहे हैं। हमारी जायदाद, जमीन, दौलत सब हमको मिल जायगी। खजाँचंद की दौलत के भी हमीं मालिक होंगे। अब देर न करो। रोने-धोने से अब कुछ हासिल नहीं।

श्यामा ने धर्मदास को आग्नेय नेत्रों से देख कर कहा-और इस वापसी की कीमत क्या देनी होगी ? वही जो तुमने दी है ?

धर्मदास यह व्यंग्य न समझ सका। बोला-मैंने तो कोई कीमत नहीं दी। मेरे पास था ही क्या ?

श्यामा-ऐसा न कहो। तुम्हारे पास वह खजाना था, जो तुम्हें आज कई लाख वर्ष हुए ऋषियों ने प्रदान किया था। जिसकी रक्षा रघु और मनु, राम और कृष्ण, बुद्ध और शंकर, शिवाजी और गोविंदसिंह ने की थी। उस अमूल्य भंडार को आज तुमने तुच्छ प्राणों के लिए खो दिया। इन पाँवों पर लोटना तुम्हें मुबारक हो! तुम शौक से जाओ। जिन तलवारों ने वीर खजाँचंद के जीवन का अंत किया, उन्होंने मेरे प्रेम का भी फैसला कर दिया। जीवन में इस वीरात्मा का मैंने जो निरादर और अपमान किया, इसके साथ जो उदासीनता दिखायी उसका अब मरने के बाद प्रायश्चित्त करूँगी। यह धर्म पर मरने वाला वीर था, धर्म को बेचनेवाला कायर नहीं ! अगर तुममें अब भी कुछ शर्म और हया है, तो इसका क्रिया-कर्म करने में मेरी मदद करो और यदि तुम्हारे स्वामियों को यह भी पसंद न हो, तो रहने दो, मैं सब कुछ कर लूँगी।

पठानों के हृदय दर्द से तड़प उठे। धर्मान्धता का प्रकोप शांत हो गया। देखते-देखते वहाँ लकड़ियों का ढेर लग गया। धर्मदास ग्लानि से सिर झुकाये बैठा था और चारों पठान लकड़ियाँ काट रहे थे। चिता तैयार हुई और जिन निर्दय हाथों ने खजाँचंद की जान ली थी उन्हीं ने उसके शव को चिता पर रखा। ज्वाला प्रचंड हुई। अग्निदेव अपने अग्निमुख से उस धर्मवीर का यश गा रहे थे।

पठानों ने खजाँचंद की सारी जंगम सम्पत्ति ला कर श्यामा को दे दी। श्यामा ने वहीं पर एक छोटा-सा मकान बनवाया और वीर खजाँचंद की उपासना में जीवन के दिन काटने लगी। उसकी वृद्धा बुआ तो उसके साथ रह गयी, और सब लोग पठानों के साथ लौट गये, क्योंकि अब मुसलमान होने की शर्त

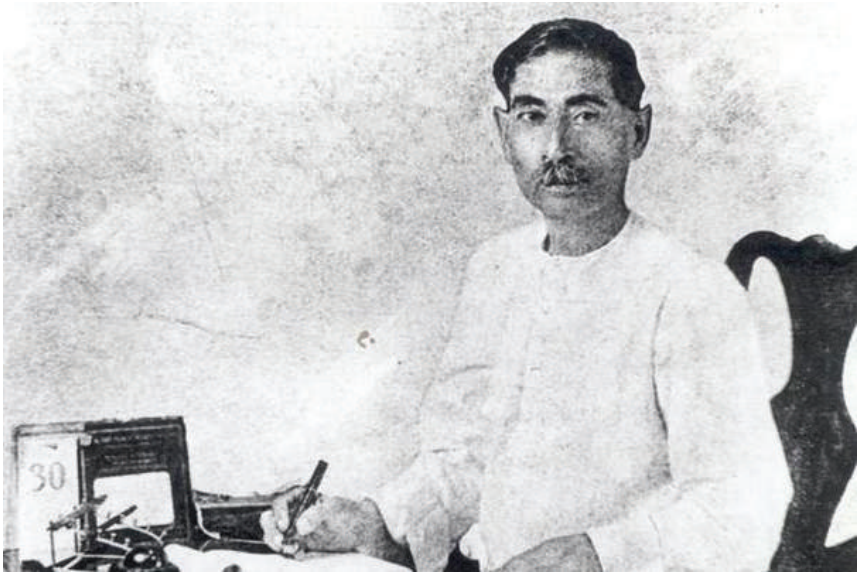

न थी। खजाँचंद के बलिदान ने धर्म के भूत को परास्त कर दिया। मगर धर्मदास को पठानों ने इस्लाम की दीक्षा लेने पर मजबूर किया। एक दिन नियत किया गया। मसजिद में मुल्लाओं का मेला लगा और लोग धर्मदास को उसके घर से बुलाने आये; पर उसका वहाँ पता न था। चारों तरफ तलाश हुई। कहीं निशान न मिला।

साल-भर गुजर गया। संध्या का समय था। श्यामा अपने झोंपड़े के सामने बैठी भविष्य की मधुर कल्पनाओं में मग्न थी। अतीत उसके लिए दुःख से भरा हुआ था। वर्तमान केवल एक निराशामय स्वप्न था। सारी अभिलाषाएँ भविष्य पर अवलम्बित थीं। और भविष्य भी वह, जिसका इस जीवन से कोई सम्बन्ध न था ! आकाश पर लालिमा छायी हुई थी। सामने की पर्वतमाला स्वर्णमयी शांति के आवरण से ढकी हुई थी। वृक्षों की काँपती हुई पत्तियों से सरसराहट की आवाज निकल रही थी, मानो कोई वियोगी आत्मा पत्तियों पर बैठी हुई सिसकियाँ भर रही हो।

उसी वक्त एक भिखारी फटे हुए कपड़े पहने झोंपड़ी के सामने खड़ा हो गया। कुत्ता जोर से भूँक उठा। श्यामा ने चौंक कर देखा और चिल्ला उठी-धर्मदास ! धर्मदास ने वहीं जमीन पर बैठते हुए कहा-हाँ श्यामा, मैं अभागा धर्मदास ही हूँ। साल-भर से मारा-मारा फिर रहा हूँ। मुझे खोज निकालने के लिए इनाम रख दिया गया है। सारा प्रांत मेरे पीछे पड़ा हुआ है। इस जीवन से अब ऊब उठा हूँ; पर मौत भी नहीं आती।

धर्मदास एक क्षण के लिए चुप हो गया। फिर बोला-क्यों श्यामा, क्या अभी तुम्हारा हृदय मेरी तरफ से साफ नहीं हुआ ! तुमने मेरा अपराध क्षमा नहीं किया !

श्यामा ने उदासीन भाव से कहा-मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझी।

'मैं अब भी हिंदू हूँ। मैंने इस्लाम नहीं कबूल किया है।'

'जानती हूँ !'

'यह जान कर भी तुम्हें मुझ पर दया नहीं आती !'

श्यामा ने कठोर नेत्रों से देखा और उत्तेजित होकर बोली-तुम्हें अपने मुँह से ऐसी बातें निकालते शर्म नहीं आती ! मैं उस धर्मवीर की ब्याहता हूँ, जिसने हिंदू-जाति का मुख उज्ज्वल किया है। तुम समझते हो कि वह मर गया ! यह तुम्हारा भ्रम है। वह अमर है। मैं इस समय भी उसे स्वर्ग में बैठा देख रही हूँ। तुमने हिंदू-जाति को कलंकित किया है। मेरे सामने से दूर हो जाओ।

धर्मदास ने कुछ जवाब न दिया ! चुपके से उठा, एक लम्बी साँस ली और एक तरफ चल दिया। प्रातःकाल श्यामा पानी भरने जा रही थी, तब उसने रास्ते में एक लाश पड़ी हुई देखी। दो-चार गिद्ध उस पर मँडरा रहे थे। उसका हृदय धड़कने लगा। समीप जा कर देखा और पहचान गयी। यह धर्मदास की लाश थी।

साभार -मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानी जिहाद. ..

'जनसंख्या नियंत्रण' पर कानून बनें...

विनोद कुमार सर्वोदय
(राष्ट्रवादी लेखक व चिंतक)

यह सर्वविदित है कि हमारे प्रिय देश भारत में बढ़ती जनसँख्या एक भयानक रुप ले चुकी है? जिससे देश में विभिन्न धार्मिक जनसँख्या अनुपात निरंतर असंतुलित हो रहा है। इससे भविष्य में बढ़ने वाले अनेक संकटों का क्या हमको कोई ज्ञान है? क्या हम अपने अस्तित्व पर आने वाले संकट के प्रति सतर्क है? लोकतांत्रिक देश में चुनावी व्यवस्था के आधार पर राष्ट्र की राज्य व्यवस्था का गठन होता है और उसमें सम्मलित होने के लिए देश के समस्त नागरिकों को एक समान अधिकार होता हैं। कहने को यह एक सामान्य विषय बिंदू है। परंतु एक विशेष सम्प्रदाय के कुछ लोग निरंतर अपनी जनसँख्या बढ़ाते हुए देश में अनेक राष्ट्रीय व सामाजिक समस्याओं को बढ़ा रहें हैं। **जबकि यह सत्य किसी से छिपा नही है कि जब 1947 में पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रो में मुस्लिम बहुसंख्यक हुए तो देश का विभाजन हुआ था। इसप्रकार जनसंख्या बल के दुष्प्रभाव व तत्कालीन राजनीति से धर्म के आधार पर देश विभाजित हुआ। लेकिन क्या वह स्थिति पुनः बनें उससे पूर्व ऐसे षड्यंत्रकारियों के प्रति सावधान होना आवश्यक नही होगा ? क्या यह अनुचित नही कि जहां जहां मुस्लिम संख्या बढ़ती जाती हैं वहां वहां उनके द्वारा साम्प्रदायिक दंगे भड़काने से वहां के मूल निवासी पलायन करने को विवश हो जाते हैं ? तत्पश्चात वहां केवल मुस्लिम बहुल बस्तियां होने के कारण उनमें अनेक अलगाववादी व आतंकवादी मानसिकता पनपने लगती हैं।**

इसके अतिरिक्त अधिकांश कट्टरवादी मुस्लिम समाज लोकतांत्रिक चुनावी व्यवस्था का अनुचित लाभ लेने के लिए अपने संख्या बल को बढ़ाने को सर्वाधिक इच्छुक रहते हैं। तभी तो अधिकांश मुस्लिम बस्तियों में यह नारा लिखा हुआ मिलता है कि 'जिसकी जितनी संख्या भारी सियासत में उसकी उतनी हिस्सेदारी'। **जनसंख्या के सरकारी आकड़ों से भी यह स्पष्ट होता रहा हैं कि हमारे देश में इस्लाम सबसे अधिक गति से बढ़ने वाला संप्रदाय/धर्म बना हुआ हैं। इसलिए यह अत्यधिक चिंता का विषय है कि ये कट्टरपंथी अपनी जनसंख्या को बढ़ा कर स्वाभाविक रुप से अपने मताधिकार कोष को बढ़ाने के लिए भी सक्रिय हैं। इसको 'जनसंख्या जिहाद' कहा जाये तो अनुचित न होगा क्योंकि इसके पीछे इनका छिपा हुआ मुख्य ध्येय हैं कि हमारे धर्मनिरपेक्ष देश का इस्लामीकरण किया जाये।**

निसंदेह विभिन्न मुस्लिम देश टर्की, अल्जीरिया, ट्यूनीशिया, मिस्त्र, सीरिया, ईरान, यू.ऐ.ई., सऊदी अरब व बंग्लादेश आदि ने भी कुरान, हदीस, शरीयत आदि के कठोर रुढ़ीवादी नियमों के उपरांत भी अपने अपने देशों में जनसंख्या वृद्धि दर कम करी है। फिर भी विश्व में भूमि व प्रकृति का अनुपात प्रति व्यक्ति संतुलित न होने से पृथ्वी पर असमानता बढ़ने के कारण गंभीर मानवीय व प्राकृतिक समस्याऐ उभर रही है। सभी मानवों की आवश्यकता पूर्ण करने के लिए व्यवसायीकरण बढ़ रहा है। बढ़ती हुई जनसंख्या संसाधनों को खा रही है। औद्योगीकरण होने के कारण प्रदूषण बढ़ रहा है व बढ़ती आवश्यक वस्तुओं की मांग पूरी करने के लिए मिलावट की जा रही है। जिससे स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं बढ़ रही है। इसके अतिरिक्त वायु प्रदूषण, कूड़े-कर्कट के जलने पर धुआं, प्रदूषित जल व खादय-पदार्थ, घटते वन व चारागाह, पशु-पक्षियों का संकट, गिरता जल स्तर व सूखती नदियां, कुपोषण व भयंकर बीमारियां, छोटे-छोटे झगड़ें, अतिक्रमण, लूट-मार, हिंसा, अराजकता, नक्सलवाद व आतंकवाद इत्यादि अनेक मानवीय आपदाओं ने भारत भूमि को विस्फोटक बना दिया है। फिर भी जनसंख्या में बढ़ोत्तरी की गति को सीमित करने के लिए सभी नागरिकों के लिए कोई एक समान नीति नही हैं। प्राप्त आंकडों के अनुसार हमारे ही देश में वर्ष 1991, 2001 और 2011 के दशक में प्रति दशक क्रमशः 16.3, 18.2 व 19.2 करोड़ जनसंख्या और बढ़ी है। जबकि उपरोक्त वृद्धि के अतिरिक्त बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान और म्यांमार आदि से निरंतर आने वाले घुसपैठिये व अवैध व्यक्तियों की संख्या भी लगभग 7 करोड़ होने से एक और गंभीर समस्या हमको चुनौती दे रही है।

इसके अतिरिक्त विभिन्न समाचारों से प्राप्त कुछ आंकड़े व सूचनाओं के अनुसार ज्ञात होता हैं कि जनसांख्यकीय घनत्व के बिगड़ते अनुपात के बढ़ने से भी ये विकराल समस्याएं बहुत बड़ी चिंता का विषय बन चुकी है। सम्पूर्ण विश्व के 149 करोड़ वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में भारत का क्षेत्र मात्र 2.4 प्रतिशत हैं जबकि हमारी पूण्य भूमि पर विश्व की कुल जनसँख्या लगभग 7.5 अरब का 17.9 प्रतिशत बोझ है। आज हमारे राष्ट्र की कुल जनसँख्या 134 करोड से अधिक हो चुकी है और जो चीन की लगभग 138 करोड जनसँख्या के बराबर होने की ओर बढ़ रही हैं जबकि पृथ्वी पर चीन का क्षेत्रफल हमसे लगभग 3 गुना अधिक हैं इस प्रकार हम 402 व्यक्तियों का बोझ प्रति वर्ग किलोमीटर वहन करते है जबकि चीन में उतने स्थान पर केवल 144 व्यक्ति ही रहते हैं। इसीप्रकार पाकिस्तान में 260, नेपाल में 196, मलेशिया में 97, श्रीलंका में 323 एवं तुर्की में मात्र 97 व्यक्तियों का प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में पालन हो रहा हैं हम से ढाई गुना बडे क्षेत्रफल वाले ऑस्ट्रेलिया की जनसंख्या जितनी ही संख्या प्रति वर्ष हमारे देश में बढ़ रही हैं। अतः भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को शांति, स्वस्थ व सुरक्षित जीवन के साथ साथ समाजिक सद्भाव एवं सम्मानित जीवन जी सके

इसलिये हम सब राष्ट्रवादी चिंतित हो रहें हैं। इन चिंताओं के निवारण व देश के धर्मनिरपेक्ष स्वरुप को बचायें रखने के लिए आज की प्रमुख आवश्यकता है कि सभी नागरिकों के लिए एक समान 'जनसंख्या नियंत्रण कानून' बनना चाहिए। इस विकराल राष्ट्रीय समस्या के समाधान के लिए क्रांतिकारी युवा सन्यासी यति नरसिंहानंद सरस्वती जी प्रधानमंत्री व सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को अपने सैकड़ों-हजारों अनुयायियों के साथ देश के विभिन्न भागों में जा जा कर पिछले लगभग दो वर्षों से निरंतर रक्त से पत्र लिखकर एक समान 'जनसंख्या नियंत्रण कानून' बनवाने की मांग कर रहें हैं। अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानंद सरस्वती जी विभिन्न जनपदों के मुख्यालय पर वहां के जनपद अधिकारी के माध्यम से रक्त से लिखें ज्ञापन को शासन के संबंधित अधिकारियों को भिजवाते हैं। साथ ही यति महाराज जी की प्रेरणा से अनेक राष्ट्रवादियों ने भी इस राष्ट्रीय समस्या के समाधान के लिए अपने अपने स्तर से कार्यक्रम आरम्भ किये हैं। देश का प्रमुख राष्ट्रवादी समाचार चैनल जो राष्ट्रीय व हिंदुत्व संबंधित समस्याओं पर अनेक वर्षों से समाज को जागरुक करता आ रहा हैं ने भी 'हम दो-हमारे दो -तो सबके दो' के नारे के साथ इस अभियान को आगे बढ़ाने का निश्चय करके सभी राष्ट्रवादियों का उत्साहवर्धन किया हैं। पिछले दिनों लोकसभा में भी सत्तारुढ़ भाजपा के सांसदों ने भी जनसंख्या नियंत्रण के लिए कठोर नीति बनाने की मांग के साथ इसके लिए एक मंत्रालय भी बनाने का आग्रह किया हैं। इसमें मुख्य रुप से सहारनपुर के सांसद श्री लखनपाल , श्री रवींद्र कुमार राय व श्री निशिकांत दुबे ने बढ़ती मुस्लिम जनसंख्या पर चिंता जताई और सांप्रदायिकता से अलग हट कर जनसंख्या नियंत्रण कानून की आवश्यकता को राष्ट्रीय हित में सभी के लिये आवश्यक माना हैं। पिछले दिनों अलवर (राजस्थान) के भाजपा विधायक श्री बनवारी लाल सिंहल ने सुदर्शन समाचार चैनल के अभियान को आत्मसात करते हुए अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हुए फेसबुक पर स्पष्ट किया कि जब एक समुदाय अधिक बच्चे पैदा करके बहुसंख्यक होने की ओर बढ़ रहा है तो हिंदुओं को भी उन्हें काउंटर करने के लिए अधिक बच्चे पैदा करने चाहिये । उन्होनें एक प्रमुख राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र को भी यही दोहराया, साथ ही विधायक जी ने एक सच्चाई और व्यक्त करी कि 'राजस्थान के अलवर व भरतपुर में एक समुदाय विशेष के लोग अधिक पैसा हथियारों की खरीद पर व्यय करते हैं जबकि हिन्दू आधुनिक जीवन जीने में'। वैसे यह कहना अनुचित नही होगा कि ऐसे समाचार प्रायः देश के अधिकांश क्षेत्रो से आने के कारण यह भी एक राष्ट्रव्यापी समस्या हैं।

आज विज्ञानमय आधुनिक युग में जब विश्व के अनेक देशों में जनसंख्या नियंत्रण के लिए आवश्यक कानून बनें हुए हैं तो फिर हमारे देश में ऐसा कानून क्यों न बनें ? अतः अधिक से अधिक लोगों को लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुसार इस अभियान से जुड़ कर अपने अपने क्षेत्रीय सांसद व विधायक से संपर्क करके इस विकराल समस्या के समाधान के लिए जनसंख्या नियंत्रण कानून बनवाने में उनका सहयोग लें और उनका सहयोग भी करें। इसके अतिरिक्त करोड़ों राष्ट्रभक्तो को अपने अपने स्तर से इसके लिए पत्र लिख कर सरकार पर दबाव बनाना चाहिये ताकि यह अभियान एक ठोस रुप लेकर सफल हो सकें। बुद्धिजीवियों , पत्रकारों व राष्ट्रभक्तों को भी सम्मेलनों और गोष्ठियां द्वारा जनजागरण अभियान चला कर बढ़ती मुस्लिम जनसंख्या के दुष्प्रभावों के प्रति सामान्य नागरिकों को सतर्क करते हुए धर्म व जाति से ऊपर उठकर सभी के लिए इस कानून को बनवाने के लिए यथाशक्ति प्रयास करने होंगे । आज यह हम सभी की सर्वोच्च प्राथमिकता हो कि इस ज्वलंत राष्ट्रीय समस्या का अधिक से अधिक प्रचार करके इसके निवारण के लिए सभी यथासंभव सहयोग करके अपनी मातृभूमि के प्रति इस अप्रत्यक्ष धार्मिक अनुष्ठान को पूर्ण करायें।

परिचय : श्री विनोद कुमार सर्वोदय

श्री विनोद कुमार सर्वोदय अपने विद्यार्थी काल (1970) से ही राष्ट्रीय व सामाजिक कार्यो में सक्रिय रहे है। आपने समाज सेवी संगठन 'गाजियाबाद छात्र संस्था' के मुख्य सचिव के रूप में निर्धन छात्रों के लिए एक व्यवस्थित पुस्तकालय व वाचनालय भी चलाया। विद्यार्थी काल के अंतिम पड़ाव (1975) व उसके कुछ वर्ष बाद भी सामाजिक कार्यों के प्रति अधिक समर्पित रहें। आपातकाल के बाद वर्ष 1977 में लोक सभा चुनावों में भी 'प्रगतिशील युवा मंच' बनाकर संयोजक के रूप में अत्यंत व्यस्त चुनाव प्रचार में सक्रिय भूमिका भी निभायी। सर्वोदय जी ने विज्ञान व विधि के स्नातक (1975) होने के उपरांत स्थानीय न्यायालय में अधिवक्ता बनने के लिए कुछ माह व्यतीत किये परंतु अनेक दुविधाओं व वर्तमान सांसारिक परिस्थितियों से समझौता न करने एवं एक उच्च न्यायाधीश के पुत्र होने के कारण यह मार्ग नही अपनाया। जीविकोपार्जन के लिए अपने भाइयों के साथ पारिवारिक व्यापार से जुड़े। साथ साथ समाज व राष्ट्र के लिए यथासंभव कार्य करते रहें। आप मुख्य रूप से ज्वलंत राष्ट्रीय विषयों पर चिंतन मनन कर अपने विचारों को 'लेख' व 'सम्पादक के नाम पत्र' के रुप में लिखकर पिछले लगभग 35 वर्षों से अनेक पत्र–पत्रिकाओं भेजते आ रहे हैं। आपके अधिकॉश पत्र व लेख राष्ट्रवादी समाचार पत्र व पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। आप सोशल मीडिया विशेषरूप से व्हाट्सअप समूहों के माध्यम से देश–विदेश के विभिन्न क्षेत्रों के राष्ट्रवादी सज्जनों से जुडे हुए हैं। सर्वोदय जी स्वतंत्र राष्ट्रवादी चिंतक व लेखक रूप में राष्ट्र में बढ़ती अराजकता व आतंकवाद के विरुद्ध समाज को जागरूक करने का हरसंभव प्रयास करते रहते है। धर्मद्रोहियों व देशद्रोहियों के प्रति सतर्क व सावधान रहने के लिये युवाओं व वरिष्ठ सज्जनों से निरंतर संपर्क में रहते है। उनसे वार्ता करने पर यह आभास हुआ कि विज्ञान व विधि स्नातक होते हुए भी भारतीय संस्कृति, धर्म, इतिहास व राष्ट्रवादी चिंतको की पुस्तकों व लेखों का अध्ययन और वर्तमान परिस्थितियां सर्वोदय जी को ऐसा करने को प्रेरित करती हैं। वर्तमान में आप 'सांस्कृतिक गौरव संस्थान' (नई दिल्ली) के एक न्यासी व पश्चमी उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष भी है। साथ ही स्वतंत्र रुप से सक्रिय रह कर विभिन्न राष्ट्रवादी संगठनों से जुड़े हुए है। पिछले लगभग 15 वर्षो से आप अपना अधिकांश समय समाज, धर्म व राष्ट्र की रक्षार्थ सभी को जागरूक करके उनको भी राष्ट्रभक्ति के प्रेरित करते है। आपका मानना है कि महान स्वातंत्र्य वीर सावरकर जी के स्थापित मूल मंत्र 'हिंदुत्व ही राष्ट्रीयत्व है और राष्ट्रीयत्व ही हिंदुत्व है' की वास्तविकता को प्रमाणित करने के लिए निरंतर तप तो करना ही होगा। आपका विचार मंत्र है कि जब हमारा धर्म हमको पवित्र व अपवित्र एवं पूण्य व पाप में भेद करने का ज्ञान देता है तो फिर हम क्यों नही धर्म मार्ग पर चल कर व्यक्तिगत, सामाजिक व राष्ट्रीय कार्यों से अपने आत्मबल को सुदृढ़ कर हिन्दू–स्वाभिमान को जगायें

बाहुबल को नकार कर शक्ति की पूजा कैसे करवा रहे है हिन्दू धमार्चार्य

राजेश यादव
(महंत उत्तराधिकारी, डासना देवी मंदिर)

देवाधिदेव भगवान महादेव शिव और हमारी माँ जगदम्बा महाकाली डासना वाली की असीम कृपा, हमारी बड़ी बहन यति माँ चेतनानंद सरस्वती जी के आशीर्वाद और सभी छोटे भाइयो की मेहनत से जगदम्बा महाकाली डासना वाली का परिवार अपनी मासिक पत्रिका सूर्या बुलेटिन शुरू कर रहा है, ये मेरे लिये बहुत हर्ष का विषय है। ये बहुत पहले ही हम सबको करना चाहिये था परंतु परमात्मा ने हर चीज का समय निश्चित किया हुआ है। जो कार्य जिस समय पर होना है,उसी समय पर होता है। मैं कोई बहुत विद्वान आदमी तो हूँ नहीं। वैसे भी आर्य समाजी और पहलवानों के परिवार में परमात्मा ने मुझे जन्म दिया। मैंने तो सनातन धर्म के बारे में जो भी जाना,जो भी समझा वो अपने गुरु जी यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी के साथ रहकर ही समझा है। वैसे भी मैं खुद समझने वाला कम और गुरु जी की बात ज्यादा मानने वाला शिष्य हूँ। गुरु जी की एक दो बातों को छोड़कर शायद ही कोई बात मुझे कभी समझ में आई हो पर उनका जो धर्म के प्रति समर्पण और हिन्दू को बचाने का जो जूनून है,मैं उस जूनून के समक्ष नतमस्तक हूँ और उनकी हर बात उसी तरह मानता हूँ जैसे एक शिष्य को माननी चाहिये।

गुरूजी की एक बात जिससे मैं सौ प्रतिशत सहमत हूँ वो ये है की धर्म,राष्ट्र और आजादी की रक्षा के लिए सदैव युद्ध और बलिदान के लिये तैयार रहना पड़ता है। गुरूजी ये बात यूँ ही नही कहते बल्कि अपनी बात को हमारे धर्म के सर्वमान्य ग्रन्थ वेद, बाल्मिकीय रामायण,महाभारत और साक्षात परमात्मा की वाणी से मानव को दिए गए अतुलनीय

ज्ञान श्रीमद्भगवद गीता के आधार पर कहते हैं। हमारा गाँव बम्हेटा बहुत धार्मिक गाँव है जहाँ कथा भागवत होती रहती हैं और सामाजिक परिवेश के कारण उन कथाओं में जाना भी पड़ता है। वैसे भी आर्य समाजी परिवारों में ज्ञान चर्चा का व्यसन तो होता ही है। इसी कारण मन में बचपन से ही धार्मिक ग्रन्थों के प्रति बहुत आकर्षण रहा। जब से गुरु जी के साथ रहने लगे तब से धर्म और धर्म ग्रन्थों के प्रति एक अलग दृष्टिकोण उत्पन्न हुआ और ये समझ में आया की विदेशी आक्रमणकारियों के भारत में आने से पहले जो धार्मिक साहित्य लिखा गया है वो वीर भाव से लिखा गया है और उसके बाद का धार्मिक साहित्य दास भाव से लिखा गया है।

इसका अर्थ है की आज हमारे धार्मिक साहित्य में जो दास भाव दिखाई देता है वो हमारे धर्म का कोई हिस्सा नही है बल्कि विदेशी आक्रमणकारियों ने हम पर थोपा है। ये कब और कैसे हुआ, ये बहुत शोध का विषय है। मै अभी इसकी गहराई में नही जाना चाहता परन्तु इतना जरूर कहना चाहता हूँ की आज हम गुलाम नही बल्कि आजाद हैं। अब हमें अपने धर्म के मूल सिद्धांतो पर बहुत शोध करके सही धर्म को अपनाना चाहिये। अगर देश में धर्म के आधार पर राजसत्ता होती तो ये काम राजसत्ता के द्वारा किया जा सकता था परंतु अब ये कार्य धमार्चार्यो को करना चाहिये।

ऐसे हजारों कार्य है जो होने चाहिये। उनमे से एक कार्य मैं बताना चाहता हूँ। **प्राचीन काल में हमारे बच्चे गुरुकुल और आश्रमो में विद्याध्ययन के लिये जाते थे और वहाँ शस्त्र व शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करते थे। हमारे जितने भी ऋषि मुनि हुए हैं, वो सब शस्त्र और शास्त्र में अति निपुण थे। हमारे सारे महापुरुषों ने यहाँ तक की श्रीराम, श्रीकृष्ण और परशुराम जी ने भी अपने गुरुओं से जो उस समय के सबसे बड़े धमार्चार्य थे, उनसे शस्त्र विद्या प्राप्त की। हमारे धर्म के इतिहास में एक से महान एक धमार्चार्य हुए हैं परंतु सबसे महान धमार्चार्य वो ही माने गए जिनके शिष्य महानतम योद्धा हुए।** आप भगवान परशुराम को देखिये, ब्रह्मऋषि वशिष्ठ को देखिये, विश्वामित्र, आचार्य द्रोण, असुर कुलगुरु शुक्राचार्य जी, आचार्य चाणक्य तक हजारो धर्म के स्तम्भ है जिन्होंने अजेय और महापराक्रमी शिष्य मानवता को प्रदान किये। **मुझे आश्चर्य होता है की कैसे आज कोई भी धमार्चार्य परशुराम, वशिष्ठ, विश्वामित्र, शुक्राचार्य, द्रोण और चाणक्य नही बनना चाहता। बिना धमार्चार्यो की तपस्या और शक्ति के हमे श्रीराम, श्रीकृष्ण, अर्जुन, भीम, चंद्रगुप्त और छत्रसाल कैसे मिलेंगे?** आज ये विकट प्रश्न है हम सभी सनातन धर्म के मानने वालों को बिना बाहुबल के हमारे धमार्चार्य हम सबको शक्ति की पूजा कैसे करवा रहे हैं?

अगर इस प्रश्न का उत्तर नही खोजा गया तो सनातन धर्म के अस्तित्व पर आये संकट को टाला नही जा सकेगा। सभी धमार्चार्यो और प्रबुद्ध सनातन धर्मावलम्बियों को मैं करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि इस विषय में विचार करके तुरन्त ठोस निर्णय ले अन्यथा धर्म और इतिहास हमारे धमार्चार्यो को कभी क्षमा नही करेगा।

प्राचीन काल में हमारे बच्चे गुरुकुल और आश्रमो में विद्याध्ययन के लिये जाते थे और वहाँ शस्त्र व शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करते थे। हमारे जितने भी ऋषि मुनि हुए हैं, वो सब शस्त्र और शास्त्र में अति निपुण थे। हमारे सारे महापुरुषों ने यहाँ तक की श्रीराम, श्रीकृष्ण और परशुराम जी ने भी अपने गुरुओं से जो उस समय के सबसे बड़े धमार्चार्य थे, उनसे शस्त्र विद्या प्राप्त की।

माता-पिता साक्षात देवता हैं

नरेन्द्र कुमार शर्मा (एम0ए0 बी0एड0)

पिछले माह एक दैनिक समाचार पत्र में ''कलयुगी पुत्र माँ को भटकने के लिए जंगल में छोड दिया गया'' समाचार पढने को मिला। शीर्षक से ही मन को ठेस लगी परन्तु समाचार पढकर तो कलेजा मुंह को आने लगा। कैसा समय आ गया....मां-बाप के प्रति भारत की संतानें कितनी संवेदनशील हो गयी। क्या जमाने के साथ मां शब्द का अर्थ ही बदल गया है? भारतीय संस्कृति तो मातृ-देवो भवः पितृ देवो भवः आदर्श पर टिकी है। हमारे धर्मशास्त्र ही मातृ-शक्ति की प्रेरणा देते हैं। मातृ-पितृ भक्ति का एक बड़ा मार्मिक आख्यान ऋग्वेद की नीति मंजरी में आता है।

पितरौ हि सदा वन्द्यौ न त्येजपराधिनौ।
पित्रा बद्धः शुनः शेपो यचाचे पितृदर्शनम।।
(ऋग्वेद 1/11)

इक्ष्वाकंवंशी राजा हरीश्चंद को कोई संतान नहीं थी। इनके राजमहल में अनेक रूपसी गुणवती रानियां थीं परंतु किसी को भी संतान न होने के कारण सभी दुखित थे। नारद मुनि ने उनके दुख का कारण जानकर उसका निदान भी बता दिया कि वरूण देव की उपासना करो तो पुत्र प्राप्ति संभव है। राजा ने विधिवत वरूण देव की उपासना की। वरूण देव के वरदान से पुत्र प्राप्ति हो गयी। परन्तु राजा ने यह वचन ले लिया कि उस पुत्र से वरूण देव का यजन करेंगे।

पुत्र प्राप्ति एक लम्बी प्रतीक्षा के बाद हुई थी, सो राजा हरीश्चंद पुत्र मोह में फंस गये। हर समय पुत्र का ही चिंतन करते उत्सव मनाते मिठाईयां बांटते, तरह-तरह से उसकी कुशलता की कामना करते और करवाते। तभी वरूण देव आये और राजा को प्रतीज्ञा याद दिलाई। राजा याद करके भी बहाने बनाने लगे ''हे देवता.....अभी तो पुत्र दस दिन का ही है अशौच भी समाप्त नहीं हुआ है इसके द्वारा यजन कैसे हो पाएगा। जब अशौच समाप्त होगा तो यज्ञ करूंगा।'' कुछ दिन बाद वरूण देव पुनः आ गये। राजा ने फिर नयी युक्ति दे की कि अभी तो पुत्र के दांत भी नहीं निकले हैं और दंतहीन यज्ञ के योग्य नहीं होता। दांत निकलने पर अवश्य यज्ञ करूंगा। वरूण देव वापिस चले गये। कछ और समय के बाद पुनः आ गये और यज्ञ का प्रस्ताव रखा। अब राजा खिन्न से हो गये और बोले कि ''प्रभो-यह क्षत्रिय बालक है जब तक इसका सनाह कर्म नहीं हो जाता तब तक इसके द्वारा यजन करना ठीक नहीं रहेगा।'' वरूण देव फिर वापिस चले गये।

बालक का नाम रोहित रखा गया। राजा ने रोहित को उसके जन्म सम्बन्धी सारी बातें बता दीं। इससे रोहित कुछ डर गया। यदा समय सनाह कर्म भी सम्पन्न हो गया। परन्तु यज्ञ कर्म के भय से वह बालक धनुष-बाण लेकर वन को चला गया और इसी समय वरूण देव हरिश्चन्द्र के पास आये बालक ने वन गमन को उन्होंने प्रतिज्ञा भंग बताया और राजा हरिश्चन्द्र को श्राप दे दिया। श्राप के प्रभाव से राजा को जलोद रोग हो गया और बहुत दुखित हो गये।

वनों में भ्रमण कर रहे रोहित को जब पिता की दशा का ज्ञान हुआ तो वह भी दुखी हुआ और पिता के उपचार के विषय में अनेक लोगों से पूछताछ करता रहा और उनसे मिलने के लिए चल पडा परन्तु देवराज इन्द्र ने उसे वहां जाने से रोक दिया और किसी ऋषि ने रोहित को बता दिया कि तुम्हारे बदले कोई और भी वरूण देव का यजन कर सकता है। इन्हीं दिनो वन में रोहित को अजीगर्त नामक ऋषि मिले जो अपनी निर्धन अवस्था के कारण अति क्षीणकाय हो गये थे उनके तीन पुत्र थे। रोहित ने दशा देखकर और अपना कार्य साधने के लिए एक पुत्र को बेच देने का और बदले में गौओं का लोने का प्रस्ताव रखा। अजीगर्त पहले तो सहमत नहीं हुए, फिर सौ गौओं के बारे में सोचकर कि हमारे सारे कष्ट दूर जो जाएंगे, प्रस्ताव को मान गये। बड़ा पुत्र पिता को बहुत प्रिय था और छोटा पुत्र माता का लाड़ला था। अतः मंझले पुत्र को माता-पिता ने

सौ गौओं के बदले दे दिया। इस पुत्र का नाम शनुः शेप था इसे माता-पिता बहुत प्रिय थे। वह मन ही मन दुखी था परन्तु माता-पिता की आज्ञा एवं उनका हित स्वीकार वह रोहित के साथ उसके माता-पिता के पास आ गया।

राजा हरिश्चन्द्र ने अनुकूल स्थिति पाकर वरूणदेव का आह्वान किया और शनुः शेप को निमित बनाकर राजसूय यज्ञ प्रारम्भ कर दिया। यज्ञ में शनुः शेप को किसी तरह अजीगर्त के द्वारा स्तम्भ से बांध दिया गया। वह बड़ा भयभीत व कातर हो उठा। वह उस समय मृत्यु के भय से दुखी नहीं था अपितु-

कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारू देवस्य नाम।
को नो महया अदितये पुनर्दात पितरं च दृशेयं मातरंच।। (ऋग्वेद 1/24/1)

वह मन ही मन निश्चय कर कहने लगा कि मैं किस देवता की उपासना करूं जो कि मैं अमरता प्राप्त कर अपने आदरणीय माता-पिता का दर्शन निरंतर करता रहूं। उसे दुख ये था कि यज्ञ में मरने के बाद वह अपने प्रिय माता-पिता का दर्शन नहीं कर सकेगा। शुनः शेप की करूण पुकार से प्रजापति प्रकट हो गये उन्होंने कहा कि ''तुम अग्निदेव सविता देव की उपासना करो तत्पश्चात वरूण देव की स्तुति करो क्योंकि उन्हीं के निमित तुम्हें बंधन मिला है।'' इनके साथ ही शनुः शेप ने विश्वेदेव अश्विनी कुमारों तथा इन्द्र की स्तुति भी की। सभी देवता प्रसन्न हो गये और उन्होंने बंधन से मुक्त कर दिया। देवराज इन्द्र ने शनुः शेष को स्वर्ण रथ दिया। राजा हरिश्चन्द्र का जलोदर रोग भी ठीक हो गया और देवताओं के अनुग्रह से विश्वामित्र ने शनुः शेप का यज्ञानुष्ठान पूर्ण कराया। जिससे महर्षि विश्वामित्र की कृपा भी प्राप्त हो गयी। देवताओं ने यह भी निर्णय दिया कि आज से शनुः शेप विश्वामित्र का पुत्र कहलाएगा क्योंकि उन्हीं के द्वारा वह रक्षित है। तभी से शनुः शेप विश्वामित्र के पुत्र में ज्येष्ठ पुत्र के रूप में विख्यात हुए। शनुः शेप के इस आख्यान को सुनने से पढने से पाप, बंधन व पाश से मुक्ति मिलती है। उपरोक्त आख्यान से इतना ही समझ ही लेना चाहिए कि माता-पिता गुरू देवता आदि सभी ज्येष्ठजन पूजनीय सेवनीय एवं वन्दनीय है। माता-पिता विशेष रूप से अपनी संतान के हित चिंनत में लगे रहते हैं अतः व्यक्ति को चाहिए कि वह जिस प्रकार वह जिस अन्य देवताओं के प्रति श्रद्धा भक्ति, सेवा भाव, आज्ञा पालन एवं विनय का भाव रखता है वह उसी प्रकार माता-पिता में भी रखे। माता-पिता साक्षात देवता हैं। जानकर कोई ऐसा कार्य न करे जिससे उन्हें कष्ट हो। यद्यपि माता-पिता में भी रखें। माता-पिता साक्षात देवता हैं। जानकर कोई ऐसा कार्य ने करे जिससे उन्हें कष्ट हो। यद्यपि माता-पिता अपनी संतान का कोई अनिष्ट न करते हैं न चाहते हैं। कदाचित उनसे अपनी संतान के प्रति कोई ऐसा कार्य बन जाता है जिससे संतान का अहित न हो जाए तो ऐसी दशा मे उस अपराध को भुलाकर श्रद्धा से विनय से शील से युक्त होकर उनकी सेवा में रत रहना चाहिए। यही हमारी भारतीय संस्कृति है। यही हमारा नैतिक आदर्श है। हमारे कृत्य एवं संस्कार नैसर्गिक रूप से हमारी भावी संतानों में आते हैं। क्यों न हम ऐसे कृत्य करें जिससे हमारी आगामी पीढ़ी सत्प्रेरणा ले सके।

A Home for Every one
Golden Wave Infratech Pvt. Ltd.

Visavi CO. PVT. LTD.
103, PANCSHEEL ENCLAVE, LAL KUAN, G.T. ROAD, GHAZIABAD Phone Office : +91-9871303060
E-mail : info@visavi.in | Web : www.visavi.in
Sanjay Yadav Director

अग्निपथ का पथिकः वीर सावरकर

'हे मातृभूमि, तेरे लिए मरना ही जीना है और तुझे भुलाकर जीना ही मरना हैः बालवीर सावरकर

भारत के अग्निपुत्र सावरकर का जन्म महाराष्ट्र के नासिक जनपद स्थित 'भंगूर' ग्राम में 28 मई, 1883 को सोमवार रात्रि 10 बजे श्री दामोदर सावरक पिता तथा राधाबाई माता के घर में हुआ था। बालक की छवि को देखकर आभास होता था कि मानों कोई देवपुरूष इस देवधरा के रक्षाहित धरती पर अवतरित हुआ है। प्राथमिक शिक्षा भंगूर गांव के विद्यालय से पूर्ण हुई, जहां उसने वीर शिवाजी, महाराणा प्रताप आदि अनेक देशभक्तों की शौर्यपूर्ण गाथाएं सुनी तथा मन में उन जैसा ही बनने का संकल्प धारण कर लिया। वे सभी संस्कार, जिनके कारण भारत 'विश्वगुरू' कहलाता था, उसने अभिमन्यु की भांति मां के उदर में ही सीख लिए थे। अपने माता-पिता की तीनों संतानों में ये मंझले पुत्र थे, अग्रज गणेशराव तथा अनुज नारायण राव तथा मंझले विनायक राव थे। बचपन में ही तात्या मित्र मंडली के साथ खेल-खेल में तीरकमान, तलवार चलाना, कुश्ती लड़ना तथा तैराकी जैसी गतिविधियों में निपुण हो चुके थे। नौ वर्ष की अल्पायु में दुर्भाग्य का कहर बरपा और ये ममता के साए से सदा के लिए वंचित हो गये। लेकिन तात्या ने ''दुर्गा मां'' कुलदेवी को मां का स्थान देकर उसके प्रतिपूर्ण समर्पित हो गये तथा पिताजी का मनोबल नहीं टूटने दिया। मित्रों के साथ 'मित्र मेला'' का गठन किया तथा देशभक्ति की भावना से जुड़कर शिवाजी महाराज का जन्मदिवस व अन्य गतिविधियों में भाग लेते रहे। 'चाफेकर बन्धुओं' को फांसी की सूचना ने सावरकर के हृदय में अंग्रेजों के प्रति घृणा भाव को और भी अधिक उत्तेजित कर दिया तथा प्रतिशोध भावना से ग्रसित हो गये।

युवावीर सावरकर

प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करके सावरकर अध्ययन हेतु नासिक चले आए तथा उन्नीस सौ एक में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की तत्पश्चात उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से पुनः के फर्ग्यूसन कॉलिज में

राजेन्द्र 'राजा'
(व्यंग्य कवि एवं राष्ट्रवादी रचनाकार)

प्रवेश लिया तब तक सावरकर के हृदय में 'वीर शिवाजी' पूर्णरूपेण अविष्टित हो चुके थे। इसीलिए इन्होंने वहां सर्वप्रथम विदेशी वस्त्रों की होली जलाई तथा कविता व भाषणों द्वारा जनता को जाग्रत करने का प्रयास करने लगे, फिर भी वे बी0ए0 की परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। इसी काल में इनके पिता जी भी स्वर्ग सिधार गए, लेकिन बड़े भाई गणेश राव ने दोनों भाईयों का दायित्व पितृतुल्य सम्भाला तथा लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की अनुकम्पा तथा अनुशंसा में तात्या को बैरिस्टरी की पढ़ाई के लिए लंदन अर्थात दुश्मनों के देश भिजवाया, 1 जून 1906 को सावरकर ने लंदन के लिए प्रस्थान किया वहां पहुंचकर स्वयं श्यामजी कृष्ण वर्मा इन्हें ससम्मान लेकर 'इंडिया हाउस' में, जहां श्यामजी कृष्ण वर्मा स्वयं निवास करते थे। इन्हें भी रहने का स्थान दिया तथा वे एक संरक्षक के रूप में पाए गये। वहां पर सावरकर अध्ययन के साथ-साथ क्रान्तिकारी गतिविधियों में संलग्न रहने लगे तथा कई अन्य भारतवासी छात्रों को अपने विचारों से जोड़ लिया। इन्हीं छात्रों में एक मदनलाल ढींगरा ने सावरकर के निर्देशन पर एक विधर्मी अत्याचारी क्रूर अंग्रेज कर्जन वायली का वध कर दिया, जिसके छींटे सावरकर के दामन से भी जुड़ गये। इनके प्रयास से लेडी भीकाजीकामा ने जर्मन जाकर भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए संगठन के द्वारा निर्मित 'राष्ट्रीय ध्वज' फहराया, जिसे देखकर ब्रिटिश

गुप्तचरों को सतर्क कर दिया। किन्तु सावरकर को भय नाममात्र को नहीं था। उन्होंने अपनी गतिविधियां यथावत जारी रखी तथा अपने उत्तेजक भाषणों, लेखों तथा कविताओं द्वारा अंग्रेजों को ललकारते रहे, लेकिन जब बात अधिक बढ़ गयी तो श्याम कृष्ण वर्मा जी के विशेष आदेश पर ये लंदन छोड़कर फ्रांस चले गये। तब तक गुप्तचरों को इनके द्वारा भारत के मित्रों को पिस्टल तथा अन्य आपत्तिजनक शस्त्रों के भेजने का पता चल गया, पुलिस इन्हें बंदी बनाने का अवसर खोजने लगी। फ्रांस में आकर सावरकर आत्मग्लानि के शिकार हो गये तथा उन्होंने एक अपराधी की तरह छुपकर रहना उचित नहीं समझा तो वे 13 मार्च, 1910 को लंदन के विक्टोरिया रेलवे पर रेलगाड़ी से उतरे, जहाँ, पुलिस ने इनको तत्क्षण बंदी बना लिया और ब्रिस्टल जेल में बंद कर दिया।

सावरकर द्वारा 'सागर मंथन'

सावरकर पर अनगिनत देशद्रोही धाराओं के अन्तर्गत भारत लाना तय हुआ तथा 1 जुलाई, 1910 को मोरिया जलयान द्वारा पुलिस सुरक्षा घेरे में भारत के लिए प्रस्थान किया। संयोग से आठ दिन बाद ज्यों ही जलयान फ्रांस के सागर क्षेत्र मध्य पहुंचा, उसमें कुछ खराबी आ गई, जिसके कारण उसे फ्रांस के बंदरगाह पर रूकना था। इस सूचना से सावरकर बहुत हर्षित हुए और मन-ही-मन अपनी मुक्ति की योजना रच डाली।

शौच जाने के बहाने वे पुलिस की आंख में धूल झोककर समुद्र में कूद गए तथा तैरते हुए फ्रांस के तट पर पहुँच गए, तभी पुलिस को उनके फरार होने का आभास हुआ और वह भी पीछा करते-करते वहीं पर आ गई तथा अपना बंदी बताकर व प्रत्यर्पण संधि का लाभ उठाकर उन्हें पुनः बेड़ी-हथकड़ियों में जकड़ लिया। वे उन्हें भारत लाने में सफल रहे, लेकिन सावरकर के इस साहसिक कार्य ने पूरे विश्व को आश्चर्य में डाल दिया। यहां तक कि विश्व न्यायालय तक में यह विवाद का विषय बन गया।

जब कालापानी भी उबलने लगा

भारत लाकर ब्रिटिश न्यायालय ने इनको विभिन्न आरोपों में 'दो आजीवन कारावास' का दंड देकर 'कालापानी' (अंडमान निकोबार) की सेल्यूलर जेल जो मृत्यु की पर्याय थी, भेज दिया और उनके सीने पर पचास वर्ष की सजा के प्रतीक बिल्ले पर सजा का प्रारंभिक तथा अन्तिम रिहाई वर्ष 1910-1960 अंकित कर दिया।

यहाँ पर जो अमानवीय क्रूरतापूर्ण यातनाएँ दी गई, उनका वर्णन करने के कलम भी रोने लगती है, कोल्हू चलाकर तेल पेरना, गाड़ियों में पशुवत जुतना, मुँह खोलने या अधिकारों की बातें करने पर चाबुक से पिटाई आदि तो जेलर के लिए कोई अर्थ नहीं रखती थीं। खाने योग्य भोजन भी नहीं दिया जाता था, यहां तक कि पीने का पानी भी मात्र एक कटोरा पूरे दिन के लिए।

लेकिन उस दिन तो मानो सचमुच कालापानी भी उबलने लगा था, जब सावरकर को एक दिन अपना तेल नपवाने के समय अचानक उन्हें अपने अगज के दर्शन उसी जेल तथा उसी बैरक में हो गए। वे दोनों विस्मय भरी दृष्टि से एक-दूसरे को देखते रहे तथा अग्रज के मुँह से अचानक निकल पड़ा, 'तात्या, तुम भी यहाँ', बड़े भाई तो यह समझे बैठे थे कि उनका तात्या बेरिष्टर बनकर घर चला रहा होगा। लेकिन इतना ही नहीं, उनके सबसे छोटे भाई नारायण भी महाराष्ट्र में जेल की कोठरी में राष्ट्रभक्ति की सजा पर रहे थे। धन्य है वह माता, जिसने ऐसे पुत्रों को जन्म दिया।

मुक्तिपथ का बंधक

सैल्यूलर जेल में अमानवीय यातनाओं से जहाँ से जीवित लौटने वाले बंदी अपवाद स्वरूप ही होते थे, उन यातानाओं से सावरकर का तन-मन छलनी हो चुका था। कभी-कभी तो वह वीरपुरूष भी 'आत्महत्या' तक की बात सोचने पर विवश हो उठता था, लेकिन तभी उनका पुरूषार्थ ढांढस बंधाता और वे पुनः सचेत हो उठते किन्तु हाड़-मांस का तन कैसे और कब तक उन यातनाओं को सह पाता, फलतः वे रूग्ण रहने लगे, उनकी स्थिति बिगड़ती जा रही थी, तभी पूरे भारत में उनकी रिहाई के लिए आन्दोलन होने लगे। विवश होकर ब्रिटिश सत्ता ने उनको मुक्त करने का निर्णय ले लिया और उन दोनों भाईयों को 2 मई, 1921 को कालापानी से मुक्त करके पहले अलीपुर तथा बाद में रत्नागिरी में बंद कर लिया। अन्ततः 10 मई, 1937 को उन्हें।

कुछ शर्तो के साथ बंदी जीवन से मुक्त कर दिया, इस प्रकार 10 मई को 'शौर्य दिवस' के रूप में मनाया जाने लगा।

स्वतंत्र देश का बंदी सावरकर

कदाचित सावरकर जी ने स्वतंत्रता को देखने-परखने के लिए अपनी साँसों को नियंत्रित कर रखा था तो उनको आजादी में साँसें लेने का सौभाग्य 15 अगस्त, 1947 को देश के विभाजन भरे देश के साथ मिला, जिसकी उन्होंने पूर्ण भर्त्सना की। राष्ट्रप्रेमियों के दिलों में गाँधीजी, जिनकी तुष्टीकरण तथा विवशता पूर्ण स्थितियों ने देश को आजादी के नाम पर खंडित कर दिया, के प्रति कुट विचार पालने लगे तथा एक हिन्दुवादी देशभक्त नाथूराम गौड़से ने 30 जनवारी, 1948 को गांधी जी का वध कर दिया। गांधीजी के बध के आरोपों से सावरकर भी नहीं बच पाये और उन्हें भी आजाद देश में बन्दी बनाकर रखा गया। किन्तु सच्चाई अधिक समय तक छुपकर नहीं रह सकती और 10 फरवरी, 1948 को न्यायालय ने उन्हें ससम्मान सभी आरोपों से मुक्त कर दिया।

जब इतिहास रो पड़ा

सावरकर जी ने आजादी के बाद घटित अनेक घटनाओं को देखा, 'राष्ट्रनायकों' को अपने सुविचारों से मार्गदर्शन देने का कार्य भी करते रहे, उनके विचारों को कितना ग्रहण किया गया, यह शोध का विषय है। 1947 में कबाइलियों का कश्मीर, आक्रमण, 1962 में चीन के साथ युद्ध, 1965 में पाकिस्तान के साथ सशस्त्र संघर्ष आदि घटनाओं को देखते रहे तथा सहन करते रहे तुष्टीकरण की सरकार की उन नीतियों को, जिनके कारण तिब्बत गवाना पड़ा, 'पंचशील' पर हस्ताक्षर करने वाले चीन के विश्वाघात से बुरी तरह टूट गए। 1965 के युद्ध में लालबहादुर की बहादुरी की प्रशंसा तो की, लेकिन उनका अखंड भारत का स्वप्न पूरा नहीं हो पाया तो उन्होंने स्वयं अपनी मृत्यु का वरण करने का निश्चय कर लिया। उन्होंने खाना-पानी यहाँ तक कि दवाओं को भी किनारे कर दिया और यह कहते हुए कि 'अब मुझे जीवित रहकर क्या करना है, जो मेरा कर्तव्य था' वह कर चुका हूँ। पुनर्जन्म के हित या सभी जन्मों से मुक्ति का मार्ग चुन लिया। इस प्रकार 26 फरवरी, 1966 को पुत्र 'विश्वास' को राष्ट्रहित उपदेश देकर सदा के लिए मौन हो गये। उस युगवाणी पुरूष को मौन देखकर इतिहास भी अपने आंसू नहीं रोक पाया। ऐसे राष्ट्रपुत्र को कोटिशः नमन।

परिचयः राजेन्द्र 'राजा'

व्यंग्य कवि एवं राष्ट्रवादी रचनाकार

हिन्दी व्यंग्य कविता के प्रमुख कवि श्री राजेन्द्र 'राजा' जी का जन्म 4 जुलाई 1953 को पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जिला बुलंदशहर में सिकन्द्राबाद तहसील के पास चीती गाँव में हुआ आपके बाबा पंडित नत्थू प्रसाद जी एक क्रान्तिकारी रहे जो अनेकों बार जेल गये तथा उनके क्रान्तिकारी भाषण पुराने क्षेत्रीय बुजुर्गों की जुबान पर आजादी के बाद तक रहे 'मुझे ये चिन्ता नहीं है कि मैं अंगरेजों की गोली से मारा जाऊ लेकिन ये खुशी होगी कि मुझे मारने में उनकी कम से कम एक गोली तो खर्च होगी'

अंगरेजों भारत छोडो आन्दोलन में जेल में अधिक यातनाओं के कारण पंडित नत्थू प्रसाद जी जब रिहा होकर घर आये तो बहुत व्यथित रहने लगे तथा जिस दिन आपका जन्म हुआ उसी दिन 4 जुलाई 1943 को वो आपके जन्म से 40 मिनट पहले स्वर्ग सिधार गये तो आपकी दादी ने भावावेश में आकर कहा लो एक राजा गया एक आया तो परिवार एक तरफ दुख मनाये या खुशी निश्चित नहीं कर सका लेकिन उसी दिन से आपको सभी राजा कहने लगे।

आपके पिता पंडित विधीचंद शर्मा जी आजादी के पश्चात पंचायत विभाग उत्तर प्रदेश में सचिव (सेकरेट्री) बने तथा आप उनकी ज्येष्ठ संतान रहे और आप चार बहनों में सबसे बडे रहे।

शिक्षाः- प्रारम्भिक शिक्षा आपको पास के ही कस्बे सिकन्दराबाद में हुई तथा कछा 6 में आपने पहली कविता लिखी जिसे स्कूल में होने बाले कार्यक्रम में सुनाया 12वी कक्षा आपने मुकुन्द स्वरूप इंटर कालिज से उत्तीर्ण की और आपने स्नातक परीक्षा एम एम एच कालिज गाजियाबाद से की तदुपरान्त आप बी टी करने अलीगढ चले गये उस समय 1962 के चीन से युद्ध में मिली हार को आप सहन नहीं कर सके और सबसे पहली कविता आपने आक्रोश में सत्तासीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू जी को हार का मुख्य दोषी

मानते हुए लिखी तथा वो कविता 'अपनी प्यारी आजादी को कर प्रणाम यहाँ बेटे' एक कार्यक्रम में नेहरू जी के सामने पढी उस दिन से आपके आक्रोश ने आपको सियासत की खामियों पर लिखने को मजबूर कर दिया और आप राजनितिज्ञों को आइना दिखाने का संकल्प लेकर लिखते रहे तथा आपने वी टी (बी एड के समकक्ष) के बाद राजनीति विज्ञान में परास्नातक की परीक्षा पास की।

व्यवसायः- जिस विधालय से आपने 12 की उसी में आपकी सरकारी अध्यापक की पहली नौकरी लग गई विधालय में 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस पर होने वाले कार्यक्रम में आप उस समय उस क्षेत्र के सम्मानीय जनवादी कवि सत्य प्रकाश 'प्रखर' जी के सम्मुख पढी जिसे उन्होने बहुत पसंद किया तथा उनसे कहा कि आप तो बहुत अच्छे कवि हैं।

तदोपरान्त आपको दिल्ली में राजनीति शास्त्र के प्रवक्ता की नौकरी मिली और आप शिक्षक के साथ -साथ काव्य क्षैत्र में भी आ गये।

कविता की दुनियाँ में जब आपको सत्य प्रकाश प्रखर जी के साथ सूदूर कवि सम्मेलनों मे काव्य पाठ के अवसर मिलने लगे तो आप देश के बडे-बडे कविओं साहित्यकारों के लाडले कवि बन गये व्यंग्य की पैनी धार जिसमें समाज में व्याप्त बुराइयों पर आप की कलम चली और लगभग देश के सभी साहित्यिक मंचो पर काव्यपाठ के साथ-साथ आकाशवाणी-टेलीविजन तथा अखवारों पत्रिकाओं में आपकी रचनाए आम जनमानस तक पहुंचने लगी।

आपने अपनी लेखन विधा जिसमें व्यंग्य कविताओं का स्थान रहा जो समसामयिक दृषिकोण से लिखी गई लेकिन व्यंग्य का राजा एक और बडा काम के लिए 45 साल की उम्र में जुट गया जन नायक नेता सुभाष पर खंड काव्य 'प्रवासी सुभाष' लिखकर समस्त काव्यप्रेमीओं कविओं को ये अचरज में डाल गया तदापुरान्त अपने पारिवारिक जिम्मेदारीओं को निभाते हुए चार बहनों की शादीओं तथा चार बच्चों की शादी (दो बेटों दो बेटीओं) की शादी करते हुए 31 जुलाई 2002 को आप राजनीतिशास्त्र के प्रवक्ता पद से सेवानिवृत हुए तथा मंचीय जीवन को संतुलित कर राष्ट्रवादी लेखन से जुड गये तथा वीर सावरकर महाकाव्य कृति की रचना की जिसका प्रभाव दूर-दूर तक गया पूरे देश में सावरकरवाद को पहुचानें में ये पुस्तक उपयोगी सिद्ध हुई तदोपरान्त अब वतन आजाद है व्यंग्य गजल संग्रह शहीदों की चिताओं पर, चंबल से संसद तक, भगवान परशुराम खंड काव्य, भोर का माथा गरम है, वीरांगना दुर्गा भाभी (महाकाव्य), गऊ ग्रन्थ, रासबिहारी बोस (खंड काव्य), महाराणा प्रताप (चरित्र काव्य) जैसी पुस्तकें लिखने के साथ-साथ हजारों कवितायें लिखी है। साहित्यिक योगदान में आपने अपने दिवंगत काव्य गुरू सत्य प्रकाश प्रखर जी की स्मृति में 2013 में प्रखर साहित्यकार मंच की स्थापना की जिसमें राष्ट्रवादी कवि सम्मेलन गौ रक्षा के लिए कवि सम्मेलनों के अलावा जेलों मे कैदीओं के मनोरंजन के लिए कवि सम्मेलनों की श्रंखला तैयार की यति नरसिंहन्द जी के द्वारा भारत स्वाभिमान के अन्तर्गत हिन्दू धर्म के वीरों के वलिदान को जागृत करने के लिए 'हुंकार' कविसम्मेलन के प्रथम कवि सम्मेलन जो डासना महाकाली पीठ पर हुआ की अध्यक्षता की।

क्राइम वारियर्स के प्रमुख संजीव चौहान जी के द्वारा लिए गये साक्षात्कार पर आधारित

मनु ने कहा था-यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता :

डा. राजकुमार तोमर (सूर्या क्लीनिक)

मनुस्मृति का यह महाकाव्य नारी की गरिमा और महत्ता की स्पष्ट घोषणा करता है और यह प्रमाणित करता है कि मनुष्य जाति के दो खण्डों पुरूष और स्त्री में स्त्री पुरूष से श्रेष्ठ और सम्माननीय है इसलिए पुरूषों को स्त्रियों का सम्मान करना ही चाहिए। आज हम नारी को जो भी समझें, उसके साथ कैसा ही व्यवहार करें पर भारतीय शास्त्रों ने नारी को अत्यन्त सम्माननीय और महत्वपूर्ण माना है। माता के रूप में नारी का स्थान पिता से भी ऊँचा माना गया है यथा- ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' अर्थात माता और मातृभमि का स्थान स्वर्ग से भी ऊँचा है।

हमारे यहां स्त्रियों को देवी माना जाता था इस तथ्य का ज्वलन्त प्रमाण है आज भी स्त्रियों के नाम के साथ देवी शब्द लगाना जैसे सुमित्रा देवी, शर्मिष्ठा देवी आदि और सम्बोध्न में भी उन्हें 'देवियों!' कहना। आपने कभी पढ़ा या सुना नहीं होगा कि पुरूष के नाम के साथ 'देवता' शब्द जोड़ा गया हो जैसे रामकुमार देवता, प्रहलाद सिंह देवता आदि और न पुरूषों को 'देवताओं!' सम्बोधित करते सुना होगा। स्त्रियों को ही देवी और देवियों कहने की परम्परा क्यों चली आ रही है? इसका स्पष्ट उत्तर है भारतीय संस्कृति और सभ्यता ने न सिर्फ नारी को सम्माननीय और देवी घोषित किया वरन उसे वैसा स्थान और महत्व भी दिया। उसे पुरूष से पहले स्थान दिया और यह परम्परा आज भी चली आ रही है। तभी सीताराम, उमाशंकर, राधा-कृष्ण, लक्ष्मी शंकर, आदि नामों में पहले देवी का नाम होता है। आपने किसी का नाम राम सीता, शंकर उमा, कृष्ण राधा, शंकर लक्ष्मी, नहीं सुना होगा। भारतीय दर्शन और संस्कृति ने नारी को यह सम्मान और महत्व क्यों दिया? उसे पुरूष से श्रेष्ठ क्यों माना? माता-पिता में माता को, भाभी-भईया में भाभी को और बहन-भाई में बहन को अधिक सम्मानीय क्यों माना?

इन प्रश्नों के साथ ही कुछ और प्रश्न उठते हैं। नारी को जो सम्मान भारतीय दर्शन और संस्कृति ने दिया, पुरूष ने उसका निर्वाह क्यों नहीं किया? स्त्री ने उसे बरकरार क्यों नहीं रखा? पुरूष इसका निर्वाह न कर सका या उसने इसे सिर्फ आदर्श के रूप में ही रहने दिया व्यवहार में नहीं लिया या स्त्री ही इसकी पात्रा न बनी रह पाई या उसे रहने नहीं दिया गया? क्या यह सम्मान स्त्री के लायक न था या स्त्री इसके लायक न थी? यदि यह सम्मान स्त्री के लायक न होता तो प्राचीन मनीषी इसे स्त्री के लिए घोषित ही क्यों करते? दरअसल यदि स्त्री लायक न होती तो यह धरणा पैदा ही न होती? स्त्री पुरूष के मुकाबले सिर्फ शारीरिक शक्ति के मामले में ही कमजोर यानी अबला सिद्ध होती है। बाकी कई मामलों में वह पुरूष के मुकाबले बहुत सबला और क्षमतावान सिद्ध होती है फिर भी स्त्री की दशा दयनीय और शोषित व्यक्ति जैसी क्यों रहती रही है? क्या स्त्री अपनी वास्तविक शक्ति और क्षमता से अपरिचित है या उसे प्रयोग नहीं कर पाती? क्या पुरूष उसकी शक्ति से परिचित होने के कारण उसे दबाता रहा है या स्त्री स्वयं परिस्थितियों से समझौता कर दबती रही है?

ऐसे कई सवाल हैं जिन पर स्त्री-पुरूष को गम्भीरता से विचार करना चाहिए और उचित कदम उठाना चाहिए। सारे संसार में स्त्रियों की जनसंख्या लगभग आधी है और विश्व की आधी जनसंख्या को शोषित, दमित, दुखित और अस्वस्थ रखकर यह विश्व कभी भी सुखी, समृद्ध और उन्नत नहीं हो सकता। आप आधे शरीर को दुखी और अस्वस्थ रखकर सुखी और स्वस्थ कैसे रह सकते हैं। पुरूष अपनी पाशविक शक्ति, पाशविक वासना और अहंकार के बल पर स्त्री को दुखी और पीड़ित करने में भले ही सफल होता रहा पर अपनी इस हरकत से वह स्वयं कौन सा सुखी और स्वस्थ रहा है। कौन जाने विश्व में आज जो कलह, संघर्ष, हिंसा, लूट-खसोट, मारामारी, विनाश और भ्रष्टाचार का ताण्डव हो रहा है और विश्व धीरे-धीरे विनाश की ओर बढ़ रहा है इसका कारण दुःखी और सताई हुई स्त्री का शाप ही हो जैसा कि मनुस्मृति ने कहा है-

जामयो यानि गेहानि शपन्त्य प्रति पूजिताः।
तानि कृत्याहतानीव विनश्यति समन्ततः।।

अर्थात स्त्रियां असम्मानित होकर जिन घरों को शाप देती हैं वे सर्वथा ऐसे नष्ट हो जाते हैं मानो किसी ने उन पर विष प्रहार कर दिया हो।

नीता सिंह

आध्यात्मिक चिन्तन

सांसारिक मोह माया में फंसा हुआ इन्सान आज भूल चुका है कि उसका मनुष्य रूप में जन्म ना जाने कितने पुण्यों का फल है। क्या है ये मानव जीवन? क्यों मिला है ये मानव जीवन? हम पिछले जन्म में क्या थे? थे भी या नहीं? ऐसे बहुत से प्रश्न अक्सर मन में कौंध जाते हैं। परन्तु बहुत ढूंढने पर भी इन प्रश्नों के उत्तर नहीं मिलते।

मानव जीवन किस प्रकार का होना चाहिए। क्या प्रातःकाल उठकर प्रभु को दो मिनट याद करते हुए यह कहना कि हमसे कोई भूल ना हो यदि हो भी जाये तो आप माफ कर देना। और फिर चल देना अपनी राह पर, किसी को धेखा देना, अपना काम निकालने के लिए विश्वासघात करना, दो के पांच करना। क्या इसी प्रकार से जीवन जीने के लिए प्रभु ने आपको मानव रूपी जन्म दिया है? नहीं कदापि नहीं। अच्छा बताइए क्या कभी आपने सोचा है आप जीते जी जिन सम्बन्धें के साथ रहते हैं उन्हें जीते हैं। जो परिवार आपको देखकर बहुत खुश होता है। मरणोपरान्त वही परिवार आपके शरीर को अध्कि देर तक अपने घर में नहीं रख पाता है। सगे-सम्बन्धी जल्दी से जल्दी संस्कार करने का परामर्श देने लगते हैं। आपके शरीर का कोई मोल नहीं रह जाता है। पवित्रता नष्ट हो जाती है। संस्कार उपरान्त लोग अपने आपको स्नान आदि से शुद्ध करते हैं। अपने घरों को हवन द्वारा शुद्ध किया जाता है। अतः इस पर विचार करना चाहिए कि यह शरीर आखिर क्या है? आत्मा क्या है? इस संसार में हमारा क्या रोल है? क्यों आए हैं? आखिर जीवन को किस प्रकार जीना चाहिए? जिन सम्बन्धों के लिए आप यह सब करते हैं वे कभी भी अन्त में आपके साथ नहीं जाएंगे, शरीर तो नाशवान है, इस शरीर का घमण्ड कभी भी नहीं करना चाहिए। आत्मा अजर-अमर है। व्यक्ति आज अहंकार रूपी रोग से पीड़ित है। मेरा शरीर सुन्दर है, ईंट पत्थर से बना मकान मेरा है, मेरा बेटा है, मेरी बेटी है। ऐसा सोचकर प्रसन्न होता रहता है। परन्तु जब अन्तिम समय आता है और शरीर अग्नि की भेंट चढ़ जाता है तो इन सबका कोई मतलब ही नहीं रह जाता है। सब पराया हो जाता है। यह अन्तिम नाशरहित सत्य है। जिसे समझना परम आवश्यक है। अतः शरीर को या इस शरीर के माध्यम से जुड़े सम्बन्धों की तृप्ति करना उतना आवश्यक नहीं है जितना अपनी आत्मा को तृप्त करना आवश्यक है। आत्मा की तृप्ति होती है - सेवा से, साध्ना से, समर्पण से, संतोष से।

जरा सोचिए यदि आपका मन किसी अपने के लिए कुछ करने का कर रहा है, आप वह कार्य कर भी देते हैं फिर चाहें उसे करने के लिए आपको किसी को धेखा भी क्यों ना देना पड़ा हो। इससे उस सम्बन्धों को तो बड़ा आनन्द मिलता है। वह खुश होकर आपकी वाहवाही भी करता है। परन्तु यकीन मानिए आपके दिल में कहीं ना कहीं चुभन जरूर रह जाती है उस व्यक्ति के प्रति, जिसे आपने धेखा दिया हो। आपकी आत्मा आपको कचोटती भी है।

परन्तु ठीक इसके विपरीत किसी गरीब की या जरूरतमन्द की मदद करनी पड़े तो बिना किसी स्वार्थ के आपने वह मदद कर दी तो भले ही उससे आपका कोई लाभ ना हो परन्तु आपके अर्न्तमन में एक संतोष का अनुभव अवश्य होता है। परिणाम स्वरूप आपका मन आनन्द से भर जाता है। क्योंकि स्वयं का पेट भरकर वह आनन्द नहीं प्राप्त होता है जो दीन-दुखियों और भूखे व गरीब का पेट भरकर प्राप्त होता है। वृद्धों की सेवा करके प्राप्त होता है। उनके मुख से निकले आशीष प्रभु आशीष होते हैं।

अमल करके तो देखिए आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आपको इन परोपकार के कार्यों से कितनी आत्म सन्तुष्टि मिलती है। इसी सन्तुष्टि द्वारा ही प्रभु की निकटता भी प्राप्त होती है।

अन्त में यही कहना चाहती हूं कि परोपकार का कोई भी कार्य किसी मैं ;अहंद्ध की भावना से नहीं होना चाहिए, कि लोग मेरी तारीफ करें, मेरा सम्मान करें, मुझे पूछें। क्योंकि आपके द्वारा किया जा रहा कोई भी नेक कार्य प्रभु का कार्य है। क्योंकि प्रभु द्वारा प्राप्त इस मानव रूपी शरीर से प्रभु का कार्य करके ही प्रभु की निकटता प्राप्त की जा सकती है।